TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180395
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 CA3F Accession No. P. G. H693

Author चगताई, मिर्ज़ा अज़ीमबेग.

Title फुलझड़ी. 1946.

This book should be returned on or before the date last marked below

प्रथम संस्करण, १९४९

मुद्रक—पं० रामभरोस मालवीय, अभ्युदय प्रेस, इलाहाबाद।

सूची

पहिला भाग

			पृष्ठ
मेरी कहानी ख़ुद मेरी ज़बानी	...	...	१
गुलाब जामुन	...	...	३
मिस सिंह	....	...	६
दोस्ती	....	...	८
मिसेज़ सिंह	....	...	१८
अपराधी	...	...	२४
बेतुकी बातें	...	...	३०
पैर की नाप	....	...	३२
स्वप्न	...	...	३६
वास्तविक परिस्थित	...	....	४६
स्वप्न-फल	...	...	५०

दूसरा भाग

फ़ुलबूट की मुसीबत	....	...	५३
आख़िरी पाँसा	....	...	६५
आके क़दमों में तेरे सर को झुकाए चाँद भी		....	७०

तीसरा भाग

पराजय	...	...	७८
नई मुश्किल	...	....	८३

भांडा कैसे फूटा ?	...	...	६२
क्रुद्ध रूप	...	...	१००
प्रतियोगिता परीक्षा	....	...	१०६
अल्टीमेटम	...	...	११३
अब मैं क्या करूँ	...	...	११६

मेरी कहानी ख़ुद मेरी ज़बानी

मतलब मेरा .फुलबूट से यह है कि सचमुच .फुलबूट। अर्थात् यह बूट नहीं जिसको आमलोग ग़लती से .फुलबूट कहते हैं; बल्कि वह .फुलबूट जो घुटने तक आता है। बहुत ही मज़बूत चमड़े का बना हुआ होता है, पिंडली पर चुस्त होने के कारण उसका पहिनना बहुत कठिन होता है क्योंकि उसमें न तो फ़ीते होते हैं और न हुक होते हैं और न घुंडियाँ होती हैं; बल्कि .फुलबूट दरअसिल मोज़े की तरह होता है। अन्तर बस यह है कि मोज़े में यह बात होती है कि पहिनने के वक्त बढ़ जाता है और फैलता है; मगर .फुलबूट कड़े चमड़े का होने के कारण रत्ती भर भी नहीं घटता-बढ़ता। पंजे की नोक आगे करके और एँड़ी समेट कर कोशिश की जाती है कि पैर बिलकुल सीधा हो जाय और फिर .फुलबूट में डाला जाता है; लेकिन अगर ज़रा भी आगे जाकर पैर सीधा न रहे और रुक जाय तो फिर समझ लीजिये कि पूरी मुसीबत आ गई। पैर वहीं का वहीं फँस जायगा। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। पैर न तो आगे बढ़ेगा और न निकलेगा। बहुत ज़रा सी भूल या कशमकश से सच्चे माने में फँस जाता है। इस तरह कि खींचतान से रक्त-संचार के कारण पाँव कुछ सूज जाता है या मोटा हो जाता है और फिर यह हाल होता है कि उसका जगह से हिलना मुश्किल हो जाता है। फिर ऐसा किसी विशेष अवस्था में नहीं होता, अर्थात् क़रीब क़रीब हर वह आदमी जिसने .फुलबूट कभी नहीं इस्तेमाल किया है यदि अपने पैर का .फुलबूट पहिने तो पहली बार वह बुरी तरह फँस जायगा।

जब अच्छी तरह उसमें पैर फँस जाय और उसके बाद अगर कोई ज़ोर करे तो कभी कभी पैर उतर जाता है या मोच खा जाता है और फिर इसके सिवा कोई दूसरा उपाय नहीं रहता कि जूता काटकर उतारा जाय। इसलिये मेरा निवेदन है कि .फ़ुलबूट के बारे में इन बातों को असली बातें ही समझिये। मैं आपसे बिलकुल ठीक और सच्ची बातें बतलाता हूँ।

इसकी सच्चाई का सबसे सुन्दर प्रमाण यही है कि ख़ुद एक बार अपने पैर का .फ़ुलबूट पहिन कर देख लीजिये।

गुलाब जामुन

मैं इन्ट्रेन्स का इम्तहान देकर आया था और नतीजे का इन्तज़ार था। घर में बेकारी का जीवन बिता रहा था कि एक रिश्तेदार की लड़की की शादी की हड़बोंग पेश आई। मुझको अगर उस शादी से दिलचस्पी हो सकती थी तो बस इतनी कि इस सिलसिले में मेहमान आएँगे, मज़ेदार और तगड़े नाश्ते तैयार होंगे और मैं इन्तज़ाम करूँगा, अतः यही हुआ।

घर में स्त्रियों का असाधारण मजमा था। कुछ औरतें कायल थीं कि मुझसे अभी परदा नहीं करना चाहिये और कुछ औरतें परदा करती थीं। कुछ भी हो मैं नाश्ते के सिलसिले में अन्दर आ-जा रहा था। कभी कभी किसी औरत से आँखमिचौली भी हो जाती थी। बाहर मेहमानों को नाश्ता खिलाकर अन्दर पहुँचा था और खड़ा हुआ एक प्लेट की गुलाब जामुनें खत्म कर रहा था कि मुझे नोटिस मिला कि जल्द बाहर जाओ क्योंकि वरपक्ष की स्त्रियाँ आ रही हैं बल्कि आ गई। मकान का एक तो आम दरवाज़ा था; लेकिन दूसरा एक कमरे में होकर मरदानी कोठी में निकला था और ज़ाहिर है कि मेरे लिये यही रास्ता ठीक था कि इतने में मालूम हुआ कि इधर से भी आ रही हैं। कारण यह था कि किसी नालायक़ ने एक गाड़ी स्त्रियाँ इधर भी उतार दी थी। मैं दोनों ओर से घिर गया और अपनी बचत इसी में देखी कि पास की एक कोठरी में गुलाब जामुनों की प्लेट सहित पनाह लूँ।

बहुत जल्द मालूम हुआ कि सब औरतें निकल कर मकान के बड़े कमरे में पहुँच गईं। लाइन क्लियर होते ही मैं उस अँधेरी

कोठरी से निकला। एक बड़ी गुलाब जामुन मैंने सबसे आखिर में खाने के लिए छाँट रक्खी थी और अब मैंने देखा कि सिर्फ़ वही रह गई है। प्लेट में शोरा भी काफ़ी था अतः मैंने बड़ी ही कारीगरी से उस बड़ी गुलाब जामुन को रकाबी में चक्कर देकर चाशनी को उसके इर्दगिर्द इस तरह लपेटा कि प्लेट साफ़ हो गई। प्लेट रख कर शीरे को गुलाब जामुन पर सँभालता हुआ मैं तेज़ी से उस कमरे की ओर लपका जिसमें से मरदानी कोठी में रास्ता था। बीचों बीच कमरे में एक लड़की से मेरी टक्कर होते होते बची। दोनों का आमना सामना हुआ लेकिन इसके पहले कि वह सँभलकर मुँह छिपा कर भागे, सामयिक ज़रूरत समझिए या शरारत......मैंने बिना समझे-बूझे उसको पकड़ कर वही शीरे में लथपत गुलाब जामुन उसके मुँह में ठूँस दी। यह काम पलक झपकते का था, जिसका परिणाम इस खींचतान में यह निकला कि इधर मेरा सारा हाथ भर गया और उसके सारे मुँह पर गुलाब जामुन और उसके शीरे का पलस्तर हो गया, सम्भवतः उसके भड़कीले और सुन्दर कपड़े भी ख़राब हो गए। वह तेज़ी से निकल कर जा चुकी थी और मैं इधर भागा। उसके हाथ में एक रङ्ग बिरंगी तितली थी जो इस ज़बरदस्ती की दावत में मारी गई और मली हुई पड़ी थी। शायद वह उस तितली को पकड़ने में लग गई थी और स्त्रियाँ आगे निकल गई थीं और मैं यह समझ कर कि अब कोई नहीं रहा, इस तरफ़ चला आया।

कुछ भी हो मेरा मन इस शरारत से बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि वह बहुत सुंदर लड़की थी। इसीलिए मैंने उसे गुलाब जामुन न खिलाना बहुत असभ्यता समझी। बड़ी देर तक इस घटना की याद आती रही। रह-रह कर उसका एकदम से ठिठक कर रह जाने और अपने निहायत तेज़ी से यह शरारत कर बैठने का दृश्य आँखों के सामने आ जाता था। वैसे बहुत सी शरारतें मैंने

की थीं ; किन्तु किसी शरारत ने इतनी दिलचस्पी नहीं पैदा की थी और न किसी शरारत की कामयाबी से मन को इतनी प्रसन्नता हुई थी।

जब बरातियों को स्टेशन पर विदा करने गया तब एक झलक उस लड़की की ओर देखी। वह गाड़ी के अन्दर थी और शीशे के उस पार से शायद यह समझ कर मुझको पहिचानने की कोशिश कर रही हो कि मैं उसको नहीं देख रहा हूँ। दो एक दिन इस शरारत का ख्याल रहा भी, फिर बात आई गई हो गई। यह तक न मालूम हो सका कि कौन थी और किसकी लड़की थी।

मिस सिंह

इन्ट्रेन्स पास करने और कालेज में भरती होने से पहले अर्थात् शिक्षा पूर्ण किये बिना मेरे भाग्य में नौकरी करना भी लिखा था। इसके कारण बताने की यहाँ ज़रूरत नहीं समझता। नौकरी भी ऐसी जगह थी जो मामूली सा क़स्बा था और जहाँ दिलचस्पी का कोई ज़रिया न था। बस ले दे के एक स्थानीय स्कूल के मास्टर साहब या सरकारी अस्पताल के एक डाक्टर साहब थे, जिनके साथ कुछ समय मज़े में बीत जाता था। लेकिन जिस मुहल्ले में मैं रहता था वह भले आदमियों की बस्ती थी। ग़रीब लेकिन प्रेम करने वाले लोग थे। सुबह-शाम मेरे कमरे में आकर बैठते और बातें करते। बहुत जल्द उन लोगों में भी जी लगने लगा।

एक दिन की बात है, कि शाम के वक़्त अस्पताल पहुँचा। डाक्टर साहब अपने क्वार्टर के आगे बैठे थे, दूसरा कोई नहीं था। मैं पहुँच जाता तो उनका मन भी बहल जाता था। मुझे आए हुए कुछ ज़्यादा देर न हुई होगी कि बराबर के ज़नाने अस्पताल की लेडी डाक्टर उनसे किसी रोगी के बारे में सलाह लेने आई। वह बिलकुल ही नातजुर्बेकार थी और डाक्टरी पास करते ही उसकी नियुक्ति यहाँ हो गई थी इसलिये वह डाक्टर साहब से बराबर सलाह लेती रहती थी। डाक्टर साहब ने उससे मेरा भी परिचय करा दिया। बड़ी बड़ी चमकीली आँखें, बहुत ही सुबुक नक़शा था। रंग साँवला था बल्कि अधिक साँवला अर्थात् गहरा, या फिर यह समझिये कि काला। मैं पहले ही काला कह देता, किन्तु इस शब्द से ख़ाहमख़ाह कुछ ऐब की बू आती है और वास्तव में उसकी सूरत शक्ल और रंग रूप में, यद्यपि वह

साँवली या दूसरे शब्दों में काली थी, सुन्दरता इस तरह कूट-कूट कर भरी थी कि बस न पूछिये। वह अपने सुडौल शरीर और साफ़ सुथरे कपड़ों में अपनी सूरत शक्ल के कारण एक विचित्र आकर्षण और मनोहरता रखती थी जिसका मेरे दिल पर ख़ास असर हुआ। उसका नाम मिस सिंह था। बहुत अच्छी तरह मिली लेकिन बहुत जल्द ही डाक्टर साहब से बातें करके चली गई। चलते समय शिष्टाचार के नाते मुझसे भी हाथ मिलाया और कहा—"मुझे आपसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई।" मैं उसको जाता हुआ देखता रहा। किस तेज़ी से वह जा रही थी।

डाक्टर साहब ने हुक्के का धुआँ मुँह से छोड़ते हुए कहा—"बड़ी अच्छी लड़की है, नातजुर्बेकार है......जनाब यह अपने दर्जे में अव्वल आई थी और हाउस सर्जन रह चुकी है।... बड़ी मेहनत से इलाज करती है.......पूछने में शर्म नहीं करती... बहुत अच्छी डाक्टर निकलेगी।" इत्यादि इत्यादि।

मानो वह सर्वाङ्ग सुन्दर थी। सूरत शक्ल तो ईश्वर ने दी ही थी, योग्यता और शिष्टता में भी निपुण थी। मुझको यह सब बातें मिल जुल कर वह एक असाधारण लड़की मालूम होने लगी और एकाएक दिल में ख़याल आया कि ऐसी अच्छी लड़की से दोस्ती पैदा करनी चाहिये।

थोड़ी देर बाद डाक्टर साहब के यहाँ से चला आया, मगर बार-बार मिस सिंह का ख़याल आ रहा था। "बहुत अच्छी लड़की है......बहुत अच्छी लड़की है।" मैंने अपने दिल में कहा—"भई बहुत ही अच्छी लड़की है।" मुझको ज़रा ज़ोर से कहना पड़ा।

• • •

दोस्ती

मिस सिंह से मैं दोस्ती पैदा करना चाहता था, लेकिन कोई उपाय न समझ में आता था कि मिस सिंह से किस तरह दोस्ती की जाय। राह चलते अगर कभी सामना हो गया तो साहब सलामत हो नहीं गई, बल्कि कोशिश करके कर ली गई। मैं सच सच कहता हूं कि मैं उससे सिर्फ दोस्ती करना चाहता था। तरह तरह की तरकीबें सोचता मगर बेकार। जिस दिन वह कहीं मिल जाती अर्थात् आती जाती दिखाई दे जाती तो उससे दोस्ती करने के लिए मन और भी बेचैन रहता और घन्टों इसी चिन्ता में डूबा रहता कि आखिर किस प्रकार दोस्ती और मेल-जोल पैदा हो।

एक दिन की बात है मैं इसी चिन्ता में था कि किस तरह मिस सिंह से दोस्ती की जाय। तरह तरह के उपाय और तरीक़े दिमाग़ में आए और निकल गए। सारांश यह मैं इसी सोच में था कि एक नौजवान पड़ोसी रोज़ की तरह समय बिताने के लिए आ गए। उनकी पत्नी अरसे से फ़सली बुखार में पड़ी थीं और उस दिन वे ज़रूरत से ज्यादा परेशान मालूम दिए। मैंने सलाम का जवाब देने के बाद उनसे पूछा—"ख़ैर तो है, आज कुछ परेशान से मालूम होते हो।"

वह बोले—"क्या बताएँ, फ़िक्रों में फ़िक्रें निकलती चली आती हैं। आज ज़ोर से जाड़ा देकर बुखार चढ़ आया और अब मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करूँ।"

बस उनका यह कहना था कि सहसा मैं न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गया। इलाज एक हकीम साहब का हो रहा था। यद्यपि

मैं खुद देशी इलाज का क़ायल हूँ मगर ज़रूरत भी तो आख़िर कोई चीज़ है, अत: मैंने उनसे कहा—"तुम भी तो कहाँ का इलाज करा रहे हो। भला कोई बात है कि भर-भरके गिलास और कटोरे पिलाए जा रहे हो हकीमों के। आख़िर डाक्टरी इलाज क्यों नहीं कराते? अक्सीर है बुखार के लिये।"

वह बोले—"माफ़ कीजिये हज़रत। मेरे सिर में इतने बाल कहाँ जो फ़ीस पर फ़ीस डाक्टरों को दूँ और बारह आने रोज़ की दवा पिलाऊँ। बुख़ार जाय तो मुफ़लिसी की बीमारी लग जाय।"

अब मेरी कुटिलता देखिये, मैंने कहा—"आख़िर फ़ीस की क्या ज़रूरत है?"

वह बोले—"और नहीं तो क्या डाक्टरनी मुफ़्त देखने आयगी?"

मैंने कहा—"मुफ़्त तो एक छोड़ उसको दस बार आना पड़ेगा।"

वह आश्चर्य से बोले—"वह कैसे?"

मैंने कहा—"भाई जान, वह मेरी मिलनेवाली है। देखते हो न, रोज़ जाता हूँ डाक्टर साहब के यहाँ। वहीं से मुलाक़ात और दोस्ती हो गई है। क्या तुम समझते हो कि मैं बुलाऊँगा तो वह मुझसे कोई फ़ीस लेने बैठेगी? फिर आख़िर दोस्ती ही क्या हुई?...और फिर दवा भी उसको अस्पताल से मुफ़्त देनी पड़ेगी। अगर हम इतना भी तुम्हारा काम न करा सके तो लानत है हमारी और उसकी दोस्ती पर। बस इक्के का किराया दे देना।"

ज़ाहिर है कि ऐसी सूरत में उन्हें क्या आपत्ति हो सकती थी। वह फ़ौरन राज़ी हो गए। मैं कह नहीं सकता कि अपनी इस मक्कारी पर मैं कितना ख़ुश हुआ हूँ। फ़ौरन् कपड़े पहन सीधा मिस सिंह के यहाँ पहुँचा, सूचना दी तो उसने बिना बाहर निकले हुए कारण पुछवाया। मैंने बतलाया तब भी नहीं निकली और

कहलवा दिया कि सवारी ले आओ। मुझे बड़ी निराशा हुई लेकिन क्या करता। क़स्बे में अच्छी और बुरी सवारी रईसों की गाड़ियाँ छोड़कर इक्का था। वह इक्के पर जाती थी।

इक्का आया हुआ दरवाज़े पर खड़ा रहा। कुछ देर में निकली। मैं समझा था कि मुझसे अच्छी तरह न सही कम से कम ऐसे तो मिलेंगी कि मालूम हो डाक्टर साहब ने परिचय कराया था और फिर बाद में अक्सर मैं ज़बरदस्ती सलाम करके जवाब लेता रहा हूँ। लेकिन उसने तो ज़िक्र तक न किया कि डाक्टर साहब के यहाँ मुलाक़ात हुई थी या नहीं।

इक्के पर एक तरफ़ वह बैठी और दूसरी तरफ़ मैं बैठा। मैंने दिल में सोचा कि कुछ बातें शुरू करनी चाहियें अतः मैंने कहा—"शायद आपको ख्याल नहीं कि डाक्टर साहब के यहाँ आपसे मुलाक़ात हुई थी।"

इसका उत्तर उसने बड़ी लापरवाही से दिया। दूसरी ओर देखती हुई बोली—"जी हाँ, मुझे याद पड़ता है कि मैंने आपको देखा था।"

इससे स्पष्ट था कि वह मुझसे बात करना नहीं चाहती। रोगी के घर तक फिर मैं ख़ामोश ही रहा। जब वह उतरने लगी तो मैंने धीरे से अंग्रेज़ी में उससे कह दिया कि आपकी फ़ीस मेरे पास है। यह रास्ते ही में कह दिया था कि मेरे एक ग़रीब पड़ोसी हैं उनके यहाँ लिये चल रहा हूँ। रोगिणी को उसने बहुत अच्छी तरह देखा। मैं ख़ुद दवा लेने अस्पताल तक गया। रास्ते में चार रुपये दिये। कुछ तकल्लुफ़ से उसने कहा कि मैं ग़रीबों से पूरी फ़ीस नहीं लेती, उनसे आधी फ़ीस अर्थात् दो रुपये लेती हूँ। मैंने कारण पूछा तो उसने कहा कि अगर ग़रीबों और अमीरों से एक ही फीस ली जाय तो ग़रीब डाक्टरी इलाज नहीं करा सकेंगे। यह कह कर उसने दो रुपये ले लिये और इधर मुझे

उसकी प्रशंसा के पुल बाँधने का गोया हक़ हासिल हो गया। जितनी भी तारीफ़ की एक सुन्दर स्त्री अधिकारी होती है उससे चौगुनी तारीफ़ मैंने की और साफ़ साफ़ कह दिया कि ऐसी दयावान डाक्टरनी कम से कम मैंने तो अपने जीवन में कहीं नहीं देखी।

मेरी ओर से तो यह चापलूसी और उसकी ओर से यह उपेक्षा कि उसने मेरी ओर से बिलकुल मुँह मोड़ लिया और मुझे मालूम हो गया कि यह दोनों रुपये और यह सारी चापलूसी बिलकुल व्यर्थ गई।

चलते समय मैंने उसको धन्यवाद दिया और रोगिणी का हाल कहने की इजाज़त माँगो, अतएव इस बहाने से मिस सिंह के यहाँ आना जाना शुरू हो गया लेकिन उसका व्यवहार बराबर वैसा ही रहा। बहुत ही संक्षेप में जो कुछ कहना हो कह लीजिये नहीं तो जो ज़रा भी बातें बढ़ाईं तो वह न केवल दूसरी ओर काम ही में जुट जाती थी बल्कि बड़ी बेरुखी से चल देती थी।

× × ×

अब ज़रा मेरी नालायक़ी देखिये। इधर रोगिणी अच्छी हो रही थी और मिस सिंह के यहाँ आने जाने का सिलसिला टूटता नज़र आ रहा था और उधर हो रही थी मुझे कोफ़्त। लेकिन यह कोफ़्त और यह घबराहट क्षणिक थी। मुफ़्त की डाक्टरनी और मुफ़्त की दवा मिले तो आप ख़ुद ही सोचिये कि कौन न इलाज कराने लग जायगा। परिणाम यह हुआ कि इन महाशय की पत्नी को जो आराम हुआ और उन्होंने मिस सिंह की प्रशंसा के पुल बाँधे तो ईश्वर की कृपा से मुहल्ले भर की नई पत्नियाँ बीमार पड़ गईं और उनके मूर्ख पतियों ने आकर मुझसे कहा। इधर मेरा यह हाल कि अंधा क्या चाहे दो आँखें।

मेरे पड़ोसी जैसा मुझसे प्रेम करते थे उसको देखते हुए वास्तव में मेरा कर्तव्य ही यह था कि उनकी हर प्रकार की सेवा करूँ। जिस किसी ने भी मुझसे कहा मैंने यही कह दिया— "भाई, वह मेरी मिलने वाली है, जब कहो तब बुला लाऊँ। मैं तुम्हारी ख़िद्मत के लिये हर वक्त तैयार हूँ। मेरी उसके साथ ऐसी वैसी दोस्ती नहीं है, मुझे पूरा भरोसा है कि मैं उसे दिन में दस बार बुलाऊँ तो बिला फ़ीस लिये आना पड़ेगा। तुम शौक से इलाज कराओ बल्कि अभी बुलाए लाता हूँ।"

अब यह एक तरह का सिलसिला शुरू हो गया और मैंने पड़ोसियों पर एहसान पर एहसान करना शुरू किये। मेरे पड़ोसी मेरे किसी काम में ज़रा भी कसर न उठा रखते थे और कैसे उठा रखते, कहावत है कि ताली दोनों हाथों बजती है। अतः मैंने भी मिस सिह के यहाँ अगर चक्कर पर चक्कर लगाने शुरू किये तो इसमें आश्चर्य की क्या बात। दवा लेने जाता, रोगिणी नहीं बल्कि रोगिणियों के हाल कहने जाता, फिर जब कई रोगी एक साथ हो गए और उन्हें फ़ायदा हुआ तो मेरे लिये पड़ोसियों के यहाँ से हलुवे पक-पक कर आने लगे और उसके साथ अन्य प्रकार के उपहार। अब इन उपहारों को मैं अपने आदमी के हाथ मिस सिंह के यहाँ एक परचा लिख कर भेजता कि यह अमुक रोगिणी की ओर से आपकी सेवा में उपहार भेजा जाता है और मैं सिफ़ारिश करता हूँ कि इसे स्वीकार कर लीजिये। वह धन्यवाद सहित स्वीकार कर लेती मगर ज़बानी। मेरे किसी पत्र के उत्तर में उसने कभी एक शब्द भी नहीं लिखा। अब मैंने इन उपहारों के सिलसिले में दो एक आदमियों से यह कह कर उन्हें कोई अच्छा उपहार भेजने के लिये तैयार किया कि डाक्टरनी साहबा कौड़ी फीस नहीं लेती हैं, मुझे बड़ी शर्मिन्दगी होती है। न हो तो फिर मैं ही कोई चीज़ भेज दूँ।

बात चूँकि ठीक थी इसलिये सुनने वालों के दिल को लगी और उनमें से एक साहब ने हिम्मत करके एक शानदार थाल में इतनी अच्छी खाने की चीज़ें भेजीं और इतनी बड़ी मात्रा में भेजीं कि मिस सिंह को धन्यवाद का पत्र उत्तर में लिख कर भेजना पड़ा। उसके जवाब की यद्यपि कोई आवश्यकता न थी मगर मैंने ज़बर्दस्ती जवाब लिख दिया कि न सिर्फ़ यह उपहार बल्कि रोगिणी के पति आपके बहुत कृतज्ञ होंगे अगर आप उनसे कोई और भी फ़रमायश करें। उसने और भी धन्यवाद दिया और फिर मैं इस धन्यवाद का भी जवाब लिखने वाला था मगर रह गया।

सारांश यह कि मैंने जहाँ तक हो सका मिस सिंह को ख़ूब उपहार भिजवाए लेकिन सच्ची बात यह है कि अब फ़ीस का खर्च मुझे कुछ कुछ अखर रहा था लेकिन लाचारी थी।

। × × ×

यह सिलसिला जारी था और इधर मेरे सौ रुपए के क़रीब खर्च होने पर आए और उधर मिस सिंह को महसूस होने लगा कि मुझसे दोस्ती करनी पड़ेगी। ईश्वर जाने वह मुझे क्या समझती होगी, शायद मुझे रोगियों का एजन्ट समझती हो। उस बेचारी को क्या पता कि यह फ़ीस मैं भुगत रहा हूँ। वह देख रही थी कि सिर्फ़ मेरे द्वारा उसकी डाक्टरी जम रही है, अतः स्वभावतः उसको मुझसे मेलजोल बढ़ाना पड़ा। सब काम छोड़ कर मेरे रोगियों का हाल पहले सुनती। जब पहुँचता तो अच्छी तरह मिलती और प्रेम से बातें करती। मैं उसके कानों तक वह सारी बातें पहुँचाता जो एक रोगी डाक्टर की तारीफ़ में कह सकता है बल्कि उसमें स्वयं अपनी तरफ़ से भी कुछ जोड़ देता। चलते वक्त बड़ी अच्छी तरह हाथ मिलाकर विदा करती। फिर इन बातों के अलावा मैं और भी बातें करता, उसके इलाज की

प्रशंसा करता। मैंने उससे साफ़ साफ़ कह दिया कि तुम्हारे इलाज से आज तक किसी रोगी को भी शिकायत नहीं हुई। वे स्त्रियाँ जिन्हें तुमने अच्छा किया है दिन-रात तुम्हारे लिये ख़ुदा से दुआएँ माँगती रहती हैं। मैंने बड़ी चालाकी से कह दिया कि मैं स्वयं तुम्हारे इलाज का किस तरह क़ायल हूँ और किस तरह हर आदमी को तुमसे इलाज कराने की राय देता हूँ। इसके साथ ही इशारे इशारे में यह भी कह दिया कि लोग किस तरह मेरी राय को मानते हैंऔर तुम्हारा दम भरते हैं। यह सिलसिला काफ़ी दिन जारी रहा।

× × ×

लेकिन जनाब वह जो किसी ने कहा है कि मुसीबत भी कहाँ तक सही जा सकती है। आप ख़ुद सोचिये कि मैं कहाँ तक ख़र्च करता, विशेषकर ऐसी हालत में जब कि लोग ज़बरदस्ती और ख्वाहमख्वाह बिना काफी बीमारी के मिस सिंह को बुलवाना चाहते थे। अतएव मैंने बहुत जल्द इस फ़ुज़ूलखर्ची की ओर ध्यान दिया और कुछ मितव्यता की सूझी। जो लोग कई बार मिस सिंह को बुलवा चुके थे और फिर बुलवाना चाहते थे उनसे समझाकर कहा कि वैसे तो मेरे कारण वह सौ बार मुफ़्त आने को तैयार है लेकिन अब मुझे ख़ुद शर्म मालूम होती है, इसलिये अच्छा यह होगा कि उसे कभी कभी कुछ न कुछ दे देना चाहिये। वह लेगी तो बड़ी मुश्किल से मगर फिर आख़िर वह डाक्टरनी है, उसका तो पेशा यही ठहरा। मैं ज़ोर दूँगा तो ले लेगी।

अतएव कुछ लोगों को तो इस तरह ठीक किया। साथ ही उनसे पक्का वायदा कर लिया कि मैं ख़ुद ही जाकर बुला लाऊँगा और अपने सामने दिखा दूँगा, बल्कि ख़ुद अपने हाथ से फीस देने का ज़िम्मा लेता हूँ और विश्वास दिलाता हूँ कि वह फीस ले लेगी। कुछ लोगों से साफ इनकार भी कर

देता कि, "भई, तुम ख़ुद सोचो कि आख़िर हद हो गई, अब कहाँ तक उसको बुलाऊँ। उससे हर वक्त कहते हुए, मुझे बहुत शर्म आती है।

यह सुनकर कुछ और लोग भी मेरा समर्थन करते और ज़ोर देकर कहते—"आप सच कहते हैं। ऐसी भी क्या दोस्ती हुई कि मुहल्ले के मुहल्ले को मुफ़्त देख रही है, कोड़ियों फेरे कर रही है, हमने तो ऐसी डाक्टरनी कभी देखी ही नहीं, नहीं साहब आप उसे मुफ़्त मत बुलाइये।"

मैं बड़ी ही चालाकी से जवाब देता—"जनाब न मुझे बुलाने में इनकार और न उस ग़रीब को आने में, मगर आप ख़ुद सोचिये कि आख़िर को वह इन्सान है।"

लोग यह सुनकर मेरा और भी समर्थन करते और यह निश्चय होता कि उसे फ़ीस देकर बुलवाया जाय। मगर साथ ही मेरी और उसकी दोस्ती से इस तरह फ़ायदा उठाया जाय कि मेरे ही द्वारा बुलवाया जाय और मैं ज़रूर मौजूद रहूँ ताकि उससे अंग्रेज़ी में बातचीत कर सकूँ।

अतएव इस तरह धीरे धीरे मैंने अपनी जेब की हिफ़ाज़त शुरू की। लोग बुलवाते और मुझे बीच में ज़रूर डाल लेते। और अगर मैं संयोगवश न होता तो लोग कहते—"वैसे तो उसने बड़ी अच्छी तरह देखा मगर आप होते तो बात ही कुछ और होती।" और यही बात मैं चाहता भी था।

इसके जवाब में उनको मैं इतमीनान दिलाता कि मैं उससे अब जाकर कह दूँगा। जाकर कह भी देता जिसमें कि मिस सिंह को यह मालूम हो जाय कि यह केस भी मेरे ही कारण मिला है, इसके अलावा जो कोई सचमुच बहुत ग़रीब था उसको

मैंने अपनी गिरह से फीस देकर इलाज करा दिया या यह किया कि किसी दूसरे रोगी के साथ साथ उसको भी दिखा दिया।

× × ×

अब आप ख़ुद सोचिये कि जब इस तरह मेरे द्वारा मुहल्ले का मुहल्ला इलाज कराने लग जाय और ज़ोरों के साथ उपहार भी मेरे ही द्वारा भेजे जायँ, दिन में दो बार को ज़रूरत हो तो मैं चार दफा जाऊँ। ज़रा ज़रा से बहाने पर मिस सिंह के यहाँ मौजूद रहूँ। यदि शिकार को ख़ुद जाऊँ तो सब का सब मिस सिंह के यहाँ भिजवा दूँ और वह सहर्ष स्वीकार भी करले तो फिर दोस्ती में कसर ही क्या रह गई। इसी को दोस्ती कहते हैं नहीं तो दोस्तों के सिर पर सींग तो निकलने से रहे।

फिर यह भी सोचने की बात है कि मिस सिंह की दृष्टि में मेरी कितनी क़द्र होगी। इस प्रकार निःस्वार्थ भाव से मुहल्ले वालों का काम करने वाला और उससे कोई भी बदला न चाहते हुए उसके ऊपर मेहरबानियाँ करने वाला उसे कोई दूसरा तो मिल न सकता था। अतः धीरे-धीरे मेल-जोल बढ़ता ही गया। यहाँ तक कि एक दिन जो मैं पहुँचा हूं तो चाय पीते से उठकर आई और मुझे भी ले जाकर चाय पिलाई। यह एक ऐसी घटना थी जिसने सिद्ध कर दिया कि मिस सिंह का दोस्त नहीं तो कम से कम मिलने वाला तो ज़रूर हूँ।

चाय वाले दिन से वास्तव में एक हद तक कुछ तकल्लुफ़ कम हो गया क्योंकि चाय के सिलसिले में कुछ इधर-उधर की बातें भी हुईं।

इसके बाद मैंने कुछ उपहार व्यक्तिगत रूप में उसकी भेंट किये। फिर सिर्फ मुलाक़ात या मिलने के मतलब से भी आना-जाना शुरू कर दिया। थोड़ी कोशिश से बेतक़ल्लुफी भी पैदा कर ली और अन्त में अपनी चालाकी और कोशिश से

जो बात चाहता था वह पूरी हो गई यानी मिस सिंह मुझे अपना दोस्त समझने लगी। कुछ भी हो, मैं अपनी चालाकी का खुद ही क़ायल हो गया।

मिसेज़ सिंह

मिस सिंह मेरी दोस्त थी और मैं नहीं कह सकता कि मिस सिंह की दोस्ती मेरे लिये कितनी आनन्ददायक थी । वह मेरी पहली लड़की दोस्त थी और शायद मैं इस दोस्ती को दुनिया की बहुत बड़ी चीज़ समझता था । वे-लोग जो खुद आवारा हैं और या वे लोग जिन्हें सिर्फ़ चरित्रहीना लड़कियों से मिलने का मौक़ा मिला है अपने अनुभवों के आधार पर कुछ भी कहें लेकिन मेरा ख्याल है कि एक नवयुवक के लिए एक नवयुवती की दोस्ती और सिर्फ दोस्ती शायद उसके सारे गुणों को चमका देने के लिये ज़रूरी है । हो सकता है कि कुछ लोग मेरे विचारों को ग़लत कहें, मैं उन्हें अपना विचार बदलने के लिये विवश नहीं करता । ख़ैर, मैं मिस सिंह की दोस्ती की क़द्र करता था और वह भी क़द्र करती थी । हम दोनों की दोस्ती की पराकाष्ठा सिर्फ़ यही थी कि इतनी बेतकल्लुफ़ी होने के बावजूद हमारी मुलाकात कभी दस पन्द्रह मिनट या अधिक से अधिक आधे घंटे से ज्यादा देर तक नहीं होती थी और उसमें भी इधर उधर की बातें और एक दूसरे का हाल-चाल पूछ लिया जाता था, बस । यह सब कुछ था, दोस्ती भी थी लेकिन हम दोनों में एक अजीब किस्म का तकल्लुफ़ अब भी मौजूद था जो प्रायः दोस्तों में नहीं होता । इसका कारण शायद यही था कि वह औरत थी और मैं मर्द । ग़रज इस तकल्लुफ़ को मैं महसूस करता था और यह किसी तरह जाता न दिखाई पड़ता था । लेकिन एक घटना इस बीच में ऐसी घटी कि यह तकल्लुफ़ भी एक हफ़्ते के अल्प समय में बिलकुल जाता रहा ।

× × ×

क़िस्सा दरअसिल यह हुआ कि इसी बीच में जब कि इस तकल्लुफ़ की तकलीफ़ को मैं कुछ सख्ती के साथ महसूस कर रहा था, मिसिज़ सिंह अर्थात् मिस सिंह की माता जी आ पहुँची। मिस सिंह ने उनसे मेरा परिचय कराया। बुढ़िया बड़ी अच्छी लेकिन सख्त बातूनी निकली। ऐसी कि मेरे भी कान कतरने का इरादा किया। लेकिन जनाब मैं ख़ुद एक बातूनी हूँ और फिर बातों को ज़रा दिलचस्प बनाने में झूठ की चाशनी से इस तरह काम लेता हूँ कि सुनने वाला मुझपर मोहित होकर रह जाय।

सारांश यह कि उन बड़ी बी ने जो अपने बातूनी होने का सुबूत दिया तो मैं भी बस सरेस होकर रह गया और वह लच्छेदार बातें बनाईं कि बुढ़िया पहली ही मुलाक़ात में मेरा लोहा मान गई।

× × ×

दूसरे दिन की बात है कि बुढ़िया को एक शेर मारने का किस्सा सुना रहा था। क़िस्सा सच्चा भी था और झूठा भी। सच्चा इस वजह से कि यह शेर वास्तव में भाई साहब ने मारा था और मैं स्वयं जान-बूझकर मुरग़ियाँ मारने के पीछे ही रह गया था। क्योंकि सच बात यह है कि शेर के हमला करने का ख़याल ज़रा मुझे नापसन्द है और बुरा लगता है। इस किस्से में मिसेज़ सिंह और मिस सिंह यानी माँ-बेटियाँ दोनों बड़ी दिलचस्पी ले रही थीं। मिस सिंह अपनी ठूड़ी के नीचे अपना हाथ रक्खे हुए क़िस्सा सुनने में तल्लीन थी। ख़ास ख़ास मौक़ों पर मिस सिंह की आँखें आश्चर्य से चमकने लगती थीं। बड़ी बी अपने होंठों से अनेक आकारों के जल्दी जल्दी शून्य बनाती थीं। फिर मिस सिंह को इस क़िस्से में जो कुछ भी दिलचस्पी हो रही हो लेकिन बड़ी बी इस किस्से में असाधारण दिलचस्पी ले रही थीं। भाई साहब की जगह मैंने अपने आपको रखकर जो क़िस्सा बनाया तो वह सच-

मुच बहुत दिलचस्प हो गया और फिर उसमें जगह-जगह अतिशयोक्ति से काम लिया तो फिर तो वह ऐसा होगया कि यहाँ असली कहानी के बढ़ जाने के डर से नहीं लिख रहा हूं नहीं तो था वह इसी लायक़।

उस दिलचस्प क़िस्से के मैं उस स्थल पर पहुँचा जहाँ मैंने शेर के गोली मारी है और वह घायल होकर दहाड़ा है कि इतने में ख़ानसामा ने आकर खाना मेज़ पर लग जाने की सूचना दी। मैंने तुरन्त किस्सा छोड़कर घर जाने की अनुमति माँगी बल्कि दो शब्दों में क़िस्सा ख़त्म कर दिया और बड़े ही सरसरे ढंग पर अपने घायल होने का और शेर के मारे जाने का वर्णन करना चाहा तो बड़ी बी ने मुझे पकड़ लिया और कहा कि पूरा क़िस्सा सुने बिना मैं नहीं जा सकता और मुझे भोजन करना पड़ेगा। मैंने और भी माफ़ी चाही और क़िस्सा ख़त्म करने के लिये घुटने का वह घाव भी दिखाने को तैयार होगया जो शेर के पंजे के लगने से हो गया था, लेकिन माँ बेटियाँ दोनों की दोनों सचमुच मुझे ज़बरदस्ती पकड़ कर घसीट ले गईं, यह कहती हुई कि पूरा किस्सा खाने की मेज़ पर सुनेंगी। यद्यपि मैं भी दिल से यही चाहता था लेकिन दिखलाने के लिये मुझे विवश होकर खाना पड़ा।

× × × ×

मैं खाने पर जाता ही न था, माफ़ी के शब्द ख़त्म ही न होते थे, और सचमुच मुझे एक ओर से मिस सिंह और दूसरी ओर से उनकी माँ ने पकड़ कर खींचा। अब स्पष्ट है कि इस खींचातानी में भला तकल्लुफ़ कहाँ गया होगा! अतएव मेज़ पर जो हम तीनों जाकर बैठे हैं तो मुझे यही महसूस हुआ कि वह तकलीफ़ देने वाला तकल्लुफ़ ख़त्म है।

खाने की मेज़ पर बड़े मजे रहे। बड़े मज़े से मैंने अपने किस्से को ख़त्म किया। दोनों ने मेरी बहादुरी की ख़ूब ख़ूब तारीफ़

की। जिस जगह मेरे डरने का वर्णन था उस पर ख़ूब ख़ूब मज़ाक उड़ा। जैसे जब शेर बिलकुल मर गया और मैं राइफल का घोड़ा चढ़ा कर धीरे धीरे शेर की ओर बढ़ा। यद्यपि राइफ़ल की नाल शेर की ओर थी, लेकिन अभी दूर ही था कि शेर की दुम के पास एक टिड्डा कूदा और उसका कूदना था कि 'रिपेटर' राइफल की नाल से तीन फ़ैर और मेरे मुँह से एक चीख़ आप ही आप निकल गई और इसके बाद मुझे मालूम हुआ कि मैं गिर पड़ा हूँ और उठकर भागने में तीन बार असफल हो चुका हूँ।

खाने के बाद मैंने घुटने पर वह हलके खरौंचे दिखाए जो शेर के पंजे मारने से लगे थे लेकिन असिल घटना यह थी कि घुटने में यह घाव मुझे एक कटखने कुत्ते के दौड़ाने से लगे थे। मैं उसके डर से बदहवास होकर भागा था और ठोकर खाकर गिर पड़ा था और फिर काटने की जगह सिर्फ सूंघ कर वे महाशय आगे चल दिये थे।

इसके बाद कोई घंटे भर तक और बातें होती रहीं और मैं दूसरे दिन आने का पक्का वायदा करके चला आया।

लेकिन दूसरे दिन मैं जान-बूझकर और प्रबल इच्छा होते हुए भी न गया तो तीसरे दिन मिस सिंह का आदमी बुलाने आया। मैं तैयार हो ही रहा था और पहुंचा; मुझे ऐसा मालूम होता था कि बड़ी बी का शायद बातें करने की बीमारी थी और मैं ठहरा इस इलाज का विशेषज्ञ। जैसे ही पहुँचा हूँ बड़ी बी ने मुझे आड़े हाथों लिया। मिस सिंह ने हँसते हुए मुझसे कितना अपनापन प्रकट करते हुए कहा है कि न पूछिये। बोली—"आपकी ड्यूटी है कि सुबह शाम रोज़ाना आएँ, नहीं तो अगर मामी चली गईं तो आप ज़िम्मेदार होंगे।"

मैं हँसने लगा और पूछा—"खैर तो है, आखिर यह ड्यूटी मेरे ऊपर कैसी ?"

मिस सिंह ने कहा—"इनका एक ही दिन में जी घबरा गया और यह जाने को कह रही हैं।"

मैंने कहा—"मामी को हरगिज़ न जाने दो।"

यह सुनकर बड़ी बी ने ठहरने का वायदा किया लेकिन इस शर्त पर कि मैं रोज़ाना उनको सुबह तड़के अपने साथ टहला लाया करूँ और रोज़ाना जब तक वे यहाँ रहें मैं खाना भी वहीं खाऊँ।

मैंने और बातें तो स्वीकार कर लीं मगर खाने से जो इनकार किया तो बड़ी बी मचल गईं और मैं अन्त में राज़ी हो गया।

इसके बाद मेरा नित्य का काम हो गया कि सुबह तड़के बड़ी बी को साथ लेकर टहलने जाता और फिर वापस आकर उनसे बातें मिलाता और उधर तीसरे पहर को जल्द ही आ जाता और रात का खाना खाकर ग्यारह बजे के करीब वापस घर पहुंचता और इस प्रोग्राम से माँ और बेटी दोनों राज़ी थीं।

बड़ी बी से सुबह एकान्त में खूब खूब बातें होतीं। मुझे मालूम हुआ कि मिस सिंह ने मेरे परिचय के साथ साथ अपनी माँ से मेरी सारी मेहरबानियों का ज़िक्र भी कर दिया था। कस्बे में मिस सिंह की डाक्टरी अच्छी खासी चल रही थी और मिस सिंह ने अपनी माँ से कहा था कि यह सब कुछ मेरे ही कारण हुआ और शायद यह बात किसी हद तक सही भी थी। सारांश यह कि मिस सिंह ने अपनी माँ से मेरी खूब खूब तारीफ की थी। इसके जवाब में मैंने माँ के सामने बेटी की खूब खूब तारीफें कीं। सारांश यह कि बड़ी बी के साथ सुबह का वक्त बड़े मज़े से कटता था।

कोई बीस पचीस दिन इसी तरह बीते और वह दिन आया कि मैं और मिस सिंह बड़ी बी को विदा करने स्टेशन पहुँचे।

विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि बड़ी बी ने अगर अपनी सुन्दर पुत्री को चलते समय गले लगाकर प्यार किया तो अत्यन्त प्रेम के साथ मेरे माथे का भी चुम्बन लिया और यह मेरी दृष्टि में उनके मातृप्रेम की पराकाष्ठा थी। बिदा होते समय मैंने उनसे और उन्होंने मुझसे भूल न जाने की फरमायश की।

इस घटना के बाद न वह मिस सिंह थी और न वह मैं था। पहले जो एक कष्टदायक तकल्लुफ था वह ग़ायब हो चुका था। इसके बाद ही मेरा यह नित्य का काम हो गया कि मिस सिंह के यहाँ बिला नागा रात को जल्दी खाना खाकर जाता और देर तक बैठा बातें करता रहता।

सारांश यह कि जो मैं चाहता था और जिस बात की मेरी हार्दिक इच्छा थी उससे अधिक मुझे प्राप्त थी। मिस सिंह मेरी बहुत दिलचस्प दोस्त थी और वास्तविक बात यह थी कि इससे अधिक मैं कुछ चाहता भी न था। मैं तो यही चाहता था कि मिस सिंह का मैं दोस्त हो जाऊँ और यह बात मैंने बड़ी ही कुटिलता से किन्तु नेकनियती से हासिल कर ली थी। वह मुझको अपना सबसे अच्छा और निस्स्वार्थ और साथ ही बहुत मनोरंजक दोस्त समझती थी।

अपराधी

निस्स्वार्थ और बेतकल्लुफ़ी की दोस्ती शायद दुनिया की सब से अमूल्य चीज़ है। मेरी और मिस सिंह की दोस्ती बहुत गहरी दोस्ती हो गई थी लेकिन ख़ुदा जानता है कि दोनों की मित्रता का उद्देश्य चूँकि दोस्ती के अलावा और कुछ न था इस कारण दोस्ती की सीमा ही यही मालूम होती थी कि दोनों मिलकर जब बैठें तो अपने अपने घर का हाल चाल एक दूसरे से कहें, अगर आवश्यकता पड़े तो आर्थिक कठिनाइयों के निवारण में एक दूसरे को सलाह दें। वे लोग जो इस प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध के अभ्यस्त नहीं उन्हें दो जवान व्यक्तियों में निस्स्वार्थ प्रेम की सम्भावना ही एक कल्पना से अधिक नहीं मालूम होती। अतएव इसका तो मेरे पास कुछ इलाज नहीं है कि ऐसे लोगों को विश्वास दिलाऊँ कि मेरी और मिस सिंह की दोस्ती केवल दोस्ती ही थी और इससे आगे कुछ नहीं। जिसका जी चाहे विश्वास करे और जिसका जी न चाहे वह चूल्हे में जाय। सारांश यह कि हम दोनों की दोस्ती थी—सिर्फ़ दोस्ती—मैं उसकी बातें ध्यान से सुनता था और वह मेरी बातों में दिलचस्पी लेती थी। उसको मेरे साथ हमदर्दी थी और वह कहती थी कि आख़िर तुम इस वाहियात नौकरी में क्यों सड़ रहे हो? क्यों नहीं कालिज में नाम लिखा लेते?

मैं उसके जवाब में घर के खतूत दिखलाता घर की राजनीति और अपनी नीति पर रोशनी डालता। वह आयु में मुझसे बराबर थी बल्कि बाद में मालूम हुआ कि डेढ़ बरस बड़ी ही थी और

बात बात पर हँसी में कहती थी कि—"तुम बड़ों का कहना मानो और अपना नाम कालिज में लिखा लो।"

यद्यपि यह सब कुछ था पर मेरी और उसकी दोस्ती मानो इस प्रकार की थी जैसे रेल की एक पटरी पर मैं खड़ा हूँ और दूसरी पर वह खड़ी है। दोस्ती की नियत दूरी जो दोनों पटरियों के बीच थी, वहाँ जहाँ तक दृष्टि जाती थी, एक सी और बराबर चली गई थी और यही मालूम होता था कि दोस्ती के नियत अन्तर में कमी या ज्यादती हुई तो दोस्ती का इन्जन पटरी पर से उतर कर लौट जायगा। कभी ख़याल भी न आता था कि दोस्ती की पटरियाँ अन्तर को कम करके किसी तरह एक दूसरे के निकट हो जायँगी।

अगर एक दोस्त दूसरे से प्रतिदिन मिले तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। और फिर साथ ही अगर नित्य कर्म बनाकर वक़्त का पाबन्द हो जाये तब भी कोई ताज्जुब की बात नहीं है। और फिर अगर वह उस समय के आने की बेचैनी से प्रतीक्षा करता रहे कि कब समय आवे और कब मैं जाऊँ तो यह भी कोई असाधारण बात नहीं। अतएव यही मेरा हाल था कि जब मिस सिंह के यहाँ जाने का समय आता तो एक एक मिनट भारी हो जाता और अपनी दिलचस्प दोस्त को देखने, उससे मिलने और दिलचस्प बातें करने के लिये ऐसा जी चाहता कि किसी किसी समय नहीं बल्कि बहुधा बेबस होकर यही जी चाहता कि अपनी घड़ी में ज्यादा बजा लूँ। फिर धीरे धीरे यह हाल हो गया कि प्रतीक्षा की ये घड़ियाँ मृत्यु से भी अधिक कष्टप्रद प्रतीत होने लगीं। रोज़ा रखनेवाले मुसलमान गर्मी के मोसम में रोज़ा खोलने के लिये अज़ान सुनने की जिस व्याकुलता से प्रतीक्षा करते हैं उससे कहीं अधिक मुझे व्याकुलता होती थी। फिर जब मैं पहुँचता और वह मुझको देखते ही खिल सी जाती। बढ़कर स्वागत करती, हँस कर

मिलती और फूल की तरह प्रफुल्लित होकर बैठने को कहती और दिलचस्प बातें शुरू करती तो मैं उसके सुन्दर मुखड़े को देखता, उसकी आँखों की चमक और चेहरे की दमक को देखता और दिल में एक सवाल पैदा होता। वह यह कि क्या यह भी मेरा इन्तज़ार इसी बेचैनी से करती होगी? क्या इसको भी मेरी तरह बेताबी और बेक़रारी होती होगी। क्या यह भी प्रतिक्षण यही सोचकर समय काटती होगी कि कब मेरा प्यारा मित्र आए और कब मैं उससे मिलूँ।

मैं दिल में इन बातों पर ग़ौर करता, दिल गवाही देता कि ज़रूर यह भी तेरी ही तरह तेरी राह देखती होगी। इसको भी इन्तज़ार रहता होगा कि मैं कब उससे मिलने आऊँ। मगर फिर दिल ही में सवाल पैदा होता कि इसका प्रमाण? इसका सुबूत?... दिल इसका जवाब देता कि सूरत ही बताती है, हाल क्यों पूछो। लेकिन यह गवाही फिर आप ही आप कमज़ोर मालूम होती और फिर मुझे उलझन सी होने लगती।

अतएव थोड़े ही दिनों बाद मुझे हर समय कुरेद सी रहने लगी कि किसी तरह मिस सिंह के दिल का हाल मालूम करूँ। किसी तरह मालूम हो जाय कि मिस सिंह को भी मेरा बेचैनी से इन्ज़ार रहता है या मैं ही उससे मिलने के लिये घड़ियाँ गिना करता हूँ।

× × × ×

एक दिन की बात है कि मैं देर से पहुँचा। मुझे दरअसिल काफी देर हो गई थी। मैं तेज़ी से पहुँचा। मिस सिंह के अस्पताल की बूढ़ी नर्स कमरे के दरवाज़े पर मिली। मैं चिक उठा कर कमरे में प्रवेश करना ही चाहता था कि उसने बड़ी लापरवाही से मुझसे कहा—"कहाँ रह गए थे?...आज मिस साहिबा तुम्हारा बड़ा इन्तज़ार करती रहीं....तीन बार बाहर निकल कर उन्होंने

देखा और फिर आख़िरी बार तो अस्पताल के फाटक तक गईं और देर तक खड़ी रहीं।"

आप स्वयं अनुमान कर सकते हैं कि यह बातें सुनकर मेरा क्या हाल हुआ होगा। वह बात जिसके जानने के लिये मैं आठों पहर बेचैन रहता था मुझे मालूम हो गई। नर्स से मैंने कुछ नहीं कहा और कमरे में घुस गया। मैं जैसे गया वैसे ही मिस सिंह ने प्रवेश किया। मैं नहीं कह सकता कि नर्स के मुँह से यह बात सुनकर मेरी क्या हालत हो गई थी। लपक कर पहले सुराही से पानी लेकर पिया फिर साहब सलामत की। यह बातें नर्स के मुँह से सुनने के बाद अब जो मैं मिस सिंह को देखता हूँ तो उसका चेहरा मुझे बिलकुल दूसरे ही भावों का प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। मैं उसको विचित्र ढंग से देख रहा था। शायद वह समझ गई क्योंकि उसने नर्स की बातें जो वह मुझ से कर रही थी, सुन ली थीं। मैंने कुरसी पर बैठते हुए कहा—"मिस सिंह।"

उसने मेरी ओर देखा और मेरी आवाज़ और मेरे चेहरे से उसने मेरे दिल की हालत का शायद पता लगा लिया। अतएव एक असाधारण तकल्लुफ और खामोशी के साथ उसने मेरी ओर देखा। मैंने उसकी ओर देख कर पूछा—"मिस सिंह! तुम मेरा बहुत इन्तज़ार कर रही थीं?....मुझको बार बार देखने गई?" इतना कह कर मुझे रुकना पड़ा क्योंकि उसने सिर नीचा कर लिया था। मैंने फिर अपनी बात शुरू की और कहा—"और जब इन्तजार करते करते थक गईं तो फाटक तक गईं और फिर वहाँ खड़ी रहीं मेरे इन्तज़ार में!"

मैंने अपना वाक्य पूरा किया और ग़ौर से मिस सिंह की ओर देखा उसने कोई जवाब न दिया। सिर्फ मुझे देखा। मगर किस तरह? बिलकुल उसी तरह जैसे एक अपराधी मजिस्ट्रेट को देखता है, जिसके ऊपर उसने आँखों

देखो गवाही के आधार पर दोष लगाया हो। ज़रा सोचिये कि न तो मैंने कोई असाधारण शब्द कहे थे और न उसने कोई अपराध ही किया था....लेकिन वह अत्याधिक लज्जित थी। और इधर मेरी हालत ? बस यह समझिये कि मेरी वह हालत थी जो एक कोतवाल की हो कि चोर पकड़ा है और सामने खड़ा है। मैं बहुत दिन से इसी फिक्र में था, इसी ताक में था। और आज आखिर बड़े चोर को पकड़ने में सफल हो गया। मैंने कुछ प्रसन्न होकर उससे कहा—"तुम यक़ीन करना, मेरा भी यही हाल हुआ। इतनी तेज़ी से आया हूँ कि पहले तो एक साहब से मोड़ पर टक्कर हो गई और उनके दूध की कुल्हिया मेरे कोट पर गिर पड़ी, उसको पोंछते हुए चला आ रहा था कि एक सोते हुए कुत्ते की दुम पर पाँव पड़ गया और बुर तरह फाँद पड़ा।"

मैं स्वयं हँस रहा था और वह भी हँस रही थी। मैंने अपने कोट पर दूध के धब्बे दिखाए और उसने खूब हँसते हुए पूछा—"फिर कुत्ते ने काटा तो नहीं ?"

मैंने मज़ाक़ में हँसते हुए कहा—"क़ाटा तो नहीं, यह ख़ैरियत हुई मगर खफ़ा बहुत हुआ।"

वह यह सुनने ही खिलखिला कर हँस पड़ी और फिर उसने कुत्ते पर गिरने की अपनी एक घटना का वर्णन किया और इस मनोरंजक ढंग से वर्णन किया है कि स्वयं हँसते हँसते लोट गई और मैं भी खूब हँसा। इस हँसी मज़ाक के बाद वह हालत जाती रही जो पहले हो गई थी। देर तक बैठा, इधर उधर की बातें की और लौटते अपना इन्तज़ार कराने की माफी चाहते हुए यह भी कह दिया कि मुझे खुद तुम्हारे यहाँ आने की बहुत जल्दी रहती है।

जब घर पहुँचा तो अजीब तरह का इतमीनान महसूस कर रहा था। जिस बात की कुरेद थी उससे मालूम कर लिया था।

इसके बाद फिर मुझे जब जाने की जल्दी होती तो यह सोचकर ही बड़ा आनन्द आता कि मिस सिंह भी मेरी बहुत बेचैनी से इन्तज़ार कर रही होगी।

लेकिन यह बात भी बिलकुल सच सच कहता हूँ कि हमारी दोनों की दोस्ती में किसी विशेष दिशा को उठता हुआ कदम बिलकुल न मालूम होता था। यद्यपि असिल मामला कुछ और ही था।

इसके बाद शायद दोनों ओर एक दूसरे के प्रति विश्वास और स्नेह और भी दृढ़ हो गया। पता चल गया कि वह दिल से मेरी दोस्ती की कद्र करती है और हमारी परस्पर मित्रता में इस प्रकार के शब्दों की कोई गुंजायश नहीं कि वह मुझसे कहे कि कहाँ थे ?...बड़ा इन्तज़ार दिखाया।"

बेतुकी बातें

इस बात का ज्ञान होना कि एक दूसरे का इन्तज़ार करता है और वह भी बेचैनी से, दरअसिल आपस की दोस्ती की न केवल स्थापना बल्कि उसको दृढ़ कर रहा था बल्कि कर चुका था। उसकी भविष्य की सम्भावनाओं से, कम से कम शायद अनुभव हीनता के कारण, मैं तो बिलकुल बेखबर था। दुनिया प्रियतम वस्तु का मूल्य यदि मालूम हो जाय तो उसकी कद्र और इज्ज़त ज्यादा हो जाय, यद्यपि वह वस्तु ज्यों की त्यों रहेगी। इसी तरह इस घटना के बाद भी हमारी दोनों की दोस्ती पूर्ववत बनी रही बस थोड़ा सा अगर फ़र्क हुआ तो वह यह कि हम दोनों बेतुकी बातें करने लगे।

बातें तो ख़ुदा की मेहरबानी से वैसी ही क्या कम होती थीं, फिर बेतुकी भी होती थीं, लेकिन कम से कम इतना बेतुकापन तो नहीं होता था कि यह तक पता न चले कि क्या बात थी और क्या मामला! और यह बेतुकी बातें दरअसिल एक मुसीबत सी होकर रह गई।

हम लोग कितनी व्यर्थ और फ़ज़ूल बातें करते थे, और फिर बातें करने में यह नहीं देखते थे कि आखिर क्या बातें हैं और उनका उद्देश्य क्या है, क्यों कर रहे हैं? बस हुई चली जा रही हैं। परिणाम यह कि कहाँ तक एक दूसरे की बातों पर गौर करते। लाचार होकर बातों को ध्यान से सुनने के बजाय आवाज़ को तो केवल सुनना शुरू किया और चेहरे पर बातें करते समय के भावों को ध्यान-पूर्वक देखना शुरू कर देते।

मैं हँसता तो इसलिये नहीं कि मिस सिंह ने कोई हँसी की बात कहीं है, बल्कि सिर्फ़ इसलिये कि मिस सिंह को खुद हँसी

आई है। और हो न हो यह बात ज़रूर हँसी की थी। कुछ पता नहीं कि बात क्या थी और किधर निकल गई। यही उसका हाल होता।

लेकिन सचमुच अपनी मूर्खता का उस समय ज्ञान होता जब बात करने वाला सवाल कर बैठता या वर्णन की हुई घटना के आधार पर कुछ पूछ बैठता। अकस्मात यह अनुभव होता कि बात करने वाले को पता चल गया कि मैं गौर से बात सुनने के बजाय वास्तव में बात करने वाले के ध्यान में तल्लीन था। इस बात से कुछ शर्मिन्दगी सी मालूम होती और इसके परिणाम में एक मूर्खतापूर्ण मौन छा जाता।

फिर इस मूर्खतापूर्ण मौन को भंग करने के लिये नया सिलसिला शुरू होता और वह भी ईश्वर की कृपा से बिलकुल 'अललटप'। जैसे यह कि ज़रा गला साफ करके ऐसे मौके पर मैंने कहा—"यह...यह मेज़ (मेज़ पर उँगली घिसते हुए) रंग उड़ गया इसका।"

मिस सिंह—"मैं तो इन रंगसाज़ों से तंग हूँ। चेयरमैन की ओर से आर्डर हो गया है मगर कोई रंगसाज़ ही नहीं आता। अब कोई रंगसाज बीमार पड़े तब देखा जायगा।"

वह भी हँस रही है और मैं भी हँस रहा हूँ और अब रंगसाज़ों और साथ ही इस प्रकार के लोगों की चरचा शुरू हो गई और महसूस किया कि वह मूर्खतापूर्ण मौन खूब भंग हुआ।

पैर की नाप

बहुत दिन तक कोई असाधारण घटना नहीं घटी। लेकिन एक दिन की बात है कि मैं मिस सिंह की उपस्थिति में उससे कुछ कहते कहते रुक गया। कुछ ऐसा महसूस हुआ कि जैसे मिस सिंह से मैं कुछ कहना चाहता हूँ। बात आ गई हो गई लेकिन दूसरे दिन मुझे इसका अनुभव हुआ कि सचमुच मैं कुछ कहना चाहता हूँ और साथ ही मिस् सिंह कुछ सुनना चाहती है। मैं कुछ कहूँ तो वह अवश्य ही दिलचस्पी से सुनेगी। मैं क्या कहना चाहता था और वह क्या सुनना चाहती थी बस यही समझ में न आया। सोचता था कि क्या कहूँ उससे। मेरी उसकी बड़ी गहरी दोस्ती थी और डर न लगे तो इस दोस्ती को प्रेम या मुहब्बत कह लीजिये जैसी दो मित्रों में सम्भव हो सकती है। अब इस बात को दोहराने से न कोई फ़ायदा न नतीजा, क्योंकि वह स्वयं जानती है कि दोस्ती बड़ी गहरी है। अब रह गया प्रेम तो ईश्वर जानता है कि मेरा बिलकुल ख़याल था कि पहले तो यह है नहीं और फिर अगर मैं इस शब्द को ज़बान पर लाया भी तो आगे जाकर वह ठहरी एक तरह की अंग्रेज़ और जल्द ही इस दोस्ती के भी लाले पड़ जायेंगे, अतः यह नामुमकिन था और स्वयं भी नहीं पहिचाना था कि वास्तव में मुझे यह रोग लगा भी है या नहीं। फिर ऐसी स्थिति में यदि एक ओर प्रेम प्रकट करने में पिटने का धड़का था तो दूसरी ओर यह बिलकुल बेकार और मामूली चीज़ मालूम हुआ। अतएव यह बात भी आकर दिल से निकल गई।

× × ×

मिस सिंह ने मुझसे कहा था कि अपने दोस्त के कारखाने में मुझे .फुलबूट का एक काला जोड़ा बनवा देना। मिस सिंह को .फुलबूट का बहुत शौक था और बहुत दिन से तक़ाज़ा था। कारख़ाने वालों ने पैर की नाप माँगी थी। उसकी नाप भी विचित्र होती है, पहले पंजे की नाप, फिर एड़ी की नाप और फिर पिंडुली की दो जगह से नाप। मिस सिंह ने मुझे पैर की नाप दे दी थी और मैं कारखाने वालों को भेजकर जूते की फ़रमायश भी कर चुका था, बल्कि अब जूते का इन्तज़ार किया जा रहा था कि इसी बीच में नाप वापस आई। कारखाने वालों ने नाप वापस करते हुए लिखा था कि आप किसी लड़की के लिये जूता बनवा रहे हैं या .खुद अपने लिये ? क्योंकि .खास पैर के नक़्शे के देखने से एक नज़र में मालूम हो गया कि यह मिस सिंह के पैर का नक़्शा नहीं हो सकता। भेजते समय मैंने ग़ौर ही न किया था।

मिस सिंह के यहाँ गया तो वह नाप और खत लेता गया। वहाँ गपशप में ऐसा लगा कि भूल ही गया। यहाँ तक कि फिर वही बेतुकी बाते हुई और वही मूर्खतापूर्ण मौन छा गया।

मैंने इतने में रूमाल जेब से निकाला तो इसके साथ पैर की नाप और वह .खत भी निकल पड़ा। यहाँ इस मौन और शान्ति को भंग करने के लिये किसी उचित विषय की सचमुच खोज थी अतः यह विषय मुझे बहुत पसन्द आया। फ़ौरन् मैंने नाप उठाकर कहा—"यह लो जी, यह तुम्हारे .फुलबूट की नाप वापस आ गई।"

"हाय ?" उसने जैसे चौंककर कहा और कुछ रंजीदा होकर हाथ बढ़ाया।

मैंने काग़ज खोलकर मिस सिंह को अच्छी तरह समझाया। उसने पाँव रखकर देखा तो उसे अपनी भूल मालूम हुई। उसने नाप लेते समय पेन्सिल को पैर से दूर रक्खा था, अतः पैर की

नाप बहुत बड़ी बन गई थी। लेकिन मज़ा यह कि पैर का नक़्शा तो इतना बड़ा हो गया और पञ्जा तथा एड़ी और पिंडुली की नाप चूँकि ठीक थी, अतः कारख़ाने वालों की समझ में न आया कि पैर तो इतना बड़ा और बाक़ी नाप इतनी छोटी। अगर यह मोटा-सा फ़र्क़ न होता और दूसरी नाप भी इसी अनुपात से बड़ी होतीं तो वह एकदम बड़ा-सा जूता बनाकर भेज देते।

मेरे एतराज़ों पर वह हँस रही थी। मैंने कहा—"तुमने यह न देखा कि इतना बड़ा पैर तुम्हारा कहाँ से आया। पूरे हस्पताल के बराबर नाप का जूता बनवाने चलो हो।"

वह बोली—"और तुमने भी उस वक्त कुछ न कहा।"

मैंने कहा—"मुझे क्या पता था कि आप अपनी सारी अक़्ल डाक्टरी में खर्च कर चुकी हैं और इंजीनियरी या नाप तौल के लिये अब कुछ भी नहीं बचा।"

वह यह सुनकर हँसती हुई उठी। किस तरह अपनी मूर्खता पर उसकी आँखों में प्रसन्नता की झलक थी कि कह नहीं सकता। दौड़ी हुई गई और एक चार अंगुल ऊँचा पैर रखने का स्टूल लाई और उस पर वही नाप रखकर बीचों बीच में अपना पैर रक्खा और देखा कि कितना ज़्यादा बड़ा है।

मैंने भी ग़ौर से देखा और कहा—"अब तुम इंजेक्शन लो अक़्ल के। नहीं तो डर है कि इन काले बालों के नीचे कमरा खाली हो जायगा।"

वह ख़ूब हँसी इस जुमले पर। कहने लगी—"मालूम भी है, डाक्टरी में अव्वल आई हूँ। तुमसे तो ज़्यादा ही अक़्ल है।"

मैंने कहा—"तुम सच कहती हो। जूता बनवाने के लिये तुमने बजाय पैर के शायद अक़्ल की नाप भेज दी थी, अब लाओ दूसरा काग़ज़ पेन्सिल और पैर की नाप लो।"

वह हँसती हुई उठी, काग़ज़ और पेन्सिल लाई और स्टूल पर अपना पैर जमाकर रक्खा और पेन्सिल से लकीर खींचना शुरू किया। वह फिर वैसी ही बड़ी नाप ले रही थी। मैंने देखकर कहा—"लगे लठ।"

वह मारे हँसी के बेहाल हो गई क्योंकि जब कभी वह मूर्खता की बात करती थी या ग़लती करती थी तो मैं यही कहता था कि अक़्ल के पीछे लठ लिये फिरती हो या फिर यह कि "लगे लठ।"

उस समय वह प्रफुल्लता और ज़िन्दा-दिली की सच्ची तस्वीर बनी हुई थी। वह ख़ूब ही तो हँसी और फिर पेन्सिल से नक़्शा बनाना शुरू किया। अब भी उसकी समझ में न आता था कि क्या करना चाहिये। मैंने फिर हँसते हुए कहा—"मैं पहले ही से जानता हूँ कि तुम बिल्कुल मूर्ख हो।"

"क्यों?" उसने हँसते हुए कहा—"तुम ख़ुद बेवक़ूफ़ हो।"

मैंने उसकी बेवक़ूफ़ी को समझाया कि तुम पेन्सिल को पाँव की दीवार से इतना दूर क्यों रखती हो। और फिर उसको बताना शुरू किया। बिल्कुल उसी तरह झुककर जिस तरह कोई वह्मी ग्राहक हलवाई के कढ़ाव की कचौड़ियों को बता-बताकर अपनी देख-रेख में तलवाता है। लेकिन उसको हँसने से फ़ुरसत नहीं थी। मेरे बताने पर वह बेतरह हँस रही थी और सचमुच बड़े ही बेढंगेपन का सबूत दे रही थी। उसने तीन काग़ज़ बिगाड़े और जब मेरी तबीयत उलझ गई और वह आख़िरी काग़ज़ बिगाड़ने लगी तो मैंने तंग आकर कहा—"मालूम होता है कि तुम्हारी अब मार खाने की सलाह है और बिना कुटे-पिटे तुम ठीक न होगी। बेवक़ूफ़ कहीं की।"

मेरा यह कहना था कि मारे हँसी के लोट-पोट होकर जैसे सोफ़े पर जा पड़ी।

"इधर आओ।" मैंने डाँट कर कहा और स्टूल को अपनी ओर घसीटकर फिर कहा—"यहाँ आओ।"

वह जब अच्छी तरह हँस चुकी तो बैठकर मुझे देखने लगी और वही हँसी। मैं उठा और उसका हाथ पकड़कर स्टूल के पास ला खड़ा किया और कुछ गम्भीर होकर कहा—"पैर का नक़्शा ले लो फिर बाद में हँसना। अब स्टूल पर सीधी तरह पैर रक्खो। नक्शा मैं खींचता हूँ।"

यह कहकर मैंने पेन्सिल की नोक उसके पैर के अँगूठे से लगाकर पेन्सिल आगे बढ़ाई। उसने मेरा सिर पकड़ रक्खा था। दूसरा हाथ वह मेज़ पर रक्खे थी। ज़रा झुककर उसने इस लापरवाही से देखा कि पंजा जगह से हट गया और मैंने कहा—"है? यह क्या??"

"क्या हुआ?" उसने बड़े भोलेपन से कहा।

मैंने कहा—"पगली नहीं तो। तुम बिल्कुल बेवक़ूफ़ हो। न जाने तुम्हें किस अहमक़ ने डाक्टरी में अव्वल नम्बर में पास कर दिया।"

मेरा यह कहना था कि मानो फिर उस पर हँसी का दौरा हो गया। मैंने कुछ सचमुच तंग आकर कहा—"तुम्हें यह आज क्या हो गया? आखिर यह क्या मुसीबत है?"

मगर इस दफा उसको सचमुच इतनी हँसी आई कि इतनी अकारण हँसी न मैंने देखी थी और न सुनी। वहाँ से हँसी को रोकती हुई आई तो फिर मैंने कहा—"तुम्हारा सचमुच दिमाग़ खराब हो गया है...अब जो हँसी तो पिटना पड़ेगा तुम्हें।"

यह कहकर मैंने उसको फिर लाकर खड़ा किया। उसने फिर उसी तरह मेरा सिर पकड़ लिया और मैंने पेन्सिल पाँव से लगाकर चलाई। उसने फिर पैर हिला दिया और बताया कि गुदगुदी मालूम होती है, यद्यपि वह मोटा-सा मोज़ा पहिने थी।

मैंने इतमीनान दिलाया कि गुदगुदी नहीं होगी और खड़ी रहो सीधी, और अगर तुमने इसको भी बिगाड़ दिया तो बस समझ लो कि हफ़्ते भर तक तुम्हारी नाप नहीं भेजूँगा। मैं धीरे-धीरे नक़्शा खींचने लगा। जब उसको गुदगुदी मालूम होती, मैं हाथ रोक लेता और एक झिड़की देता। मैं इसी तरह नक़्शा बनाने में लगा था और अब वह पैर भी नहीं हिला रही थी। दूसरी तरफ़ से मैंने जो शुरू किया तो चूँकि वह ग़ौर से देख रही थी, अतः पैर का नक़्शा मेरे हाथ की आड़ में आ गया। वह अब तक मेरा सिर पकड़े थी। अब वह देखने को जो झुकी तो उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रक्खा और गर्दन टेढ़ी करके देखना चाहा।

उसका हाथ रखना था कि सहसा मुझे ऐसा मालूम हुआ मानो मेरे कन्धे पर किसी ने दहकता हुआ अंगारा रख दिया। साथ ही उसकी ख़ूबसूरत कलाई मेरे कान से छू गई। नक़्शा बनाने में अत्यन्त बेकली के कारण मेरा हाथ आप ही आप रुक गया। हाथ रुकते ही एकदम से जो यह परिवर्त्तन हुआ तो शायद मिस सिंह ने अपनी ग़लती महसूस की और साथ ही मैंने विवश होकर और हाथ रोककर तथा सिर ऊपर करके मिस सिंह की सुन्दर सुर्मई आँखों में आँखें डालकर देखा। अकस्मात् मैंने महसूस किया कि जैसे मैं उन आँखों में डूब-सा गया। एक खटक-सी कलेजे तक पहुँची। पेन्सिल मेरे हाथ में और मैं स्तब्ध-सा होकर उसको देखता का देखता रह गया।

उसने इस मामूली परिवर्त्तन को देखा। लज्जा और संकोच की एक झपकी-सी उसके चेहरे पर आई, एक शान्ति-सी उसके चमकते चेहरे पर एकदम से छा गई। सौन्दर्य और लावण्य जैसे बल खाकर उसके चेहरे पर चमक उठा। इधर यह हाल कि मैं

नज़र गड़ाए उसकी ओर देख रहा था। वह मुझे देख रही थी और मैं उसे।

देखते-देखते उसका चेहरा मुझे मानो रंग बदलता हुआ दिखाई पड़ा। मुझे पता ही न चला कि कब उसने मेरे कन्धे पर से अपना हाथ हटाया। उस समय मुझे वह कितनी सुन्दर लगी इसका वर्णन करने के लिये मेरे पास शब्द ही नहीं हैं। उसका चेहरा फिर मुझे रंग बदलता हुआ-सा दिखाई पड़ा और इधर मैंने अपने आपको अपने ऊपर काबू पाने में असमर्थ पाया। इसके पहले कि मैं कुछ सोचूँ मेरे हाथ से एकदम से पेन्सिल आप ही आप छूट गई, और फिर जो मैं उठकर बिना कुछ कहे सुने भागा हूँ वहाँ से तो सीधा घर आकर दम लिया। और वह भी इस तरह सुनसान गलियों से उड़ा हुआ आया कि घर पहुँचकर यह मालूम दिया कि अभी जो कुछ हुआ वह सचमुच एक स्वप्न था।

घर पर पहुँचा तो नौकर ने एक तार दिया, तुरन्त होश ठिकाने हो गए। तार इतमीनान से पढ़ा, घड़ी का अलार्म लगा दिया और नौकर से कह दिया कि दो बजे वाली गाड़ी से जाने के लिये इक्के वाले से कह दे।

समझा था कि नींद न आयगी पर लेटा तो बेसुध होकर सो गया।

स्वप्न

सोते में एक अजीब-ग़रीब स्वप्न देखा। क्या देखता हूँ कि मिस सिंह के कमरे में बैठा हूँ। वहीं पर जहाँ बैठा उसके पैर का नक़्शा बना रहा था, मिस सिंह का इन्तज़ार कर रहा हूँ, और वह बराबर वाले कमरे से आने ही वाली है, मैं उसी ओर देख रहा हूँ। परदा ज़रा हिला और वह आई···लेकिन मेरे आश्चर्य की सीमा न रही जब मैंने देखा कि मिस सिंह की जगह एक बड़ी भारी गुलाब जामुन है। आधी वह परदे में थी और आधी बाहर और मैंने आश्चर्यचकित हो देखा कि हूबहू गुलाब जामुन है। मुहर्रम के ढोल से उसकी उपमा देना अधिक अच्छा होगा जहाँ तक कि उसके आकार का सम्बन्ध है। लेकिन जहाँ तक वास्तविकता का संबंध है वह वास्तव में एक अत्यन्त स्वादिष्ट गुलाब जामुन मालूम हो रही थी। शीरे में डूबी हुई, लथपथ कि बस देखने ही से सन्देह हो कि उसके कण-कण में शहद रचा हुआ है।

मेरे देखते ही देखते वह गुलाब जामुन एक दम से फट गई और मैंने देखा कि एक हवाई की तरह मिस सिंह की मूर्ति नहीं बल्कि सचमुच मिस सिंह उसमें से तड़पकर निकली और प्रकाश की एक रंगीन रेखा के साथ आकाश पर जैसे तारा होकर चमकी। कहाँ तो कमरे में था और कहाँ अब मैं खड़ा हुआ आस्मान को ताकता हूँ। मिस सिंह सुबह का सितारा बनकर चमक रही है मगर आकाश के शून्य में जैसे डूबी चली जा रही है।...चली जा रही है डूबती हुई कि सचमुच जैसे एक अत्यधिक तीव्र रोशनी का बिन्दु-सा रह गया। और यह बिन्दु भी अब डूबता

चला जा रहा है⋯डूबता ही चला जा रहा है। लेकिन इसके साथ ही रोशनी की तेज़ी में कोई फ़र्क़ नहीं हुआ। बस रोशनी की एक बर्छी है जो इतनी ऊंची होते हुए भी आँखों में चुभी जा रही है।

मेरे देखते-देखते एक कल्पनातीत निस्तब्धता चारों ओर छा गई। मेरी दृष्टि उसी प्रकाश की बर्छी पर थी लेकिन चारों ओर का दृश्य! अवर्णनीय सन्नाटा, खामोशी और निस्तब्धता! जैसे मैं एक भयानक और घने जंगल में खड़ा हूं और चारों ओर जहां तक दृष्टि गई, बल्कि जहां तक कल्पना की पहुंच हो सकती है घोर सन्नाटा ही सन्नाटा है।

आकाश एक धुँधलके की भांति गर्द में लिपटा हुआ दिखाई पड़ता था जिसमें यह बिन्दु बस डूबता ही चला जा रहा था। न सूर्य था, न चांद था और न तारे और एक विचित्र नीरवता-सी चारों ओर छा रही थी।

मेरे देखते-देखते यह चमकदार बिन्दु एकदम से चटककर अंगारा बन गया!⋯एकाएक यह मालूम हुआ मानो सृष्टि में रंग-बिरंगी आग लगी हुई है। मेरी आंखें चकाचौंध हुई जाती थीं, क्योंकि एक प्रकाश था सतरंगा जो पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक फैला हुआ था। एक दम से जैसे तड़पकर एक अत्यन्त सुन्दर रंगीन शोला निकला और मालूम हुआ कि हज़ारों मील तक एक सुनहरा समुद्र लहरें मार रहा है। एक और कंपन हुई, और मैंने देखा कि इस सुनहरे समुद्र में जैसे एक बगूला उठा और बीचोंबीच में एक भारी सुनहरी गुलाब जामुन बन गई और एक चक्कर लेकर जो यह गुलाब जामुन फूटी है तो सुनहरे रङ्ग में जगह-जगह सातों रङ्गों की मिली हुई चिनगारियाँ निकलीं और देखते ही देखते यह चिनगारियाँ सैकड़ों मील लम्बी रङ्ग-बिरंगी नदियों की तरह बहती हुई मालूम पड़ीं। फिर केन्द्र

पर एक झटका-सा हुआ। गुलाब जामुन घुल गई और अब बड़े ही भड़कीले रंग के चश्मे थे जो प्रवाहित थे और भाँति-भाँति के रंग बदल रहे थे। ऐसा लगता था मानों रंग-बिरंगी बिजलियाँ कौंध रही हैं।

दायें, बायें, ऊपर, नीचे, सारांश यह कि चारों ओर यह मालूम होने लगा कि रंगीन बिजलियाँ हैं और कौंधे जा रही हैं। फिर साथ ही ऊपर नीचे की तरफ़ हज़ारों मील लम्बी सुनहरे रङ्ग की तलवारें-सी तड़प-तड़पकर गिर रही हैं और फिर मज़ा यह कि एक-एक क्षण में दस-दस रङ्ग बदलती थीं और हर रङ्ग इतना मनोहर, इतना आकर्षक और इतना सुन्दर कि मैं बस देखता जाता था और आश्चर्य से दंग था।

देखते-देखते जैसे एक आलोक-सागर में आँखों को चौंधिया देने वाले प्रकाश में नहाई हुई मिस सिंह की झलक-सी दिखाई पड़ी। और तो मैंने कुछ न देखा मगर हाँ, यह देखा कि उसके पैर में .फुल-बूट की जोड़ी है, बिल्कुल उसी आकार-प्रकार की जैसी कि वह बनवाना चाहती थी, फिर पलक मारते में वह उसी आलोक-सागर में कहीं लोप हो गई।

अब मैं देख रहा था उस अवर्णनीय दृश्य को कि किस प्रकार हज़ारों मील के रंग-बिरंगे प्रकाश के चमकते सागर बल खा रहे हैं। एकदम से ऐसा मालूम हुआ मानो रंग-बिरंगी रेशम की लच्छियों को किसी ने झटककर मरोड़ डाला और साँप की तरह बल खाकर उनमें से भाँति-भाँति के सुनहरे रूपहले और अन्य रंगों के फ़ौवारे से छूटने लगे।

फिर एकदम से रंग-बिरंगी रोशनी की पेटियाँ-सी थीं कि तड़पती हुई निकलीं। अकस्मात् एक-एक पेटी की हज़ारों पेटियाँ हो गईं और हर रंग में हज़ारों रंग चमकने लगे। लच्छियाँ की लच्छियाँ चक्कर खा-खाकर बनने लगीं। घूम-घूमकर रंग

बदलती थीं, बँधती थीं और फिर खुलती थीं। एकाएक एक तेज़ झोंके के साथ ये पेटियाँ आकाश की ओर उड़ गईं और उनके स्थान पर एक गुलाब जामुन-सी बन गई और साथ ही एक झटके से रंग-बिरंगे हलके में एक सुन्दर चेहरा उभरा...मैं एकदम चौंक पड़ा, हैं ? यह चेहरा तो मैंने कहीं देखा है। ...पर वह तो कहीं ग़ायब भी हो गया।

तड़प-तड़पकर रेशम की-सी लच्छियाँ खुलने और बिखरने लगीं और फिर उलझ गईं। खुलती थीं और बनती थीं और लोप हो जाती थीं और दूसरी उनसे भी अधिक मनोहर और उनसे भी अधिक तेज़ी से प्रकट होती थीं।

अकस्मात् आकाश में एक कम्पन-सी हुई और ऐसा लगा मानो रोशनी के रंग-बिरंगे साँप आकाश में लहरा रहे हैं और बल खा रहे हैं और एक दूसरे से लड़ रहे हैं। फिर एक ज़ोरों की तड़प के साथ एक बड़ा-सा हलक़ा बन गया। उसमें हरकत पैदा हो गई और वह तेज़ी से घूमने लगा। फिर घूमते-घूमते—एक महान् गुलाब जामुन फिर बन गई।

किन्तु पलक झपकाते में उनमें एक रंगीन शोला इस ज़ोर से भड़क कर निकला कि ऐसा लगा मानो प्रकाश की चादरें की चादरें ऊपर उठने लगीं। ये चादरें इस तेज़ी से ऊपर उठती थीं कि निगाह काम न करती थी, और देखते-देखते मैंने देखा कि हर चादर पर मिस सिंह की एक बड़ी-सी तस्वीर है और किस तेज़ी से ये चादरें एक क्रम के साथ उठ रही हैं। जितनी ग़ायब होती हैं उनसे अधिक तैयार हो-होकर उठ रही हैं, पर एक अजीब मामला है। हर चादर पर मिस सिंह की तस्वीर तो मौजूद है, मगर यह तस्वीर मिस सिंह की है भी ? न वह सूरत न वह शक्ल ! फिर भी लिबास, करीना, हाव-भाव सब वही और फिर सबसे बड़ा सबूत मिस सिंह के होने का यह मौजूद कि एक अजीब

स्वाभाविक भावना या अनुभूति कि यह मिस सिंह है। इन कारणों से तो वह मिस सिंह की तस्वीर है, लेकिन सूरत शक्ल और चेहरे-मोहरे का जहाँ तक सम्बन्ध है, तस्वीर का चेहरा ही और है। वह चेहरा जिसको देखकर मैं थोड़ी देर हुई आश्चर्य चकित रह गया था और जो प्रकट होकर तुरन्त ही ग़ायब हो गया था और मेरा देखा हुआ था। चेहरे से जैसे प्याज़ी रंग की एक ज्योति फूट रही थी या हलकी-हलकी गुलाबी रंग की किरणें थीं, चादर की चादर पर यही मालूम होता था कि तस्वीर के सुन्दर और सुर्ख़-सफ़ेद चेहरे की झलक है। साँवले रंग की जगह गोरा-चिट्टा और सुन्दर मुखड़ा था। रोशनी की तेज़ी से यह मालूम होता था कि सौंदर्य की गर्मी से मुखड़ा दमक और भड़क रहा है। सूरत शक्ल मेरी देखी हुई थी और मैं तुरन्त पहिचान गया कि यह मिस सिंह के वेष में दरअसल उस सुन्दर लड़की की तस्वीर थी जिसको मैंने शादी की गड़बड़ में जबरदस्ती गुलाब जामुन खिलाने की कोशिश की थी! और मैं देख रहा था कि किस तेज़ी से ये तस्वीरदार चादरें मेरे सामने उठ रही थीं। मेरी आँखों में वह सुन्दरता जैसे बस कर रह गई। लेकिन जैसा कि मैं कह चुका हूँ बालों का तर्ज़, लिबास, और अन्दाज़ मिस सिंह का सा था, और वही फ़ुलबूट पहिने हुए थी जो मिस सिंह अपने लिये बनवाने का निश्चय कर चुकी थी।

यह अवर्णनीय स्वर्गीय दृश्य मैं ज्ञान-शून्य और आत्म-विस्मृत होकर देख रहा था! चित्रों के बराबर प्रदर्शन ने मेरी आँखों के सामने वे दृश्य स्थायी रूप में खड़े कर दिये थे। सहसा एक बिल्कुल ही नया दृश्य आँखों के सामने आया। चादरें सारी की सारी जैसे फट गईं और उनमें से रंग-बिरंगे शोले भड़ककर निकले जो आकाश से लेकर पृथ्वी तक पहुँचे और हर शोले में से हज़ारों रंग फूटकर निकले···एक मौन-धमाका-सा हुआ

और रोशनियाँ एकदम से कँपकँपाकर धीमी-सी होती हुई मालूम पड़ीं और धीरे-धीरे बिल्कुल छाँव की तरह वायु-मण्डल में आकाश से मैंने कोई चीज़ उतरती-सी देखी। एक धुँधलका-सा हो गया और मैंने आँखें फाड़कर ग़ौर से देखा। कुछ जुम्बिश-सी मालूम दी जैसे परदा-सा हिलता है। बिल्कुल साफ़ दिखाई दिया कि परदा है। मैं मिस सिंह के कमरे में जहाँ बैठा था वहीं बैठा हूँ। सामने का वही परदा फिर हिला और उसके साथ ही मिस सिंह मुस्कराती हुई कमरे में दाखिल हुई और आकर बैठ गई। बातें शुरू हो गईं मगर मुझे याद नहीं कि क्या बातें हुईं।

अब मज़ा तो देखिये कि सूरत और शक्ल, यानी चेहरा और रंग-रूप का जहाँ तक सम्बन्ध है, वही गुलाब जामुन वाली लड़की मुझसे बातें कर रही थी और वही थी, लेकिन जहाँ लिबास और बातचीत के तर्ज़ का सम्बन्ध है वह मिस सिंह थी। कमरा वही, बातचीत वही, आज और कल यानी रोज़ाना की घटनाओं पर टीका-टिप्पणी वही, सारांश यह कि सब बातें वही, वैसी ही उसकी तेज़ी और बेतकल्लुफ़ी और वही उसकी हँसी। इन कारणों से तो वह मिस सिंह थी नहीं तो वही गुलाब जामुन वाली लड़की।

मैंने इतमीनान से उस लड़की को मानो अब देखा। खुदा की शान नज़र आ रही थी। मैं न जाने क्या बातें कर रहा था और वह मिस सिंह की सी बेतल्लुफ़ी से हँस-हँसकर जवाब दे रही थी। मैं देखता था और इस असाधारण और अजीब-ग़रीब परिवर्त्तन पर आश्चर्य की जगह आनन्द में था। एक तस्वीर थी जो अपनी सुन्दरता के सहित मेरी आँखों में बसी जाती थी। मैं उसकी ओर एक अजीब आकर्षण-शक्ति के प्रभाव से खिंचा-सा जा रहा था। बल्कि यों कहिये कि जैसे वह मेरी जान को खींचे

लेती थी। उसकी सुन्दर शर्बती आँखों में ग़ज़ब की चमक थी। वह आँखें तेज़ और चमकीली थीं और उनमें एक अजीब ज़िन्दगी-सी थी और एक रहस्यपूर्ण आकर्षण-शक्ति थी जो मुझे खींच रही थी और मुक़ाबला मेरी शक्ति से बाहर मालूम होता था।

मैंने चेहरे से नज़र हटाकर फ़ुलबूट की तरफ़ नज़र डाली और फिर जो वापस नज़र उठाई तो दृश्य ही बदल गया था। न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गया और अकस्मात् यह अनुभव हुआ कि मैं दूर से चला आ रहा हूँ और कहीं जा रहा हूँ।····एक गली में पहुँचा···बिल्कुल सन्नाटा है···एक ज़ीना दिखाई दिया और मैं एकदम से जैसे ऊपर था।···छोटा-सा सहन था, सामने तीन दरों का बरामदा था। अन्दर कमरा था जिसके दरवाज़े थे। मैं एक दरवाज़े के सामने आया। अन्दर अँधेरा-सा मालूम हुआ। मैंने आँखें फाड़कर देखा...वही लड़की जिसे मैंने ज़बरदस्ती गुलाब जामुन खिलाई थी। अजीब हाल में...एक झलक-सी उसके चेहरे की और फुलबूटों की दिखाई पड़ी और देखा कि वह लड़खड़ाकर गिरी और उठी और फिर गिरी...मैं आगे बढ़ा ही था कि.......घड़ी के ज़ोरदार अलार्म की आवाज़ कानों में आई और हड़बड़ाकर उठ बैठा।

जल्दी से उठा और कपड़े पहिने। थोड़ा-सा सामान दुरुस्त किया। इरादा किया कि मिस सिंह को कुछ लिखूँ मगर बेकार समझा। इक्का आया और झटके और झकोले खाता सीधा स्टेशन पहुँचा।

वास्तविक परिस्थिति

यह बतलाने की यहाँ कोई ख़ास ज़रूरत नहीं कि तार के द्वारा घर पर मैं क्यों बुलाया गया था। महीने भर की छुट्टी की दरख्वास्त घर से पहुँचते ही रवाना की क्योंकि चला था तो दफ़्तर में सिर्फ़ एक नोट छोड़ गया था। मिस सिंह को एक बहुत संक्षिप्तपत्र लिखा कि किस तरह एकदम से मेरा आना हुआ। उसके बाद पिछली घटनाओं पर एकान्त में बैठकर ग़ौर किया। दिन भर गुमसुम रहा। दो दिन इसी तरह बीते। नतीजा यह हुआ कि तीसरे दिन मिस सिंह को न जाने क्या-क्या लिख मारा। यह पत्र चौदह पृष्ठों का था।

इस पत्र में अपने दिल का पूरा का पूरा हाल लिख मारा मगर अन्त में जाकर क़लम रोक लिया और फिर दूसरे ही दिन जवाब का इन्तज़ार किये बिना एक और ख़त लिखा. और उसमें अपने को बड़े अदब और क़ायदे के साथ उनकी सेवा में प्रस्तुत कर दिया। और फिर उसी दिन शाम को एक पत्र अपील के रूप में भेजा। और फिर तीसरी अपील दूसरे दिन सुबह और तीसरा अपील-पत्र शाम को, यहां तक कि इन अपीलों का सिलसिला जारी ही था कि मिस सिंह का जवाब आया। एक खत में जूते की नाप थी और मेरे एक दम से चले जाने पर आश्चर्य प्रकट किया गया था। हालाँकि यह नहीं लिखा था कि कमरे से या कस्बे से। इसके बाद दूसरा खत मिला। वह लम्बा-चौड़ा था और बिना किसी हील हुज्जत के मेरे प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया गया था। मैं इस दिलचस्प

खत को, सच कहता हूँ ढाई घण्टे तक बराबर और बार-बार पढ़ता रहा।

इसके दूसरे दिन असली जवाब आया, यानी उस खत का जिसमें मैंने अपने को उनकी सेवा में पेश किया था। मेरी दरख्वास्त मंजूर कर ली गई। मेरी क़िस्मत में तारे जड़ दिये गए। कोई हील-हुज्जत न थी। किन्तु इस बारे में इशारा किया गया था और आशा प्रकट की गई थी कि मैं जल्दी से जल्दी इस विषय में उनके पिता को खत लिखूँगा, और यह कि मैं अपना धर्म बदलने को तो तैयार ही हूँगा।

यह खत दरअसल बहुत ही मुख्तसर था और प्रिय 'महोदय' की क़िस्मत का था। अतः इसका उत्तर भी मैंने बहुत संक्षेप में लिखा और उसमें यह लिख दिया कि धर्म नाम की चीज़ से न तो मुझे दिलचस्पी है और न यहाँ कोई धार्मिक सवाल दरपेश है। और रह गया तुम्हारे पापा को अपने विवाह के सम्बन्ध में लिखना, तो विवाह हो जाने के बाद उनको सूचित करना अच्छा होगा। यह मैंने इसलिए लिखा कि मुमकिन है उनके पिता इस बात को नापसंद करें और अड़गा लगाएँ।

अब यह हाल था कि मिस सिंह के पास से दो प्रकार के खत अलग-अलग लिफाफों में आ रहे थे। एक प्रकार के तो वह थे जिसमें वही पुरानी दोस्ती हँसी-मज़ाक और बेतकल्लुफी की चाश्नी थी, और दूसरे रस्मी खत जिनमें सिर्फ मामलात पर ही गंभीर और गिने-चुने शब्दों में बहस होती थी। अब रह गये प्रेम-पत्र तो न तो मैंने इस प्रकार का जान-बूझकर कोई खत भेजा और न उसने भेजा। यह और बात है कि पत्रों में हमारे परस्पर प्रेम की स्वाभाविक झलक हो। जान-बूझकर न इस तरफ़ से कुछ लिखा जाता था न उस तरफ़ से।

विवाह के मामले में ख़ूब-ख़ूब बहस हुई और हर मामले में जीत मेरी रही। उसने मेरी हर बात मान ली। वह इस पर भी राज़ी हो गई कि मैं धर्म न परिवर्त्तन करूँ और अपने और उसके माता-पिता को भी सूचना न दूँ। मगर उसने लिखा कि यह बहुत अच्छा होगा कि उसके पापा को मैं एक ख़त क़ायदे के अनुसार भेज दूँ जिसमें यह स्पष्ट लिख दूँ कि मैं आपकी सुपुत्री से विवाह करना चाहता हूँ। और इसके बारे में उसने मुझे विश्वास दिलाया था कि वे कोई आपत्ति न करेंगे और इस मामले में किसी प्रकार कभी दख़ल न देंगे बल्कि बड़ी ख़ुशी से अपनी शुभकामना प्रकट करते हुए अनुमति दे देंगे।

लेकिन चूँकि मुझे उसके पिता को विवाह की सूचना देने में ज़रा-सा भी लाभ न दिखाई देता था इसलिए मैंने जवाब में लिख दिया कि अब इन तकल्लुफ़ों को जाने भी दो, शादी के बाद सूचना देना ही अच्छा और ठीक है, अतः वह इस पर भी राज़ी हो गई।

इस सारी बातचीत के तय होने के बाद अलबत्ता पत्रों में उन भावों की झलक आ गई जो दोनों तरफ़ से पैदा होने ही चाहिये थे। मैंने मिस सिंह को लिखा कि हम दोनों ख़ुदा के सामने अब मियाँ बीबी हैं और हम दोनों दिलपाक मोहब्बत और पवित्र भावनाओं के केन्द्र हैं। तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूँ और बहुत जल्द इस बात की घोषणा भी कर दी जायगी। अतएव इसके बाद हम दोनों का जो पत्र व्यवहार था वह बिल्कुल ऐसा ही था जैसा एक पति और पत्नी में होना चाहिये। इस बारे में इससे अधिक लिखना फ़ज़ूल है कि दिन में दो बार डाक आती है और दो छोड़ तीन ख़त इधर से और उतने ही उधर से आते-जाते थे।

अब कुछ और भी सुनिये। इधर तो मिस सिंह से निहायत ही दिलचस्प पत्र व्यवहार का सिलसिला जारी था और उधर एक और दिलचस्पी शुरू नहीं बल्कि मौजूद थी। वैसे तो न जाने मैं किस धुन में और कहाँ ख़ुद अपने विचारों में खोया रहता था लेकिन जिस वक़्त भी दो-चार घड़ी बहिनों या दूसरे रिश्ते की लड़कियों के साथ व्यतीत करता तो मेरी शादी का सवाल दर-पेश हो जाता।

इन लड़कियों का यह क़ायदा है कि कोई भाई या भतीजा नौकर हो तो यह नहीं देखेंगी कि उसकी नौकरी कैसी है, और आमदनी क्या है। बस उन्हें तो इससे मतलब है कि शादी हो जाय। "शादी कब करोगे ?" यह एक सवाल तरह-तरह से मेरे सामने पेश होता था, और चूँकि मेरी तबीयत भी ज़रा जोश में थी, अतः मैं तुरन्त कहता कि ज़रूर करूँगा और जल्द करूँगा। अतएव घंटों बहस हुई, बीसों लड़कियों के नाम लिये जाते, आपस में एतराज़ होते, बहस होती और इसके बाद अगर कहीं सब की राय एक हो जाती तो मैं यह कहकर उड़ा देता कि लड़की मुझे दिखाओ। सारांश यह कि ख़ूब दिलचस्पी रहती। कई एक लड़कियों की तस्वीरें भी देखने में आईं। मगर यहाँ तो अब दिल में दूसरी ही तस्वीर मौजूद थी। यह सब बातें केवल एक खेलवाड़ थीं। नहीं तो जो इरादा हो चुका था वह तो हो ही चुका था। बातचीत के सिवा न तो कोई नतीजा निकल सकता था और न मैं निकालना ही चाहता था।

———

स्वप्न-फल

छुट्टी मुझे कई कारणों से बढ़वानी पड़ी थी और अब वे दिन भी खत्म हो रहे थे। मैं कह नहीं सकता कि किस तरह मैं मिस सिंह से मिलने के लिये बेचैन था। इरादा था कि छुट्टी खत्म होने से पहले ही पहुँचूँ। लेकिन मेरी रिश्ते की बहिन, जिनकी शादी में गुलाब जामुन वाली घटना घटी थी, वह भी मौजूद थीं। उन्होंने कहा कि उनको उनके घर पहुँचाता हुआ, नौकरी पर जाऊँ। और मैं जा ही रहा था अतएव इस पर राज़ी हो गया।

यात्रा के लिये तैयार हुआ हूँ तो मेरे पास वही सामान था जो लेकर चला था। यानी नाश्तेदान, एक सूट-केस, एक बिस्तर और एक जोड़ी मिस सिंह के फ़ुल-बूट की।

× × × ×

उन बहिन साहिबा को लेकर मैं उनके घर रात के बारह बजे के बाद पहुंचा। एक अँधेरी-सी गली में मकान था। उनको उतरवाया और मैं मकान की छत पर ठहराया गया। गली की ओर हो जीना था। और उस पर चढ़कर छोटा-सा सहन था और दालान तथा कमरा। मैंने कमरे में अपना असबाब रख दिया और बरामदे में पड़कर सो गया।

दिन चढ़े सोकर उठा। बहिन साहिबा आईं। मालूम हुआ कि हफ़्ते भर बाद अपने पति के पास जायँगी। उनके पति नौकरी पर परदेश में थे। वह वास्तव में अपने पिता के घर आई थीं।

मैंने इधर-उधर देखा तो मुझे ऐसा मालूम हुआ मानो मैं इस जगह कभी पहले आया था। ख्याल आया और चला गया।

नाश्ता मैंने किया नहीं क्योंकि मालूम हुआ कि खाना बहुत जल्दी मिल जायगा। नहा-धोकर बैठा ही था कि दस बज गए। खाना खाया और यह सोचकर कि अभी से न सोना चाहिए बाहर घूमने चला गया। घर पर कोई मर्द था ही नहीं, अतः मैं अकेला शहर में इधर-उधर सैर करता फिरा। दिन के शायद ग्यारह बजे होंगे या बजने वाले होंगे जब मैं वापस आया।

मौसम यद्यपि अच्छा था लेकिन स्वच्छ नीले आकाश पर सूरज अपनी पूरी जवानी के साथ दमक रहा था और धूप में काफी तेज़ी थी। जब मैं लौटकर ज़ीने पर चढ़ने लगा तो मुझे फिर एकदम से वहम हुआ कि जैसे इस स्थान को मैंने कभी देखा है। एकदम से क़दम रुक-सा गया। मैं बड़े ही अचरज में था कि इस जगह को मैंने कभी न कभी ज़रूर देखा है। यद्यपि मैं इस शहर में भी कभी इससे पहले न आया था।

ऊपर आया, और इधर-उधर जिस जगह पर भी नज़र पड़ी यही धोखा हुआ कि ज़रूर इस जगह को पहले देखा है। तेज़ धूप से चला आ रहा था। बरामदे में जो पहुँचा तो दरीचे के फूल पर नज़र पड़ी और मुझे और भी पक्का विश्वास हो गया कि मैंने इस जगह को देखा है, कि इतने में कमरे में नज़र पड़ी। मेरे ताज्जुब की हद न रही और मैं एक क्षण के लिए खड़ा रह गया! निःसन्देह मैंने यह जगह स्वप्न में देखी थी और सबसे बड़ा आश्चर्य यह कि वह सूरत् हो मौजूद थी। वही लड़की जिसको मैंने गुलाब-जामुन खिलाई थी और बिलकुल उसी तरह फुलबूट पहिने हुए जैसे मैंने स्वप्न में देखा था। इसके पहले कि मैं सचेत होता, मेरे सामने बिलकुल दृश्य उपस्थित हो गया जो कुछ कि मैंने स्वप्न में देखा था। यह देखकर मुझे बहुत अचरज हुआ कि वह गिरी, फिर उठी और फिर गिर पड़ी।

उसकी कूद-फाँद के साथ ही सारा मामला मेरी समझ में आ गया और इसके पहले कि वह गिरती पड़ती अन्दर जाने वाले दरवाज़े तक पहुँच सके, मैंने दौड़कर उसको घेर लिया। मैंने यह क्यों किया? शायद पिछली घटनाओं के आधार पर। क्योंकि उसी रात उसको फिर स्वप्न में एक क्षण के लिये देखा था। उस वक़्त मैंने सूरत देखते ही पहचान लिया। फिर वैसे भी उस समय मेरी तबियत कुछ मस्त-सी थी, शायद यह कारण भी हो, कुछ भी हो, लेकिन असल बात यह है कि वह गुलाब-जामुन वाली घटना ह मुझे याद आ गई जिसके कारण मुझे हँसी आई, और बुरी तरह हँसी आई। मन में यही आया कि उसे और तङ्ग किया जाय और मैंने झपटकर दरवाज़े के पास पहुँचने से पहले ही उसे घेर लिया। और यह था जनाब उस रंगीन और अजीब-ग़रीब स्वप्न का स्वप्न-फल जो इस तरह मेरे सामने उपस्थित हुआ।

———

दूसरा भाग

बाक़ी कहानी स्वयं गुलाब जामुन वाली की ज़बानी

.फुलबूट की मुसीबत

मैं पड़ी बेखबर सो रही थी कि मुमानी जान ने मुझे सोते से जगाया और मुझसे जल्दी की ताकीद करके कहा कि खाने वग़ैरह की फ़िक्र करो। मैंने नाश्ते को पूछा तो उन्होंने मना कर दिया कि बस खाने का इन्तज़ाम करो। जब कुछ खास इन्तज़ाम को पूछा तो मना कर दिया। अम्माँ जान ने मुमानी जान से कहा भी कि दुल्हन जब तुम्हारे साथ भाई आया है तो ऐसा भी क्या कि कुछ .खास इन्तज़ाम न किया जाय, मगर मुमानी जान ने मना कर दिया। मैं समझी थी कि मुमानी जान के सगे भाई आए होंगे, और मैं खाना पकाने में लग गई।

कोई आध घण्टा बीता होगा कि अम्माँ जान मरदाने कमरे की तरफ़ दबे पैर गईं और थोड़ी देर बाद मुस्कराती हुई आईं और मुमानी जान से पूछा—"एरी दुलहन, यह निगोड़ी लम्बी-लम्बी चीज़ क्या रक्खी हुई है ?"

मुमानी जान ने मुस्कराकर कहा—"यह .फुलबूट है, जूते हैं घुटनों-घुटनों तक के।"

अम्माँ जान ने ताज्जुब से भौंये सिकोड़ लीं और मुस्कराकर अजीब अन्दाज़ से बोलीं—"भला इनको पहिनते कैसे होंगे ?"

मैंने काम करने से हाथ रोककर जो अम्माँ जान से तफ़सील

पूछी तो उन्होंने कहा—"मैं तो यह समझी थी कि काली-काली मुगदर की जोड़ी रक्खी हुई हैं।"

मुझे उस विचित्र जूते का हाल सुनकर सख्त ताज्जुब हुआ। मुमानी जान से मैंने और अम्माँ जान ने पूछा कि कैसे पहिने जाते हैं तो उन्होंने तफ़सील से बताया और फिर उसके लाभ बताए कि बरसात में साँप-बिच्छू से रक्षा के लिये या कीचड़ से बचने के लिये लोग पहिनते हैं।

देर तक मैं उन अजीब ग़रीब जूतों के बारे में सोचती रही, क्योंकि ऐसे जूते मैंने कभी न तो देखे और न सुने थे।

× × × ×

जब खाने-पीने से छुट्टी हो गई तो मुमानी जान के भाई बाहर घूमने चले गए और अम्माँ जान ने मुमानी जान से कहा—"दुल्हन, मुझे चलकर निगोड़े जूते तो दिखा दो।"

यह सुनकर मैं भी उठी तो अम्माँ जान ने कहा—"लड़की, होश की बातें कर। खाना समेट रही है। पहले काम कर ले, फिर हाथ ख़ाली हो तो जाके तू देख लेना। और मुर्ग़ियों और कौवों को जो खाना खिलाना हो तो योंही फेंक दे।"

मैं यह सुनकर रुक गई क्योंकि सचमुच मैं काम में घिरी हुई थी। अम्माँ जान और मुमानी जान ज़ीने पर चढ़ गईं और थोड़ी देर के बाद देख-भालकर लौट आईं। अम्माँ जान ने दो-चार ख़राबियाँ जूते में निकालीं, कुछ एतराज़ किये फिर बाद में खूब हँसीं और कहने लगीं—"मुझे तो पैर डालते ही डर मालूम हुआ।"

सारांश यह कि वे वहाँ जाकर जूता पहिनकर देखना चाहती थीं मगर जूते के अन्दर झाँककर और थोड़ा-सा पैर डालकर रह गईं और फिर ख़ूब हँसीं।

खाना-पीना तो हो ही चुका था और मुझे भी घर के काम से छुट्टी मिल गई। कोई बारह बजने वाले थे। मुमानी जान सोने के इरादे से कमरे में चली गईं और अम्माँ जान छोटे दालान में कुछ सीने-पिरोने में लग गईं। मैंने मौक़ा अच्छा समझा और सोचा कि चलकर ज़रा मैं भी उन जूतों के दर्शन करती आऊँ।

धीरे-धीरे ज़ीने पर चढ़ी, दरवाज़े में पहुँचकर परदे से लगकर झाँका और जब इतमीनान हो गया कि कोई नहीं है तो मैं कमरे में गई।

मैंने जूते की जोड़ी को देखा। सचमुच मुगदर की-सी जोड़ी थी। मैंने जूते को उठाकर अच्छी तरह देखा। फिर ख़याल आया कि लाओ पहिनकर देखूँ। फिर जो नापा तो मालूम हुआ कि मेरे पैर मे आ जायगा। चारपाई पर बैठकर मैंने सीधे पैर को जूते में डाला। आधी दूर जाकर कुछ फँसा तो मैंने बाहर निकाल लिया और अच्छी तरह समझकर पंजा सीधा करके पैर डाला और ज़ोर जो लगाया तो पैर जूते में ठीक बैठ गया। मैं उसे पहिनकर दो-चार क़दम चली भी, एकाएक मुझे ख़याल आया कि दोनों पैरों में पहिनकर देखूं। यह सोचकर मैं चारपाई पर बैठ गई और दूसरा जूता भी पहिनने की कोशिश की। आधी दूर से कुछ आगे जाकर शायद पंजा फैल गया और मैंने बहुत कुछ ज़ोर मारा मगर आगे न गया। जब मैं थक गई और देखा कि जूता न चढ़ेगा तो उसे उतारना चाहा। थोड़ा-सा तो पैर बाहर आया, मगर ऐसा मालूम हुआ जैसे पैर फँस गया। पहले तो धीरे-धीरे ज़ोर लगाया फिर ख़ूब ज़ोर लगाया मगर पैर न निकला। मैंने जितना ज़ोर लगाया उतना ही पैर उसमें और जम गया, बल्कि एड़ी में सख़्त दर्द मालूम हुआ। मैंने ज्यादा ज़ोर लगाया तो और भी दर्द हुआ। यहाँ तक खींचातानी करते-करते मैं थक गई और मारे दर्द के पैर का यह हाल कि जैसे फटा जा रहा

है। अब मैं कुछ तो घबरा रही थी और धर-धर के ज़ोर मार रही थी और पैर मेरा जैसे टूटा जा रहा था। मैं इस प्रयत्न में इतनी तल्लीन थी कि एकदम से कमरे के दरवाज़े पर सामने पैर की आहट पर जो मैंने सिर उठा कर देखा है तो मैं कह नहीं सकती कि मेरा क्या हाल हो गया।...सामने मेरी मुमानी जान के रिश्ते के वह भाई खड़े थे जिन्होंने मुझे शादी के मौके पर जबरदस्ती गुलाब जामुन खिलाने की कोशिश की थी और मेरे मुँह और कपड़े सब गुलाब जामुन में लिसकर रह गए थे।

अब ऐसे मौके पर भला मैं क्या करती। सिवाय इसके कि उठकर भागी। मगर इस बुरी तरह मेरा पैर फँसा हुआ था और इतने ज़ोर का दर्द था कि पैर टिकाते ही मुँह के बल गिरी। फिर उठी और फिर गिरी। और चाहती ही थी कि रेंगकर दरवाज़े पर पहुँच जाऊँ कि उन्होंने लपककर मेरा रास्ता रोक लिया। मैं ज़मीन पर तो पड़ी ही थी वहीं की वहीं सिमटकर रह गई, बल्कि मेरे मुँह से चीख निकलते-निकलते रह गई। मैंने कपड़े में मुँह छिपा लिया और दरवाज़े की तरफ़ सरकने की कोशिश की तो वह सामने ही यह कहते हुए बैठ गए कि "तुम बड़ी शरीर लड़की हो।" फिर यह कहते हुए उन्होंने जूते को एड़ी के पास से पकड़ा, "तुम शायद वही हो......तुमने मुझसे गुलाब जामुन छीनकर खाई थी।" और यह कहकर बायाँ जूता छोड़कर दाहिने जूते की एड़ी पकड़कर उन्होंने मुझसे कहा—"पैर खींचो अपना।"

अब मैं क्या करती सिवाय इसके कि जिस तरह बना मैंने पैर ज़ोर लगाकर अपनी तरफ़ खींचा। उधर से उन्होंने खींचा और जूता उतारकर अलग रख दिया और फिर मज़ा यह कि मेरा जूता खुद उठाकर मेरे पैर में पहिना दिया। इस बीच में

मेरा जो हाल था वह मैं नहीं कह सकती। मैं बुरी तरह अपना मुँह छिपाए हुए थी।

इसके बाद बाएँ पैर के बूट को एड़ी और पिंडली से पकड़कर देखा। ज़रा-सा हिलाया था कि मैं दर्द से बेताब हो गई। यहाँ तक कि मैंने मजबूर होकर अपने हाथ से उनका हाथ तो नहीं मगर जूता पकड़ लिया ताकि वह उसको दूसरी तरफ़ न झटका दे सकें। मेरे ऐसा करने पर वह बोले--"तो क्या नहीं उतारने दोगी ? आखिर यह पहिना ही क्यों था ?"

यह कहकर उन्होंने मेरा हाथ हटाया और जूते को पिंडली के पास से पकड़कर मुझसे कहा—"ज़ोर से खींचो।"

लेकिन आप सोचिये कि मैं भला क्या खाक खींचती। मेरी तो जान निकली जा रही थी। उन्होंने जो अपनी तरफ ज़रा-सा खींचा तो मैं दर्द के मारे बेचैन हो गई, और अब मालूम हुआ कि ज़मीन पर बैठकर जूते का उतारना कठिन ही नहीं ना-मुमकिन है। स्थिति समझकर उन्होंने कहा—"अब पलंग पर बैठो, नहीं तो जूता नहीं उतरेगा।

मैंने जो आनाकानी की तो मेरा हाथ पकड़कर उठाया और मैं लंगड़ाकर पलग पर बैठ गई। पलंग पर उनका बड़ा-सा तौलिया पड़ा था। उनकी नज़र नीचे देखकर मैंने वह तैलिया जल्दी से उठाकर चादर की तरह ओढ़ लिया और ऐसा करने से मेरी घबराहट में बहुत कमी हो गई।

अब उन्होंने मुझसे कहा— "चारपाई की पट्टी पकड़ो।"

मैंने पट्टी पकड़ ली। अब उन्होंने फिर जो ज़ोर किया तो मेरा जैसे दम ही निकल गया। मुँह से तो 'उफ़' भी न निकली लेकिन मैं बल खा गई। उन्हें जब यह मालूम हुआ कि यह ऐसे न उतरेगा तो वह बैठ गए और अब मेरे ऊपर सबसे कठिन समय आया। उन्होंने मेरी पिंडली दबाई, मेरी तरफ़ ज़ोर किया, जगह-जगह से

जूते को दबाया और धीरे-धीरे लेकिन बड़ी कठिनाई से थोड़ा-थोड़ा करके जूता उतारना शुरू किया। जब उन्होंने जूता उतारकर अलग फेंका तब मैंने इतमीनान की साँस ली। लेकिन मैं फिर उस समय और भी परेशान हुई जब उन्होंने मेरे पैर के पंजे और एड़ी को अपने दोनों हाथों से मज़बूती से पकड़कर दबाना शुरू किया। बोले—"सुर्ख हो गया है। टूट जाता पैर" यह कहकर ज़ोर से पैर को एड़ी के पास से दाबा और फिर मेरा दूसरा जूता भी उठाकर पैर में पहिना दिया। जूता पहिन चुकने के बाद मैं जाने के लिये उठने ही लगी थी कि वह बैठे हुए तो थे ही, मेरा पैर पिंडली पर से जोर से पकड़ लिया और पूछा—"गुलाब जामुन खाओगी?....याद है वह वाकेया?... गुलाब जामुन वाला वाकेया याद है या नहीं?...पहिचाना भी मुझे?"

मैंने ज़ोर लगाकर पैर को छुड़ाते हुए जाने की कोशिश की तो उन्होंने मज़बूती से पैर पकड़कर जैसे वहीं।का वहीं मुझे रोक दिया और कहा—"जब तक यह न बताओगी कि मुझे पहिचाना भी या नहीं, मैं नहीं छोड़ूँगा।"

यह सोचकर कि इस आफ़त से किसी तरह जल्दी छूटूँ, मैंने सिर हिलाकर स्वीकारात्मक उत्तर दे दिया। मेरे सिर हिलाने पर वह मेरा पैर छोड़कर खड़े हो गये और मैं जो एक-दम से खड़ी होकर चली हूं तो उन्होंने मुझे पकड़ लिया और कहा—"मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा।"

मैंने अब ज़ोर लगाकर जैसे तुड़ाकर भागना चाहा तो मुझे मज़बूती से पकड़ लिया और अपने काबू में करते हुए कहा—"तुमने मेरी बीबी का जूता कैसे पहिना?"

अब मैं ज़ोर कर रही थी छुड़ाने के लिये और वह मुझे रोक रहे थे, और क़ाबू में कर रहे थे और कह रहे थे—"तुमने

मेरी बीबी का जूता तोड़ डाला !...तुमने जूता कैसे खराब किया ? अब मैं तुम्हें अच्छी तरह देखे बगैर नहीं छोड़ूंगा। तुम्हारा जी चाहे तो चीखो-चिल्लाओ मगर मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।"

आखिरी शब्द कहते हुए मेरा चेहरा जबरदस्ती खोल दिया और बड़ी ही शरारत के साथ मुस्कराते हुए कहा—"इसी चाँद को तो हम देखना चाहते थे...मगर अब तुम आँख खोलो खोलो...जल्दी खोलो.. जल्दी.. जल्दी।"

मैं अब बहुत बुरी फँसी थी। सोचती थी कि अगर चीखी चिल्लाई भी और अम्माँ जान ने सुन लिया तो और भी ग़ज़ब हो जायगा। मैं बड़ी ही मुश्किल और तकलीफ की हालत में थी और मेरी आँखें बिलकुल बन्द थीं। अब उन्होंने मेरे मुँह पर फूँकना शुरू किया, क्योंकि उनके हाथ तो मुझे काबू में करने में घिरे हुए थे। मेरे मुँह पर जोर-जोर से फूँकते हुए उन्होंने फिर कहा—"जल्दी खोलो आँखें....जल्दी...नहीं तो मेरा क्या है, अगर कोई आ जायगा तो भी मैं खुदा की क़सम न छोड़ूँगा।"

साथ ही कुछ खटका-सा हुआ। यह सब कुछ क्षण भर की तो बातें ही थीं। मैंने लाचार होकर पपोटों को जुंबिश दी और हारकर झक मारकर और कोशिश करके आँखें जो खोली हैं तो बस...एक जोर मार कर जो मैं छूटते ही आँखें पोछती भागी बदहवासी में तो परदा उठाने की सुध किसे। तोप के गोले की तरह परदे पर गिरी और उधर से आवाज आई—"है ?"

मुमानी जान से टक्कर हुई और उन्होंने झट से मेरा हाथ पकड़कर ताज्जुब से आँखें फाड़कर कहा—"कमबख्त !" फिर उँगली होठों पर रखकर नीचे इशारा किया और मैंने सुना कि अम्माँ जान ने सचमुच घर सिर पर उठा रक्खा है। या मेरे खुदा, अब मैं क्या करूँ ? मुझे वहीं खड़ा करके परदे

उठाकर मुमानी जान अपने भाई के पास गईं। मैं वहीं खड़ी की खड़ी रह गई। हिम्मत न पड़ती थी कि नीचे जाऊँ क्योंकि मेरे ही ऊपर फटकारें पड़ रही थीं और मुझे और अपने को और अपनी क़िस्मत को अम्माँ जान बुरी तरह कोस पीट रही थीं।

मुमानी जान के भाई अपनी बहिन से बोले—"अजीब वाक़ेया हुआ।"

मुमानी जान बोलीं—"जी हाँ।" उनका स्वर व्यंगपूर्ण था, जिससे पता चलता था कि वह सब कुछ जानती थीं।

उनके भाई ने हकलाते हुए कहा—"यह कौन....?"

मुमानी जान बोलीं, बल्कि कुछ प्रसन्न स्वर में उन्होंने कहा—"यह वही लड़की है जिसके बारे में तुमसे बराबर कह रही हूँ। बोलो कैसी है ?....मगर यह...यह आखिर तुम्हें क्या सूझी ......यह सब......."

वह बोले—"इस जूते में फँसी पड़ी थी...इसमें पैर फँस गया था। यह जूते दरअसल ऐसे होते हैं कि......"

मुमानी जान बीच ही में पूछ बैठी—"तो फिर क्या हुआ ?"

वह बोले—"मैंने उसका पैर निकाल दिया; वरना कोई और सूरत ही मुमकिन न थी। और यह जूते दर-असिल......."

मुमानी जान बात काटकर बोलीं—"तो फिर तुमने उसे अच्छी तरह देख तो लिया......मगर...आखिर...अच्छा यह तो बताओ कि कैसी है ?"

उनके भाई कुछ रुककर बोले—"अच्छी है।"

मुमानी जान कुछ ख़ुश होकर बोलीं—"तो फिर मैं अब घर तार दिये देती हूँ...मतलब मेरा यह कि निकाह करके जाना अब।"

"हैं ?" वह चौंककर बोले—"वाह...खूब !"

"खूब नहीं।" जोर देकर मुमानी जान जरा तीखे स्वर में बोलीं—"यह खूब ऊब जाने दो अब...बस अब चुप हो जाओ... लो और सुनो। आए वहाँ से, कहते हैं खूब !"

कुछ तेज होकर वह बोले—"क्यों ? आखिर क्यों ? यह भी कोई जबरदस्ती है।"

दाँत पीसकर कुछ धीमे स्वर में मुमानी जान बोलीं—"क्या मेरी नाक कटवाओगे......बेवा बहिन है, भाई जान देते हैं, बेहद चाहते हैं।"

वह बोले—"तो मैं क्या करूँ ?"

मुमानी जान फिर दाँत पीसकर बोलीं—"अब क्या मुझसे कहलवाते हो साफ़ साफ़...बस रहने दो, चलो......आए वहाँ से। किसी के यहाँ मेहमान आते हैं तो यही होता है।"

वह तेज़ होकर बोले—"जी हाँ, कोई मेहमान आता है तो उसकी चीज़ें बिगाड़ी जाती होंगी और......"

मुमानी जान बिगड़कर बोलीं—"उसकी माँ बैठी रो रही हैं, पीट रही हैं बुरी तरह...वह यहाँ खड़ी सब देख रही थीं। जब तुम उसको......उसका....उसे जूता...जूते से...तो तुम्हें यह नहीं मालूम कि यह लोग कैसे हैं। वह अपनी जान देने को कह रही हैं।...तुमने गज़ब किया। ...समझ लो कि मैं कहीं की न रह जाऊँगी।...वह अभी से क़यामत कर रही हैं......मेरी पीठ पर उन्होंने दोहत्तड़ मारकर अपना सिर पीट लिया कि तुम्हारे भाई ने...और मैं खुद यहाँ आई...पहुँची तो...तो...फिर समझ लो...खूब समझ लो कि अब मेरी इज्ज़त तुम्हारे हाथ है।...मैं तार देती हूँ घर।"

यह बोले—"मगर मैं शादी नहीं कर सकता।"

"वह कैसे ? और क्यों ?" मुमानी जान तेज़ होकर बोलीं।

उन्होंने कहा—"मुझे लड़की पसन्द नहीं है।"

मुमानी जान ने कहा—"अभी तो तुमने कहा कि अच्छी सूरत शक्ल की है।"

वह ज़रा देर रुककर बोले—"यह कोई लाज़मी नहीं कि अच्छी सूरत की सब लड़कियाँ पसंद कर ली जायँ। हाँ, मैं मानता हूँ कि सूरत-शक्ल अच्छी है, मगर मुझे पसन्द नहीं।"

मुमानी जान बोलीं—"मगर अब तो तुम्हें करनी पड़ेगी.... तुमने (कुछ धीमे स्वर में) मेरी जान के पीछे...तुम मेरी जान के पीछे पड़े हो...गज़ब हो जायगा।"

वह बोले—"मैं शादी नहीं कर सकता।"

मुमानी जान बिगड़कर बोली—"तुम्हें करना पड़ेगी... करनी पड़ेगी तुम्हें...क्या तुमने गरीबों की इज्ज़त को कुछ समझा ही नहीं है...क्या तुमने मुझे बेइज्ज़त..."

इतना कहने पाई थीं कि मुमानी जान रोने लगीं और चुप हो गईं। वह कुछ गंभीर होकर बोले—"मुझे मार डालो, मगर मैं हरगिज़ शादी नहीं करूँगा।...नहीं कर सकता...नहीं कर सकता।"

मुमानी जान के सिसकियाँ लेकर रोने की आवाज आ रही थी या नीचे अम्माँ जान के गरजने की। मैं सहमी हुई दरीचे की आड़ में छिपी हुई खड़ी थी और सोच रही थी कि या खुदा अब क्या होगा। मैं ज़बरदस्ती एक आदमी के गले मँढ़ी जा रही हूँ और वह है कि मानता ही नहीं।

× × ×

फिर इसके बाद बहिन-भाइयों में बातें हुईं। पहले तो मुमानी जान ने मेरी खूबसूरती की खूब बढ़ा-चढ़ाकर तारीफ की, फिर

यह कहा कि अगर तुम शादी न करोगे तो मेरी जान मुसीबत में पड़ जायगी। फिर तरह-तरह से खुशामद की। लेकिन उधर साफ एक ही जवाब था और वह यह कि—"मैं शादी नहीं कर सकता। मुझे चाहे मार डालो मगर मैं नहीं कर सकता।"

ये जवाब कई बार सुनकर मुमानी जान कुछ देर चुप रहीं फिर बोलीं—"तो साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि दिल में कुछ और है। इस लड़की को कोई नौजवान नामंजूर नहीं कर सकता, जरूर कोई बात है। कुछ दाल में काला जरूर है··· ··जो न बहिन की इज्जत का खयाल है न यह कि इस पर सुसराल वाले क्या गजब ढाएँगे। जरूर दाल में काला है। आखिर बात क्या है? साफ-साफ बताओ······बोलो···चुप क्यों हो!···कहते क्यों नहीं कि है कुछ।"

"क्या कह रही हैं आप।" वह बोले—"कैसा दाल में काला और पीला। कह दिया मैंने कि मैं शादी नहीं कर सकता। और यह मेरा आखिरी जवाब है। इधर की दुनिया उधर हो जाय लेकिन मैं शादी ही नहीं करूँगा। बल्कि आज शाम को जा रहा हूँ।"

मुमानी जान जब हर तरह थक गईं तो उन्होंने अपने भाई से एक दिन और रुकने को कहा। कहने लगीं—"कल शाम को जाना।"

उन्होंने कहा—"मुझे बेकार रोकती हो। मैं कतई जवाब दे चुका, अब मैं इसके अलावा कोई और जवाब नहीं दे सकता।"

मुमानी जान ने कहा—"अच्छा, जब तुमने यह सोच ही लिया है तो शादी की बात क्या, जिक्र तक न किया जायगा।"

"हाँ, यह बात है तो खैर मैं रुक जाऊँगा।" मुमानी जान के भाई ने कहा।

"शुक्रिया !" मुमानी जान ने व्यंगपूर्ण स्वर में कहा ।

यह कहकर मुमानी जान दरवाजे से बाहर निकलीं। मुझे एक कोने में सिमटी हुई खड़ी देखा हाथ से अपने साथ आने का इशारा किया। मैंने झाँककर देखा कि अम्माँ जान किधर हैं। एक बार वह खुद मुझे आकर देख गई थीं और मैं उसी तरह खड़ी रही थी। मैंने देखा कि अब मौक़ा है और तेज़ी से उतरी हुई सीधी अपने कमरे में चली गई।

आख़िरी पाँसा

मैं तो अपनी कोठरी में घुस गई और मुमानी जान को देखिये कि उन्होंने अम्माँ जान को जाकर दिलासा दिया। हाथ जोड़े, ख़ुशामद की और मज़ा तो देखिये कि कल ही तार देती हूँ और निकाह हुआ जाता है। यह कहकर! उनसे ख़ुशामद की कि चुप रहें। अम्माँ जान बराबर यही कहे जाती थीं—"बहिन तुम्हारे भैया ने मेरी बच्ची को कहीं का न रक्खा।" मुमानी जान ने जब अम्माँ जान को तसल्ली दी, तब जाकर वह चुप हुईं। बात असल यह भी थी कि हम ग़रीब आदमी, और अम्माँ जान को मेरी शादी की तरफ़ से बहुत फ़िक्र थी। वह कई बार मुमानी जान से कह भी चुकी थीं, जिसका यही मतलब हो सकता था कि अपने भाइयों में से किसी के साथ मेरी शादी की बात तय करा दें, लेकिन हमारी ग़रीबी के कारण देखने में नामुमकिन था, इसलिये वह यह सुनकर संतुष्ट हो गईं।

अब मैं यह सोच रही थी कि मुमानी जान क्या करेंगी। वहाँ से तो साफ़ इनकार है और यहाँ अम्माँ जान को वह बच्चों की-सी तसल्लियाँ दे रही हैं। मुझे पूरा विश्वास हो गया कि मुमानी जान यह सब रोक-थाम के लिये कर रही हैं।

× × ×

शाम को मुमानी जान ने मुझे अकेले में ले जाकर सारी परिस्थिति समझाई। मैं क्या कहती भला। मैं ख़ुद जानती थी। मैंने यही कहा कि मेरी इसमें कुछ ख़ता नहीं थी। चीखी मैं इस लिये नहीं कि किसी को मालूम न हो जाय। मुमानी जान ने

कहा—"अच्छा हुआ जो तूने शोरगुल नहीं मचाया।" इस ज़रा-सी भूमिका के बाद उन्होंने मुझे अपना प्रस्ताव समझाया।

उनकी तजवीज़ यह थी, कि कल सुबह अम्माँ जान को तो दूसरे रिश्तेदारों के यहाँ इस रिश्ते के बारे में सलाह लेने के लिये वह भेज दें और मुझे खुद अपने भाई के पास भेजें कि जाकर उन्हें राज़ी कर लूँ।

या मेरे अल्लाह! मैं यह सुनकर हक्का-बक्का रह गई। भला मैं एक ग़ैर आदमी के पास जाकर, उससे यह कहूँ, कि तू मेरे साथ शादी कर ले। ना बाबा ना! यह मुझसे कभी न होगा। मैंने मुमानी जान से साफ़-साफ़ कह दिया कि मुझे मार डालो तब भी मैं न जाऊँगी। यह क्या ग़ज़ब कर रही हो!

वह बिगड़कर बोलीं—"क्या तुझे खा जायगा?"

मैं चुप रही। इसका जवाब ही क्या देती।

वह फिर खिसियाकर बोलीं—"बोलती क्यों नहीं, वह क्या तुझको खा जायगा?"

अब मैंने कहा—"खा वा तो क्या जायँगे। मगर मैं कहूँगी क्या?"

वह कुछ उत्साहित होकर बोलीं—"मेरी जाने बला कि तू क्या कहेगी। बस, जैसे बन पड़े राज़ी कर लेना।...तू यही कहना कि तुमने जो बातें की, थीं तो अब करो मुझसे शादी...मैं कहीं की न रहूँगी।"

इसका मैं क्या जवाब देती। दिल में सोच रही थी कि जो कुछ भी इन्होंने शरारत की है वह सिर्फ़ घर वाले ही जानते हैं और अगर सब लोग चुप रहें तो कुछ भी नहीं है। मामला दबने का सवाल तो दूर रहा, यह उभरेगा ही क्यों। जब मैं चुप रही तो मुमानी जान फिर बोलीं—"अच्छी तरह समझ लो कि मैं तुम्हें घसीट के ले जाकर बन्द कर दूँगी उसके पास।"

"अरे ?" मेरे मुँह से निकला—"ग़ैर आदमी के पास! आप क्या कह रही हैं ?"

"अरी कमबख़्त !" वह बिगड़कर बोली—"क्या तुझे वह खा जायगा, डस लेगा ! आख़िर क्यों तेरा दम निकला जाता है। मरी जाती है, ख़्वाहमख़्वाह। आख़िर काहे का डर है तुझे ?...... बड़ा अच्छा लड़का है। बड़ी अच्छी तरह रक्खेगा तुझे...तेरे हो करने में राज़ी होगा। आख़िर तू डर क्यों रही है ? मुझे बता तो सही, आख़िर क्यों काँप रही है ? कोई निगल तो जायगा नहीं तुझे एक दम से .मार तो डालेगा नहीं तुझे। और फिर मैं तो दरवाज़े से लगी खड़ी रहूँगी। नहीं तो याद रख कि मेरी चोटी तो ख़ैर मूँड़ा हो जायगा, लेकिन फिर तू कुँआरी की कुँआरी ही रहेगी जनम भर। आगे तू जान।"

मैंने कहा—"मुमानी जान, आप कैसी बातें कर रही हैं। मुझसे एक हरफ़ न बोला जायगा।"

वह बोलीं—"अच्छा तो पैर पकड़ लेना उसके।"

मैं चुप हो रही और फिर जो उन्होंने तक़ाज़ा किया तो मैंने कहा—"मुझसे न तो कुछ कहा जायगा और न हाथ-पैर जोड़े जायँगे, और न मैं जाऊँगी उनके पास।"

मुमानी जान ने तेज़ होकर कहा—"नहीं जायगी तो मैं उसे यहाँ बुला लूँगी !"

यह कहकर वह चली गईं।

× . × ×

दूसरा दिन आया और मैंने देखा कि मुमानी जान ऊपर गईं और अपने भाई से कुछ बातें करके आईं और मुझसे सिर हिलाकर मुस्कराकर कहा—"मैं कह आई हूँ उससे कि दोपहर को ज़ीने का दरवाज़ा बन्द करके लेटा करो। कहीं सो जाओ

और कोई आ जाय और चीज़-बस्त उठाकर ले जाय···और ऊपर से मैं बन्द कर दूँगी।"

मैं मतलब समझ गई। मैंने कहा—"मैं नहीं जाऊँगी।"

"नहीं कैसे जायगी ?" उन्होंने कुछ प्रसन्न स्वर में कहा—"कमबख़्त तुझे मैं भावज बना रही हूँ। देखती तो जा। तू उसकी बातों पर मत जाइयो। ज़रा मुँह खोल के और डाँट के बात कीजियो। जहाँ तुझसे चार बातें हुईं बस तेरा ही हो जायगा। कोई तुझे खा थोड़े ही जायगा।"

"क्यों नहीं खा जायगा।" मैंने कहा—"खाने को क्या हुआ। बल्कि कल तो खा लेने से भी ख़राब बात हुई। और किसे कहते हैं खा लेना। मैं नहीं जाऊँगी।"

"नहीं कैसे जायगी !" मुमानी जान बोलीं—"मरी जाती है मारे डर के। ज़्यादा से ज़्यादा तुझे जोरू बनायेगा और क्या करेगा। चल छुट्टी हुई। फिर तुझे हाथ-पैर भी नहीं जोड़ने पड़ेंगे। यही तो मतलब है हमारा।"

यह कहकर वह तो हँसती हुई चली गईं और मैं सोच में डूब गई। क्योंकि मैंने देखा कि अम्माँ जान ने सचमुच नौकरानी से डाली लाने को कहा।

× × ×

कोई बारह बजे होंगे कि दबे पैर मुमानी जान कोठे पर गईं और धीरे से झाँककर अपने भाई को देखा। उसी तरह चुपके-चुपके मुस्कराती हुई उतरीं और, गर्दन और हाथ के इशारे से मुझे बताया कि सो रहे हैं। मैं अपनी कोठरी में घुस गई और वह आईं सीधी मेरी तरफ़ !

"अरी कमबख़्त, न तो कंघी की तूने, न चोटी की, और जा रही है मियाँ के पास !" मुमानी जान ने शिकायत की।

मैंने कुछ जवाब न दिया।

इसके बाद बहुत देर तक जोरदार बहस और झगड़ा होता रहा। मेरी खुशामद की, डराया, धमकाया और तरह-तरह की बातें कीं। लेकिन मैं किसी तरह भी राज़ी न हुई तो सचमुच मुझे पकड़कर घसीटा। सारांश यह कि ख़ुशामद करती, चुमकारती, बहलाती, फुसलाती, ढकेलती, घसीटती वह आख़िर को मुझे ले ही पहुँची। अब आने को तो मैं दरवाज़े तक आ गई मगर मुझसे क़दम न उठाया जाता। जैसे किसी ने मेरे पैर थाम लिये। बोल सकती न थी इसलिये हाथ जोड़ रही थी कि उन्होंने मुझे घसीटकर एकदम से अन्दर ढकेलकर एक धड़ाके के साथ बन्द कर दिया।

आके क़दमों में तेरे सर को झुकाए चांद भी

मुझे मुमानी जान ने कमरे के अन्दर ढकेला और दरवाज़ा जो ज़ोर से बन्द हुआ, तो मैं सामने के परदे और दरवाज़ों के बीच में खड़ी थी। आवाज़ आई—कौन है ? मैंने इन्तेहाई मुसीबत की हालत में दरवाज़े को अपनी उङ्गलियों से खोलने की कोशिश की। मेरा बस नहीं था कि किस तरह दरवाज़े से चिपक कर रह जाऊँ और मुमानी जान के भाई को यह न मालूम हो सके कि दरवाज़े और परदे के बीच में कोई खड़ा है। फिर आवाज़ आई—"आया !"

अब मैंने इन्तेहाई तकलीफ़ उठाते हुए बेकल होकर दरवाज़े को जैसे नोचने की कोशिश की, मेरा दिल उस वक़्त मुमानी जान को कोस रहा था और मैं सोच रही थी कि या अल्लाह ! मैं क्यों आ गई ?

इतने में वह उठकर आए और परदा एक हाथ से उठाकर उन्होंने मुझे देखा। मेरा मुँह दरवाज़े की ओर था और मैं अपनी कोहनियों से उसे छिपाये हुए थी। उनके मुँह से निकला—"अरे !"

इतना कहकर उन्होंने परदा छोड़ दिया और एक क्षण भर खड़े रहने के बाद परदा उठाया और पूछा—"तुम क्यों आई हो ?"

मेरे पास भला इसका जवाब ही क्या था। मैं चुप खड़ी मुँह छिपाये दूसरे हाथ से खिसियानी बिल्ली की तरह दरवाज़ा नोच रही थी और वह परदा उठाये खड़े थे। एकदम से उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और "इधर आओ," कहकर वह

मुझे घसीटकर लाए और चारपाई पर ज़बरदस्ती बैठा दिया। और बोले—"बैठो सीधी तरह।"

मेरी उस वक़्त जो हालत थी उसे बयान नहीं कर सकती। मरता क्या न करता वही हालत थी। मुझसे फिर पूछा—"मैं क्यों आई हूँ?"

मैंने कोई जवाब न दिया।

मेरा हाथ चेहरे से हटाकर कहा—"सीधी बैठो। जवाब दो सीधी तरह। आखिर यह क्या मामला है? किसने बन्द किया है तुम्हें?"

यह कहकर उठकर जाकर दरवाज़ा देखा और ज़ोर लगाकर खोलने की कोशिश की। जब यह इतमीनान हो गया कि बाहर से बन्द है, तो आकर अलग बैठ गये। फिर शायद यह सोचकर कि क्या मामला है उन्होंने ज़रा गंभीर होकर मुझसे पूछा—"तुम्हें आपा ने बन्द कर दिया है?"

मैं कुछ न बोली तो ज़रा झटके से फिर कहा—"आखिर यह क्या मामला है? बोलती नहीं, तुम···" यह कहते हुए मेरे दोनों हाथ पकड़कर खींचे—"सीधा करो मुँह···सीधा··· बिलकुल···नहीं तो वही तरकीब करूँगा। हैं! नहीं मानोगी··· तो···"

यह कहकर उठे और पकड़े जो मेरे हाथ ज़रा सख़्ती से, तो मैं घबड़ाई और मजबूर होकर सीधी बैठ गई। लेकिन फिर भी आप ही आप झुकी जा रही थी।

"अब तुम यों न मानोगी," यह कहकर सचमुच मुझे उसी दिन की तरह पकड़ लिया और अब फिर मैं क्या बताऊँ कि किस तरह मुझे लाचार होकर अपनी हिफ़ाज़त के लिये आँखें खोलकर बैठना पड़ा।

ज़रा डाँटकर उन्होंने कहा—"अच्छी तरह समझ लो कि अगर तुम नहीं मानोगी तो फिर……" इतना कहकर मुझे और बेतकल्लुफी के साथ सीधा बैठाया और कहा—"अबकी अगर तुम न बैठी सीधी तो फिर यह समझ लो कि यह रक्खा है तुम्हारे कंधे पर हाथ," यह कहकर मेरे बायें कंधे पर हाथ रक्खा और मैं सीधी होकर नज़र नीची किये बैठ गई तो उन्होंने नर्मी से पूछा—"तुम्हें आपा ने बन्द कर दिया है ?"

मैंने सिर हिलाकर जवाब दिया तो कहने लगे—"मुँह से बोलो।"

मैंने लाचार होकर कहा—"जी।"

"क्यों ?" उन्होंने पूछा।

मैंने कुछ जवाब न दिया तो उन्होंने अपने हाथ को जो मेरे कंधे पर था, दबाया। मुझे इसी में खैरियत दिखाई दी कि उनकी बात का जवाब दे दूँ। उनके हाथ का ज़ोर मेरे कंधे पर बढ़ता ही जा रहा था। मैं एकदम से बोल उठी—"मुझे नहीं मालूम।"

"झूठी कहीं की," उन्होंने अजीब स्वर में कहा।

× × ×

अब इसके बाद की तफ़सील बयान मुश्किल से की जा सकती है और समझी आसानी से जा सकती है। क्या बातें हुईं और किस मुसीबत के सवालों के जवाब मैंने दिये और किस तरह, यह बस मैं ही जानती हूँ। बेहद दुश्वारी हुई मगर जवाब देनेवाले से सवाल करनेवाला ज्यादा सख्त था, इसलिए सब सवालों के जवाब देने पड़े बल्कि ज़बरदस्ती झटक-झटककर, कुरेद-कुरेदकर। कुछ "हूँ" करके, कुछ "हाँ" करके, कुछ सिर हिलाकर, कुछ इशारों से, सारांश यह कि इन सब सवालों के जवाब देने पड़े। जैसे कि "तुम काहे के लिये आई हो ? राज़ी

करने के लिये आई हो?...कैसे राज़ी कर सकती हो?... क्या ख़ुशामद करके राज़ी करना चाहती हो?...तुम्हें कुछ पता नहीं कि कैसे राज़ी करते हैं?...तो हो मुझे राज़ी करना?... गुलाब जामुनवाले वाक़िये के बाद कभी मेरा ख्याल भी आया?...अच्छा क्या ख्याल था जो आया?....यह नहीं तो बताओ कै दफ़ा मेरा ख़याल आया?...मेरी कल की बातों से तुम कुछ ख़फ़ा तो नहीं हुईं?"

इस आख़िरी सवाल का जवाब जो मैंने नहीं में दिया है तो बस कुछ न पूछिये, मैं हैरान और परेशान रह गई, यह देखकर कि किस तरह एक कमज़ोर लड़की के आगे उसकी खामोशी के तिलिस्म से हारकर एक ज़िद्दी आदमी कहता है :—

आके क़दमों में तेरे सर को झुकाए चाँद भी।

× × × ×

मैंने सच्ची मुहब्बत के वायदे पर, आप ही अपने दिल में उनकी लौंड़ी बनकर रहने का निश्चय कर लिया और उनके पूछने पर जवाब दिया कि तुम्हें कभी नहीं भूलूँगी।

यह सब क़ौल-क़रार पक्के करके मुझे जो विदा करने को उठे हैं तो परदे तक पहुँचाकर मुझे किवाड़ से चिपकाकर किस प्यार से मेरे कान के पास मुँह लाकर पूछा—"भूलोगी तो नहीं?" मैंने सिर हिलाकर कहा—"नहीं भूलूँगी।" मेरे इस जवाब के साथ ही जैसे उनका सिर आप ही आप ढलककर मेरे कन्धे पर आ गया। और फिर पलक मारते में वह मुझे छोड़कर एक हल्की-सी कराहने की आवाज़ निकालकर, परदा छोड़कर चारपाई पर जा गिरे। और मैंने सुना कि इस तरह कराह रहे हैं जैसे सचमुच कोई बहुत बड़ी तकलीफ़ में हो। "या मेरे अल्लाह!" मैंने दिल में कहा—यह किस तकलीफ़ में हैं।

मैंने धीरे से दरवाज़े पर दस्तक दी और धीरे ही से मुमानी जान ने दरवाज़ा खोल दिया। नीचे पहुँचने पर कुछ मुस्कराते हुए उन्होंने चुपके से पूछा—"कम्बख़्त, बोल तो सही, डस आई मेरे भैया को ?"

मेरी सचमुच थी कम्बख़्ती कि मैं वाक्य पूरा होने से पहले ही यह समझकर कि पूछ रही हैं—राज़ी कर लिया या नहीं ? मैंने सिर हिलाकर 'हाँ' कह दिया। यानी डस आई। इसके जवाब में किस तरह उन्होंने मुझे चिपटाकर मेरे माथे को चूमा है कि मैं झेंप गई और एक चुटकी लेकर कहा—"ले अब देख तमाशा......मगर बता दे कि मामला पक्का है या कच्चा ?"

मैंने मुस्कराकर कहा—"पक्का।"

ख़ुश होकर, वह मुझे फिर कोठे पर ले गईं और मुझे दरवाज़े पर खड़ा करके मुस्कराती हुई अन्दर गईं। मैंने बाहर से अन्दर की बातें सुनने के लिये दरवाज़े से कान लगा दिये। मुमानी जान की आवाज़ आई—"तो फिर घर पर तार दे दूँ या नहीं ?"

उन्होंने जवाब दिया—"जैसी आपकी मरज़ी।"

मुमानी जान बड़े मजे से बोलीं—"कोई जबरदस्ती तो है नहीं भैया। तुम कहो तो दूँ तार और कहो तो न दूँ।"

वह बोले—"मत दीजिये।"

मुमानी जान ने कहा—"जैसी तुम्हारी मरजी हो। लो अब सिधारो रात को, मैं जाकर तुम्हारे रात के नाश्ते का इन्तज़ाम करूँ।"

यह कहकर मुमानी जान आती हुई मालूम दीं। इधर मेरा यह हाल था कि जैसे मौत की-सी ठण्डक मेरे दिल में बैठ गई कि या ख़ुदा, इस आदमी ने मुहब्बत के यह सब झूठे वादे किये

और लिये थे। लेकिन अभी मुश्किल से मुमानी जान के क़दम दरवाज़े तक ही आये थे कि उन्होंने पुकारा—"सुनिये तो।"

मुमानी जान बोलीं---"क्या है?" और यह कहकर मुड़ीं ज्योंही अन्दर की तरफ़ तो उन्हें हँसकर कहना पड़ा—"चल झूठे।" और दोनों के हँसने की आवाज़ से कमरा गूँज उठा। इस हँसी के खत्म होने के बाद मुमानी जान ने कहा---"बोलो हारे कि जीते?"

उनकी आवाज़ आई----"हारे।"

मैंने इस आवाज़ को सुना तो मेरा दिल क़ाबू में आया। मुमानी जान मेरे साथ हँसती हुई नीचे आईं और पहला काम उन्होंने यह किया कि एक जवाबी तार तो घर दिलवाया और दूसरा छुट्टी बढ़वाने के लिये उनसे अपने दफ़्तर दिलवाया।

× × × ×

अब ज़रा मज़ा देखिये कि दूसरे दिन मुमानी जान ने चुपके से मुझसे आकर कहा—"तुझे बुला रहे हैं।"

मैंने साफ़ इन्कार कर दिया कि मैं नहीं जाऊँगी। भला यह कोई बात है, मैं हरगिज़-हरगिज़ न जाऊँगी। बहुत कुछ उन्होंने कहा, मगर मैंने इन्कार कर दिया, क्योंकि अम्माँ जान भी अब आ गई थीं। मैंने यह भी बहाना किया। इसका जवाब उन्होंने यह दिया कि मैं उनसे पूछे लेती हूँ। मैंने ख़ुदा का वास्ता देकर उनका हाथ पकड़कर रोका। मगर मैं किसी तरह जाने पर राज़ी न हुई चुनान्चे उन्होंने जाकर कह दिया। मगर वहाँ तो सूरत ही दूसरी थी। मुमानी जान के सिर हो गये। शाम तक मारे ख़ुशामद और तक़ाज़ों के मुमानी जान ने मेरे नाक में दम कर दिया पर मैं न जाना चाहती थी, न गई।

दूसरे दिन तक़ाज़ा और सख़्त हुआ और मुमानी जान ने कुछ गम्भीर होकर कहा---"क्या बना बनाया खेल बिगाड़ेगी ! मैं उसे अब घर को भी तो निकाह किये बग़ैर न जाने दूँगी···तू नहीं गई और वह भाग खड़ा हुआ तो ?···उखड़ गया जमा जमाया तब कैसी होगी !

कहने को तो मैंने कह दिया कि अब मामला पक्का है लेकिन मैं कुछ सोच में पड़ गई। आख़िर में गई दोपहर को। किस तरह बढ़कर सलाम करके मेरा स्वागत किया है कि न पूछिये। मुझे शरमाते देखकर बोले---"अब शरमाती क्यों हो ? क्या क़सम नहीं खा चुका हूँ मुहब्बत की ?"

यह कहकर मेरा दाहिना हाथ अपनी आँखों से लगाया और मेरे देखते-देखते गर्म-गर्म आँसू उस पर से ढलकने लगे। मुझ पर इसका बहुत असर हुआ और मैंने घबराकर कहा—"आप क्यों परेशान हैं ?"

"तुम मुझे छोड़ोगी तो नहीं ?···यह दुनिया बड़ी धोखेबाज़ है···किसी की बात का एतबार नहीं।"

इतना कहा और रूमाल से मुँह छिपा लिया। मैं हैरान और परेशान रह गई। समझ में न आया कि क्या करना चाहिये। बुत की तरह बनी बैठी रही बल्कि मेरा अपना दिल भर आया। एकदम से रूमाल से मुँह पोंछकर कहा—"मैं बड़ा दग़ाबाज़ और झूठा हूँ, मगर क़सम खाकर कहता हूँ कि उम्र भर···और मरते दम तक मैं तुमसे बेवफ़ाई और दग़ाबाज़ी न करूँगा। और···ख़ुदा के वास्ते, अगर कहीं तुमने बेवफ़ाई की तो मैं मर जाऊँगा।"

अब इन बातों से इतनी संजीदगी (गम्भीरता) पैदा हो गई कि अपनी शर्म और लज्जा को जैसे विदा करके मैंने कहा— "मैं उम्र भर आपके क़दमों के साये में रहूँगी ।"

इसके जवाब में उन्होंने फिर निहायत ही संजीदगी से मेरा हाथ उठाकर अपनी आँखों से लगा लिया, और फिर उनकी वही हालत हो गई। मैं सन्नाटे में बैठी रही और वह इसी तरह मेरा हाथ आँखों से लगाये हुए बड़ी देर तक सुन्न बैठे रहे और इसके बाद बड़ी इज़्ज़त और एहतेराम (श्रद्धा) के साथ मेरा हाथ चूम-कर और बड़े ही दुखी स्वर में "खुदा हाफ़िज़" (ईश्वर रक्षक है) कहकर विदा किया।

मेरा यह हाल हो गया कि सीधे कोठरी में जाकर और तकिये में मुँह देकर इतना रोई हूँ कि बस कुछ न पूछिये। मुमानी जान भी परेशान हो गईं। मैंने उनसे कह दिया कि कुछ नहीं, कोई ख़ास बात नहीं है। और फिर उनको इतमीनान दिलाकर फिर ख़ूब भड़ास निकाली। मैं क्यों रो रही थी, यह मुझे नहीं मालूम, मगर मेरा मन अपने होनेवाले शौहर के प्रेम के भाव से प्रभावित होकर भर आया था।

× × ×

इसके दूसरे दिन फिर मिलने गई और मैंने देखा कि एक अजीब तबदीली हो गई है। आज वह रोई नहीं मगर आँखे भर-भर आती थीं। फिर अपनी मुहब्बत की हज़ारों क़समें खाई और अब मैंने भी सौगंध खा-खाकर उम्र भर की मुहब्बत और वफ़ादारी का एक़रार किया।

मैं जब वापस आई हूँ तो मेरा दिल सच्ची ख़ुशी और मुहब्बत से भरपूर था। एक बड़ी दौलत से दिल मालामाल था। मेरा यही जी चाहता था कि बस एक कोने में आँखें बन्द किये पड़ी रहूँ। निकाह से पहले यह मेरी आख़िरी मुलाक़ात थी।

तीसरा भाग

अब मैं क्या करूँ ?

अर्थात्

मेरी बाक़ी कहानी अपनी ही ज़बानी

पराजय

.ख़ुदा की पनाह !

उस समय मेरी क्या हालत थी, जब आपा (बहिन) ने मुझे ऐन मौक़े पर पकड़ा था और अपनी इज़्ज़त आबरू का वास्ता देकर कहा था कि .ख़ुदा के वास्ते मान जाओ और इस लड़की से शादी कर लो। मगर मैंने जवाब दिया था कि हरगिज़ नहीं, मैं कभी नहीं उस लड़की से शादी कर सकता ।

मैंने यह जवाब क्यों दिया था इसका कारण आप समझ ही गए होंगे, क्योंकि मैं मिस सिंह के प्रेम में पागल हो रहा था। वह बैठी रो रही थीं और .ख़ुशामद कर रही थीं कि .ख़ुदा के वास्ते मान जाओ, मेरा ही ख़याल करो और मैं कह रहा था कि मैं मजबूर हूँ, ऐसा नहीं कर सकता। मुँह से तो यह कह रहा था और दिल में अपने यह कह रहा था कि अब तो एक का हो चुका। मर जाऊँ तो भी मिस सिंह को न छोड़ूँगा। वह मेरी है और मैं उसका हूँ। वह पहली लड़की है जिसे देखते ही मैं बेताब हो गया था, वह पहली लड़की है जिसे देखते ही मैं स्वाभाविक रूप से उसकी ओर खिंचने लगा था, वह पहली लड़की है जिससे मेरी

दोस्ती हुई और बिना किसी चेष्टा के दोनों ओर प्रेम की आग भड़क उठी और दोनों एक दूसरे से अपना प्रेम प्रकट करते हुए डरते-झिझकते रहे। संसार की सारी सुन्दर स्त्रियाँ एक तरफ़ और मेरे लिए मिस सिंह एक तरफ़। मेरे लिए वह एक देवी है जिसने अपने सच्चे प्रेम से मेरे मन-मंदिर के द्वार खोल दिये। अतएव मैं हठ करने के लिए लाचार हो गया और मुँह से 'नहीं' शब्द जो निकला है तो बस पत्थर की लकीर बनकर रह गया। उन्होंने बहुत ज़ोर मारा पर मैं अपनी बात से न टला। सारांश यह कि थक हारकर और झक मारकर सिर्फ़ यह वादा लेकर चली गईं कि मैं एक दिन और रुक जाऊँ।

लेकिन एक बड़ी ही अजीब-ग़रीब मुसीबत का हाल सुनिये। इधर तो वह गई हैं कमरे से बाहर और इधर मैं दिल में यह कहता हुआ कि मर जाऊँगा तब भी मिस सिंह से अपना किया हुआ वादा न तोड़ूँगा, अपनी चारपाई पर आकर बैठा हूँ तो एक बिलकुल ही नई बात मालूम हुई। वह यह कि अब मैं मिस सिंह की सूरत-शक्ल पर जो ग़ौर करता हूँ तो बजाय मिस सिंह के उसी लड़की का चेहरा सामने आता है। दोबारा कोशिश की, तीसरी बार कोशिश की और लगातार कोशिश की, कि मिस सिंह का सुन्दर मुखड़ा सामने आ जाय, मगर हिर-फिर के वही चेहरा सामने आता था। बहुत यत्न किया, बहुत सिर मारा, बहुत झल्लाया, बहुत खिसियाया पर सफलता न होनी थी न हुई। तबियत उलझकर रह गई और ऐसा घबराया कि संदेह होने लगा कि मिस सिंह मिलेगी तो पहचान भी सकूँगा या नहीं, फिर मज़ा यह कि मिस सिंह तो सामने आ जाती थीं, पर चेहरा उसी लड़की का होता था, यानी वह शक्ल व सूरत सामने आती थी जो मैंने ख़्वाब में देखी थी, कि मिस सिंह तो है पर सूरत-

शक्ल दूसरी। सिवाय चेहरे के बाक़ी सब बातें मिस सिंह की-सी।

लेकिन इसका तात्कालिक परिणाम यह हुआ कि मिस सिंह की मुहब्बत का जादू और ज़ोर पकड़ गया। उसका प्रेम और तीव्र हो उठा! उसके लिये दिल जैसे दुखता-सा मालूम हुआ और दर्द से जैसे बेताब होकर मैंने कहा कि सिवाय मिस सिंह के मैं किसी से शादी कर ही नहीं सकता। उस लड़की का चेहरा मिस सिंह के धड़ से मिला होने का मैंने यह अर्थ निकाला कि मेरे लिए मिस सिंह उसी लड़की की तरह सुन्दर है। और यह बात भी बिलकुल सत्य थी कि मिस सिंह सिवाय रंग के और किसी भी बात में इस सुन्दरी से कम न थी। इसको मेरी नज़र की ग़लती नहीं कहना चाहिये बल्कि यह बात सौ फ़ीसदी सही थी कि मिस सिंह एक सुन्दर और बहुत ही सुन्दर लड़की थी और मैं सोलह आने उसी का और सिर्फ़ उसी का था।

× × × ×

लेकिन वह जो किसी ने कहा है कि औरत साकार जादू है तो शायद हर औरत के बारे में कहा है। आपा साहिबा नर्मी और लापरवाही का मन्त्र फूँककर गईं और वादा किया कि शादी के लिये किसी प्रकार का आग्रह न करेंगी और मैं स्वीकार करता हूँ कि यह वादा उन्होंने अच्छी तरह पूरा किया लेकिन यह बात कितनी आश्चर्यजनक है कि उनके एक ही दाँव में मैं किस तरह चारों खाने चित हो गया और उनके एक ही पाँसे में मैं अपनी सारी ज़िन्दगी हार गया। खुदा की पनाह! मैंने किस तरह उनकी हर बात पर शादी से इन्कार किया था और फिर किस तरह उन्होंने अपनी ननद की लड़की को मेरे साथ अकेली छोड़ दिया और वह लड़की जिसको मैं एक मासूम, नासमझ और नातजुर्बे-

कार लड़की समझता था और जिससे मैं महज़ मज़ाक़ में बातें कर रहा था, किस तरह उसने मुझे ज़हर दे दिया।

वह आई, मैं उससे बेतकल्लुफ़ी से मिला, मगर मैंने सवाल-जवाब शुरू कर दिये। ज़बरदस्ती उससे जवाब लिये और उसके जवाबों ने मुझे कहीं का न रक्खा। गुलाब जामुनवाला क़िस्सा, फिर ख़्वाबवाली बात, फिर गुलाब जामुनवाली घटना के बाद खुद उस पर क्या बीती, उसको मेरा किस तरह कई बार ख़्याल आया। फिर उसकी सूरत, उसकी शर्म व हया, रंग-रूप और ये सब बातें! न जाने इन बातों ने मेरे ऊपर क्या जादू कर दिया! ज़ालिम ने सही कुछ कह डाला, बस मानो तबाह कर दिया। कहाँ की मिस सिंह और कैसा वादा और कैसी मुहब्बत? तन बदन में एक आग-सी लगा दी। ग़रज़ थोड़ी ही देर बाद मुझे पागल कर के छोड़ गई। वह जा चुकी थी और मिस सिंह को याद करके मैं सचमुच तकलीफ़ से कराह रहा था। यह ख़्याल ही बेहद कष्ट-प्रद था कि मिस सिंह को मैंने धोखा दिया और सदमे और दुख के कारण दिल में जैसे दर्द-सा मालूम होता था और साथ ही यह डर मालूम होता था कि जिस तरह मैंने मिस सिंह को धोखा दिया है, अब कहीं यह मुझको धोखा न दे। मानव प्रकृति ही कुछ परिवर्तनशील और गुनाहगार मालूम हो रही थी।

जब तक घर से कोई कमांडर पहुँचे तब तक दो बार मैं उससे मिला। इन मुलाक़ातों ने मुझे और भी डुबो दिया। बिलकुल ही उसका होकर रह गया। दिल व दिमाग़ खो बैठा। मिस सिंह की मुहब्बत तो बड़ी चीज़ है उसका ख़्याल भी धुँधला पड़ गया।

शादी के बाद मुझे मालूम हुआ कि मुझे कितनी बड़ी पराजय हुई और यह कि औरत क्या चीज़ है। बीबी क्या चीज़ है! एक मीठा ज़हर है! एक बेकल जादू है! फिर पत्नी भी कैसी!...

एक स्वर्गीय स्वप्न का स्वप्न फल ! एक कल्पना की ज्योति, एक प्रेम, मुहब्बत और फ़रमाँबरदारी की जीती जागती मूर्ति ! तय यह था कि मैं नौकरी पर जाऊँगा, और उसको घर पर छोड़ जाऊँगा, लेकिन उसका चुपके से मेरे कान में यह कहना कि मुझे साथ ले चलो ।...अब सारी दुनिया एक तरफ़ है पर मैं मानता ही नहीं । सैकड़ों हीले-बहाने बनाये और साथ ले जाने पर मजबूर हो गया । यह निश्चय हुआ कि अपनी पत्नी की एक रिश्तेदार महिला को साथ लेकर नौकरी पर जाऊँगा । एक पड़ोसी को ख़ूब समझाकर ख़त लिख दिया कि एक अच्छा-सा मकान तलाश कर रखना ।

नई मुश्किल

पत्नी लेकर नौकरी पर जो पहुँचा हूँ तो एक बड़ी मुसीबत का सामना नज़र आया। इस बीच में मिस सिंह के बीसों ख़त आ चुके थे। मैं उसे एक मुख़्तसर-सा ख़त लिख चुका था कि घरेलू मामलों में फँसा हूँ और कहीं बाहर जा रहा हूँ। मैं जब .खुद ख़त लिखूँ तब जवाब देना। मगर जनाब वहाँ तो सूरत ही और थी। उसने दो-चार दिन का इन्तज़ार करके बड़ी बेचैनी पैदा करनेवाले ख़त लिखना शुरू कर दिये। यानी जैसे कि मैं उसको लिख रहा था या वह मुझको लिख रही थी और जैसे स्वभावतः उसको लिखने चाहिये थे। मैं उन ख़तों को पढ़कर बेकल-सा हो जाता। मजबूत होकर फिर यह करता कि ख़त आता तो पढ़ने की जगह उसे खोलकर सिर्फ़ सरसरी नज़र डालता और फाड़कर फेंक देता। और फेंकते ही जैसे मेरे दिल पर एक हथौड़ा-सा लगता। लपककर ख़त उठा लेता और उसको धीरे-धीरे पुर्जे-पुर्जे करता। पत्नी यह हरकत देखती तो मुझे गौर से देखती। आँखों में आँखें डालकर देखती रहती। मुस्कराकर कंपित स्वर में पूछती—"किसका ख़त था ?······ बड़े ख़फ़ा हो उससे।"

बस यह सुनते ही मेरा अजीब हाल हो जाता। वह न जाने क्या समझती होगी। मैं विचारों की उलझन में उसे देखता का देखता रह जाता, उसको गौर से देखकर मुस्कराकर कहता—"मैं बड़ा झूठा हूँ······बड़ा बेवफ़ा हूँ······देख लेना तुझे बड़ा धोखा दूँगा।"

यह सुनकर वह मारे हँसी के खिल जाती। और उसकी हँसी ? मुझे ऐसा मालूम होता कि उसकी गर्म-गर्म साँस प्रेम और मुहब्बत की एक महकती हुई तूफ़ानी रूह है !

× × ×

सारांश यह कि जब नौकरी पर पहुँचा तो ख्याल आया कि अब मिस सिंह से कैसे बनेगी। वह एक से एक बढ़-चढ़कर खत लिख रही थी और नौबत यहाँ तक पहुँच चुकी थी कि घर से खत लौटकर मुझे यहाँ मिल रहे थे। मैं क़स्बे में अपने को बिलकुल उसी तरह छिपाये फिर रहा था, जैसे कोई अपराधी शहर की गलियों और बाजारों में हर समय डरता रहता है कि कोई देखकर पुलीस में न ख़बर कर दे। मारे डर के जी चाहता था कि घर से न निकलूँ। हर घड़ी यह खटका लगा रहता था कि कोई यह न कह दे कि मेरे आने की खबर मिस सिंह को हो गई है और वह बुलाती हैं।

एक दिन परिस्थिति पर अच्छी तरह विचार किया और तय करके कि जल्दी से जल्दी यह मामला सुलझा लेना चाहिये यानी मिस सिंह को असिल बात बतला देनी चाहिये। ख़ूब सोचा-विचारा तो अपने ऊपर हँसी आई कि मैं ख़ाहमख़ाह डरता हूँ। आखिर कहना ही है एक दिन, तो कह क्यों न दूँ। इसमें सोचने-विचारने की क्या बात है। मुझे डर ही क्या है। अंत में एक दिन नौकर को ख़ूब समझा-बुझाकर कि असिल मामला न बतलाना उसे फ़ुलबूट दे दिये और एक ख़त मिस सिंह के नाम दे दिया जिसमें लिखा था कि मैं आज रात ही को आया हूँ और जल्दी तुमसे आकर मिलूँगा।

× × ×

मैं दिल को ख़ूब मजबूत करके मिस सिंह के यहाँ पहुँचा मगर उनको देखते ही मेरे होश गुम हो गये। मुझे देखते ही मारे ख़ुशी के उसका चेहरा दमकने लगा! आँखें मानों नाचने लगीं। चेहरा उसी तरह प्रसन्नता से खिल गया जैसे कभी उसे देखकर मेरा चेहरा खिल जाया करता था। ग़रज़ मुझे देखते ही अजीब हालत हो गई। झपटी वह मुझे लेने को। मैं इस प्रकार के तूफानी स्वागत के लिये बिलकुल तैयार न था। लेकिन जिस तरह भी बन पड़ा सामना किया। बड़े जोश और मुहब्बत के साथ उसने हाथ मिलाया, और फिर दूसरे हाथ से मुसाफेवाले हाथ को पकड़कर लेजाकर मुझे कमरे में बिठाया। अब मैंने देखा कि परिस्थिति कितनी नाजुक बल्कि खतरनाक है। भला यह कैसे मुमकिन था कि वह इतने दिन बाद अपने प्यारे मँगेतर से मिले और बेतकल्लुफ़ी नहीं बल्कि मुहब्बत से न मिले, यह कैसे मुमकिन था कि उसकी बातों, उसके हर एक अन्दाज़ से प्रेम न प्रगट हो? यह कैसे सम्भव था कि जब परस्पर एक दूसरे ने अपने दृढ़ प्रेम का विश्वास दिलाया हो तो वह 'डियर' और 'माई डियर' शब्द का प्रयोग न करे! इस शब्द के सुनते ही जैसे मेरे कान में भाला लगा। उसकी बेतकल्लुफ़ी स्वतंत्र प्रेम का प्रदर्शन था। और फिर आप ग़ौर कीजिये कि आख़िर उसे इन बातों के छिपाने की जरूरत ही क्या थी। वह मुझको अब अपना समझती थी, अपना समझकर लाई और अपना समझकर अब किस मुहब्बत से मेरी उङ्गलियों में अपनी उङ्गलियाँ फँसाकर दोनों हाथों को देखकर मुस्करा रही थी और अपना फ़ुलबूट देख रही थी। दरअसिल फ़ुलबूट का उसको बेहद शौक़ था। क्योंकि यहाँ इक्कों पर बैठने से उसके मोज़े खराब हो जाते थे। उसने जूतों को अब तक बिना देखे ज्यों का त्यों रक्खा रहने दिया था सोचा था कि मेरे सामने उसको ग़ौर से देखे और उपहार का

सच्चा आनन्द ले। उसने फ़ुलबूट के बायें पैर को अन्दर झाँक-कर देखा। फिर धीरे से मेरी उङ्गलियाँ छोड़कर दूसरे हाथ से जूते को सँभालकर अन्दर से देखा। और अपने सुन्दर मुखड़े पर कुछ शिकन डालकर और भी ग़ौर से देखा और फिर कहा—"यह किसने पहिना था ?"···फिर मेरी तरफ़ बढ़ाकर मुझे दिखाते हुए कहने लगी—"यह देखो, ऊपर से भी किनारा मुड़ा हुआ है। और यह देखो···यह देखो अस्तर कुछ उखड़-सा गया है।"

मैंने देखा कि उसे बहुत आश्चर्य है और साथ ही उसके साँवले चेहरे पर कुछ हलकी-सी उदासी भी छा गई है। उसने फिर पूछा—"यह किसने पहिना था ?"

अब बताइये कि मैं इसका क्या जवाब देता ? मैं भला कैसे असिल बात बतलाता कि उसको पहिनकर स्वयं मेरी श्रीमती जी कूदी-फाँदी थीं और यह उन्होंने खराब किया है! मैंने कुछ घबराकर गले को साफ़ किया। जवाब देने के बजाय सोचा कि लाओ इसी सिलसिले में असिल बात बतलाने की भूमिका बाँधूँ। उस समय मेरी क्या हालत थी यह न पूछिये। ऐसा मानसिक कष्ट शायद मुझे जीवन में और कभी नहीं हुआ था। जब मैंने इस तरह जवाब देने में कुछ देर की तो अब मानों पहली बार उसने मेरे चेहरे को ग़ौर से देखा। मेरी हालत अवश्य ही बिगड़ी हुई थी। वह मुझे देखकर ठिठककर रह गई। दर-असिल मुहब्बत के जोश में शायद अब तक उसने मेरी तरफ़ से होनेवाली सुस्ती और उपेक्षा भाव को महसूस ही न किया था। लेकिन अब जो उसने एकदम से ग़ौर से मेरी हालत देखी तो वह चौंक-सी पड़ी।

"यह क्या ?" उसने प्रेमपूर्ण घबड़ाहट से कहा—"मेरे प्यारे, इतना तुम क्यों उदास हो ?"

अब मेरी समझ में न आया कि किस तरह मना करूँ। लेकिन इसके पहले कि मैं कुछ सोच सकूँ, कंधे पर उसका हाथ पहुँच गया। वह झुकी और उसने अजीब स्वर में कहा—"तुम्हें शायद आराम की ज़रूरत है।" और यह कहती हुई वह मुझसे मिलकर आराम से मेरे पास बैठ गई। और अब मैंने निश्चय कर लिया कि भागूँ यहाँ से।

मैंने एकदम से चौंककर कहा—"माफ़ करना, मैं ज़रा इस वक्त परेशान हो गया हूँ। अब मैं शाम को आऊँगा। सख्त ज़रूरी काम था और मैं जल्दी में आया था। मुझे तुमसे मुफ़स्सिल बातें करनी हैं।"

मेरा अन्तिम वाक्य सुनकर जैसे वह झेंप गई। क्योंकि इस मुफ़स्सिल बात का मतलब वह वही समझी, जो समझना चाहिये था, यानी शादी की तारीख वग़ैरह तै करना। यद्यपि मेरा यह मतलब था कि उसे मैं परिस्थिति ने जो नया रूप धारण किया है वह बतला दूँ। मैंने उठने और जल्दी से जल्दी वहाँ से भागने की तैयारी की।

उसने कहा—"अच्छा'! मगर मेरा ख्याल था कि थोड़ी देर तुम आराम करते। ख़ैर······।"

मैं भी दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा और वह भी बढ़ी। दरवाज़े तक पहुँचते-पहुँचते उसने मेरे कंधे पर हाथ रख दिया था। और ठीक दरवाज़े पर मैंने कंधे पर हाथ का दबाव महसूस किया जैसे कि मुझे रोका या रोकना चाहा। तकल्लुफ़, तो तकल्लुफ़ है, परन्तु प्रेम तो प्रेम की रीति है। शिष्टाचार और सभ्यता के अस्तित्व को भी दुनिया में तस्लीम करना पड़ेगा, फिर साथ ही इसका भी क़ायल होना पड़ेगा कि मुसीबतें भी दुनिया में कोई चीज़ हैं। लेहाज़ा इन सारी बातों पर ग़ौर

कीजिये कि दरवाज़े पर विदा होते समय मैं नहीं कह सकता कि वह मुझसे लिपट गई या मैंने उसे गले लगा लिया। लेकिन सिवाय इसके कोई चारा ही नहीं था कि जैसे किसी से ईद नहीं मिलना चाहते मगर ज़बरदस्ती मिलना पड़ता है। अपनी समझ में दूर ही दूर से ईद मिलते हैं मगर दूसरा पूरे जोश और प्रेम से मिल लेता है। बस, अब जनाब एक तो मैं सिवाय अपनी चहेती बीवी के दुनिया भर के प्यारों और दुलारों से भागना चाहता था और फिर यहाँ मामला ही दूसरा था। इसीलिये ये शब्द मेरे लिये बहुत कष्टप्रद साबित हुए और मैं बेहद परेशान हुआ बल्कि बदहवासी छा गई। मिस सिंह भला मेरी परेशानी का कारण क्या जानती और क्या समझती और बहुत अच्छा हुआ कि उसने नहीं जाना। उसने मेरी हालत देखकर बड़े प्रेम और हमदर्दी से मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे ग़ौर से देखा। उसकी आँखों से अगाध प्रेम और असीम सहानुभूति प्रकट हो रही थी। इससे मुझे और भी तकलीफ़ पहुँची और मैं और भी बेकल हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि मेरी ख़ामोशी और परेशानी से उसे और भी उलझन हो गई। यह और भी ग़ज़ब हुआ। मेरी कमबख़्ती ही आ गई। दुर्भाग्य से उसने मेरी हालत जो एकदम बदली हुई देखी तो इसका दूसरा ही मतलब समझा। वह यह समझी (और क्यों न भमझती) कि इतने दिन बाद मैं उससे मिला हूँ···प्रेम के जोश और आवेग के कारण मैं अपने क़ाबू में नहीं हूं। उसने वास्तव में यही समझा और मैंने देखा कि सचमुच जैसे यह ख़्याल बिजली की तरह उसके दिमाग़ में कौंद गया, जिसकी झलक उसके चेहरे पर मुझे साफ़ नज़र आई।

अब आप उस दुखपूर्ण और मुश्किल दृश्य की कल्पना कीजिये कि जब उसने विश्वास कर लिया होगा कि उसके सामने

कुछ बोल न सकने और खो जाने का कारण उसके प्रेम का आवेग ही है, तब उसकी मुहब्बत का क्या हाल रहा होगा। वह आदर और प्रेम जो एक प्रेमी मँगेतर का हिस्सा है, जिससे तमाम बातें तय हो चुकी हैं, उस हिस्से से आखिर वह मुझे क्यों वंचित रखती? परिणाम यह हुआ कि उसके दिल पर पूरा असर हुआ। वह सहानुभूति की भावना से व्याकुल-सी हो गई। वह मुझसे सचमुच प्रेम करती थी, और क्यों न करती। जब हम लोग परस्पर एक दूसरे से न केवल सच्चे प्रेम का वादा कर चुके थे, बल्कि ज़िन्दगी भर के लिये एक दूसरे का जीवन साथी बनकर रहने का भी वचन दे चुके थे। अतएव उसने अत्यधिक प्रभावित होकर कहा—"मेरे प्यारे!" यह कहकर वह मेरे बिलकुल क़रीब हमदर्दी और मुहब्बत से कुछ परेशान होकर झुक गई। यहाँ तक कि उसकी साँस मेरी गरदन पर लगती हुई मुझे तकलीफ़ देने लगी। उसने अपना सिर मेरे कंधे पर रख दिया। दुनिया का नियम है कि प्रेम का जवाब प्रेम है, और हमदर्दी का जवाब हमदर्दी होता है। उपरोक्त वाक्य कहकर उसने मेरी पीठ पर अपना दाहिना हाथ रक्खा और मैंने देखा कि अब यह तकलीफ देनेवाला हाथ मेरे गले का हार बननेवाला है। मैंने कुछ घबराकर उसके सुन्दर मुखड़े को देखा और जैसे मेरे गोली-सी लगी। क्योंकि मैंने देखा कि उसका चेहरा प्रेम का केन्द्र बना है और उसकी पलकों पर प्रेमावेश और प्रेमी से मिलने की प्रसन्नता के कारण नमी आ गई है। आप स्वयं कल्पना कीजिये कि मैं कैसे घबराया होऊँगा। अब सिवाय इसके और क्या इलाज था कि बौखलाकर इस मुसीबत को ख़त्म करने के लिये मैं ज़रा ज़ोर से कहूँ—"पानी।"

यह कहकर मैं उठना चाहता ही था कि उसने अपना सिर मेरे कंधे पर से हटाया और इस भोलेपन से मेरी ओर देखा

कि मारे सदमे के मेरे दिल पर एक घूँसा-सा लगा······उसकी सुन्दर पलकों में मोती लटक रहे थे और हर बूँद में मुझे गंगा-यमुना दिखाई पड़ रही थीं।

इससे पहले कि मैं उठूँ, वह लपककर पानी भी ले आई। अब यह बताइये कि यह कैसे सम्भव था कि वह अपने प्रेमी मँगेतर को अपनी कोहनी से सहारा देकर या हाथ कंधे पर रख-कर ख़ुद पानी न पिलाती।

लेकिन मैं क़दम-क़दम पर हर बात की काट करने पर तुला बैठा था। अब यहां मुझे मजबूर होकर कुल्ली करने की आवश्यकता प्रकट करनी पड़ी और इस तरह बचकर कुल्ली करके बैठकर इतमीनान से पानी पिया। पानी पीने में सचमुच जैसे दिल को किसी ने सँभाल लिया। थोड़ी ताज़गी भी महसूस हुई। उसने पूछा—"प्यारे! तुम कैसे हो?"

भागने के उपायों पर विचार करते हुए मैंने गंभीर स्वर में उत्तर दिया—"मैं ठीक हूं।"

इसके जवाब में उसने मेरे सिर पर हाथ ले जाकर अपनी उँगलियों से मेरे बालों में प्रेम से कंघा करना शुरू किया। यही हमारा मामला समझ लीजिए। अतएव मिस सिंह से गले लगकर और चिक उठाकर जो भागा हूं तो सड़क पर मुड़कर मैंने देखा कि उसने खिड़की से सफ़ेद रूमाल हिलाया और मैं गरदन नीची करके बदहवास होकर जो भागा हूं तो घर पहुँच-कर दम लिया।

× × × ×

घर पहुँचा हूं तो अपनी प्यारी बीबी को इन्तज़ार में आँखें बिछाये हुये नहीं बल्कि साकार इन्तज़ार पाया। इतनी देर की जुदाई भी उसके लिए कठिन हो रही थी। गले से लगा लिया। थककर जैसे चारपाई पर गिर पड़ा। आँखें बन्द कर लीं।

मेरा मुँह खुला हुआ था और वह मेरे दाँतों को अपनी उँगली के नाखून से ख़ामोशी के साथ कट-कट करके बजा रही थी। मैं उसी तरह आँखें बन्द किये पड़ा रहा। आधी आँखें खोलकर देखा। उँगली में काट खानेवाला मज़ाक़ किया तो उसने झट से उँगली हटा ली। मैं तो किसी गहरी सोच में था और वह मेरे दाँतों पर उँगलियाँ मार रही थी। मैं आँखें बन्द किये हुए उँगली में काट खाने की बनावटी कोशिश कर रहा था।

बड़ी देर तक इसी तरह गुमसुम पड़ा रहा। यहाँ तक कि पत्नी की ज़िन्दा-दिली ने यह महसूस करने पर मजबूर कर दिया कि दुनिया में कोई चीज़ पत्नी भी है। उठा और उठकर मिस सिंह को ख़त लिखा। बहुत मुख्तसर कि मैं रात की गाड़ी से हफ़्ते भर के लिये जा रहा हूं। स्टेशन जाते वक़्त शायद मिलूँगा। बेहद मसरूफ हूं। सख़्त जल्दी में हूं। ख़त लिखकर नौकर को समझा दिया और पड़ रहा यह सोचकर कि हफ्ते बाद देखा जायगा।

× × × ×

दूसरे दिन पत्नी के सिर में दर्द हो गया और हलकी-सी हरारत हो गई। कोई बड़ी बात नहीं थी लेकिन सख़्त परेशान हो गया। पत्नी का अगर बाल दुखता तो मेरा दिल दुखता! हर-दम उसके पास बैठने और सेवा करने को जी चाहता। रात ही को पत्नी की तबियत ज्यादा ख़राब हो गई। सुबह बुख़ार और तेज़ हो गया और तकलीफ़ बहुत बढ़ गई। मैं सचमुच बहुत परेशान था और नतीजा यह हुआ कि दफ़्तर से दस दिन की छुट्टी ले ली। वैसे भी डर लग रहा था कि दफ्तर जाते वक्त कहीं मिस सिंह न मिल जाय। अब इस तरफ़ से भी इतमी-नान हो गया।

भांडा कैसे फूटा ?

पत्नी की बीमारी की उलझन में यह भी भूल गया कि मिस सिंह को किस तरह असली बात बताऊँ। ख़त लिखने कई बार बैठा मगर हिम्मत न पड़ी। फिर पत्नी की बीमारी की परेशानी में तो ख़्याल ही नहीं रहा। मगर इस बीमारी के सिलसिले में एक अजीब मामला पेश आया।

मेरी पत्नी की रिश्तेदार जो साथ थीं, न जाने किस वहम में गिरफ़्तार थीं। हक़ीम का इलाज हो रहा था और वह आग्रह कर रही थीं कि लेडी डाक्टर को बुलाओ। यानी मिस सिंह को। पहले तो मैं समझा नहीं लेकिन बाद में पत्नी ने बताया कि वह किस वहम में गिरफ्तार हैं। मैंने टाल दिया मगर वह तो जैसे हठ पर आ गईं। अब मामले को देखते हुए आप स्वयं सोचें कि भला मिस सिंह को मैं कैसे बुला सकता था। मगर वह थीं कि जैसे उन्हें ज़िद हो गई थी। और अन्त में यहाँ तक नौबत पहुँची कि उन्होंने साफ़-साफ़ कह दिया कि, अगर मैंने न बुलवाया तो वह ख़ुद बुलवा लेंगी।

अब जाहिर है कि मैं कैसा घबराया हो ऊँगा। सख़्त परेशान हुआ। पत्नी ने मजबूर होकर कहा कि चूँकि मजबूरी है लेहाज़ा क्या नुक्सान है बुलवा लो। अब मेरी और भी जान मुसीबत में पड़ी। न तो यह कह सकता हूं कि असिल मामला क्या है और न बुलवा सकता हूं। सिवाय इसके कि यही कहूं कि उसका बुलवाना बिलकुल बेकार है, जिसका यह जवाब मिला कि होने दो बेकार, कोई नुक्सान तो है नहीं। ज़रूर बुलवाया जायगा। आखिर यह भी कोई ज़िद है ?

सारांश यह कि जब मैंने देखा कि अब मेरी न चलेगी तो मैंने एक नया बहाना बनाया। मैंने यह कहा कि डाक्टर साहब से मेरी बेहद दोस्ती है । और उनसे और यहाँ की डाक्टरनी से अस्पताल के मामले में दुश्मनी हो गई है इसलिए मुझे डर है कि कहीं डाक्टरनी ठीक इलाज न करे और कोई नुकसान की सूरत पैदा हो। मगर इस बहाने का भी उन पर कोई असर न हुआ और उन्होंने कह दिया कि चाहे कुछ भी हो हम डाक्टरनी को ज़रूर बुलवायेंगे । ऐसा ही है तो इलाज न कराएँगे मगर दिखाएँगे ज़रूर।

जब मैंने देखा कि अब कोई चारा नहीं तो दूसरी तरकीब सोची। वह यह कि मैंने कहा कि यह करो कि डाक्टरनी को बुलवाओ, मगर यह न कहना कि किसके यहाँ बुलवाया है, यानी उसको इस बात का पता न चले कि यह किसकी पत्नी है जिसमें कि उसकी ओर से कोई नुक्सान पहुँचने की आशंका ही न रहे। अतएव यह प्रस्ताव मेरी पत्नी की रिश्तेदार महिला को पसन्द आया। उन्होंने कहा कि यही किया जायगा बल्कि यह भी कहा कि यह ज़रूरी है कि उसे पता न चलने पाये। अन्त में निश्चय हुआ कि एक दूसरे आदमी से कहकर डाक्टरनी को बुलवाया जाय। मिस सिंह चूँकि यह जानती ही न थी कि मैंने घर बदल दिया है इसलिए अब मुझे कोई डर न रहा कि उसको पता चल जायगा। एक दूसरे आदमी को कुल मामला समझाकर मिस सिंह को बुलाने के लिये भेज दिया गया।

× × × ×

मैं एक बराबर वाले मकान के कोठे से छिपकर देख रहा था। मैंने देखा कि मिस सिंह का इक्का आया । मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। मै ख़ुदा से दुआ माँग रहा था कि भेद

कहीं प्रकट न हो जाय, यद्यपि इस फ़िक्र ही में था कि मिस सिंह को असिल मामला बताना है। वह इक्के पर से उतरी और मकान में गई। इक्केवाले ने एक किनारे गली में सामने ही इक्का खड़ा कर दिया।

मैं अब दो अत्यधिक बकवादी आदमियों से उलटी-सीधी बातों में लग गया, मगर ध्यान उसी तरफ़ था कि मिस सिंह गई या है।

जब ज़रा देर हो गई तो मैंने झाँककर इक्के को देखा और मालूम हुआ कि मिस सिंह देखकर वापस गई। अब मैं बातों में लगा हुआ था और यह आशा कर रहा था कि नौकरानी घर से बुलाने आती होगी बल्कि चलने को तैयार ही खड़ा था। इतने में एक आदमी पानी भरकर बाहर से आ रहा था। दो फेरे सामने के कुएँ के कर चुका था। मैंने उससे पूछा कि क्या डाक्टरनी साहिबा गईं? तो उसने जवाब दिया—"जी हाँ, गईं।" कुआँ सामने ही था, और इक्का कुएँ से कुछ दूर न था, और यह आदमी आते-जाते देख ही रहा था। फिर मैं ख़ुद देख चुका था कि इक्का नहीं है इसलिए मुझे संदेह भी नहीं था कि मिस सिंह नहीं गईं। हालाँकि मिस सिंह घर में थी और इक्के-वाला घोड़े को धूप से बचाने के लिए या फिर गपशप करने के लिए इक्के को बराबरवाली गली में ले गया था और वहाँ एक दूकान पर बैठा हुक्का पी रहा था।

अब अन्दर की सुनिये! मिस सिंह ने मेरी पत्नी को अच्छी तरह देखा। और फ़स्ली बुखार बतलाया, लेकिन मेरी पत्नी की रिश्तेदार महिला ने न जाने मिस सिंह को क्या सिखाया-पढ़ाया कि उसने मेरी पत्नी से कुछ प्रश्न किये और उन प्रश्नों का जब मेरी पत्नी ने कोई उत्तर न दिया तो उसने कहा कि इनके पति

को बुलवाओ ताकि मैं उनसे कुछ पूछ ताछ कर लूँ। यद्यपि यह पहले से निश्चय हो चुका था कि उसको पता न चले कि वह मेरे घर और वह भी मेरी पत्नी को देखने आई है। लेकिन अब उन्होंने यह तय कर लिया कि वे मेरी पत्नी का इलाज मिस सिंह से कराएगी नहीं और सिर्फ दिखाना और उसकी राय जानना है इसलिये मिस सिंह को मेरे बारे में मालूम हो जाने में कोई हर्ज नहीं अतः मिस सिंह ने कहा कि मुझे बुला लाए।

कभी-कभी घटनाएँ और संयोग इस विचित्र ढंग से उत्पन्न होते और उलझते हैं कि बस देखते रहिए। मैं स्वयं ही घर जाने के लिए उठ खड़ा हुआ था और जा ही रहा था मगर दो आदमियों से बहस में उलझा हुआ था इतने में नौकरानी मुझे बुलाने आई। मेरे दुर्भाग्य से वह शर्मीली बहुत थी, अतः दूर से दरवाजे ही पर खड़े होकर मुझे आवाजें दी होंगी जो मैंने नहीं सुनी। यहाँ तक कि एक दूसरे आदमी ने कहा कि साहब नौकरानी आपको बुला रही है। मैंने नौकरानी की तरफ़ देखा और कहा कि तू चल मैं अभी आया। इतने में वह महाशय जिनसे बहस हो रही थी, अपने पक्ष को सही सिद्ध करने के लिए एक किताब निकाल लाए और उसको दिखलाकर मुझसे जवाब माँगने लगे। मैंने किताब देखी और जल्दी में यह कहकर कि आप इसका अर्थ समझे नहीं, उन्हें वहीं बड़बड़ाता छोड़कर मैं अपने घर पहुँचा।

× × ×

मैं बेतकल्लुफ़ और बिना किसी प्रकार का ख़याल किये हुए अन्दर पहुँचा जहाँ नौकरानी ने जाकर पहले ही कह रखा था कि मियाँ आते हैं। सारांश यह कि उधर मिस सिंह रोगिणी के पति के इन्तज़ार में और इधर मैं बिलकुल बेख़बर होकर घर में दाख़िल हुआ।

मेरी पत्नी का पलंग दालान में था। उसपर मक्खियों से बचने के लिए मच्छरदानी लगी हुई थी। कुछ दालान के दर का चौड़ा खम्भा था और कुछ मिस सिंह की कुरसी आड़ में थी भी। परिणाम यह हुआ कि मिस सिंह की उपस्थिति का मुझे सन्देह तक न हुआ। यहाँ तक कि मैंने दालान में पहुँचकर जैसे एकदम से मिस सिंह को देखा!......मैंने उसको और उसने मुझे।

दोनों पर जैसे आश्चर्य और हैरानी की बिजली गिरी। लेकिन उस पर शायद सदमे का असर ज़्यादा हुआ। इधर मैं चौंककर भौंचक्का-सा रह गया और उधर वह कुरसी पर मुझे देखकर उछल-सी पड़ी। इधर मैं एक झटका खाकर सँभला हूँ और उधर उसने अपने को सँभालने में असाधारण धैर्य और साहस का परिचय दिया। अपने मुँह से आश्चर्य के कारण 'अरे' के शब्द को रोकने में उसने कैसे सफलता प्राप्त की यह मैं शब्दों में नहीं बतला सकता। अपने को सँभालते हुए उसने एक नज़र तो मुझ पर डाली और दूसरी मेरी पत्नी पर। और साथ ही अपने को बहुत सँभाल लेने पर भी उसके हाथ से उसका बेग छूट पड़ा, पर उसने तुरन्त झुककर उठा लिया। रूमाल से बड़े धैर्य के साथ मुँह पोंछा और अब उसका साहस और हिम्मत देखिये कि उसने मुझसे आँखों में आँखें डालकर अँगरेजी में मेरी पत्नी के बारे में कुछ सवाल किया। मैंने निगाहें नीची करके जवाब दिया कि "हाँ!"

बस इससे अधिक उसको पूछने की ज़रूरत ही न थी। उसने मेरी ओर देखकर सिर हिलाकर कहा—"आप फ़िक्र न करें। सिर्फ़ फ़सली बुखार है। मैं अस्पताल से दवा के साथ नुसखा भेजती हूँ। मेरे साथ आदमी कर दीजिये।"

यह कहकर वह चलने के लिये उठी। मेरी पत्नी की रिश्तेदार महिला ने एक थाली में चार रुपया फ़ीस के रखकर पेश किये तो उसने धन्यवाद के साथ एक इलायची ले ली और सलाम करके तेज़ी से यह जा वह जा।

× × ×

मैं मिस सिंह को जाता हुए देखता रहा। न उसने मुझे सलाम किया और न मैंने सलाम किया। और न विदा करने गया बल्कि उठा तक नहीं।

मगर अब जो मैं उन महिला की तरफ़ देखता हूँ तो उनका चेहरा देखकर मुझे नज़र नीची करनी पड़ी। और फिर पत्नी की ओर देखा तो आह!......पहली बार अपने जीवन में मैंने देखा कि वह जिसके लिये मैं जान तक देने को तैयार रहता हूँ! मेरा दिल जैसे कट गया। एक बर्छी-सी सदमे की कलेजे को चीर कर दिल को छेदती हुई निकल गई। या खुदा। मैं अपनी प्यारी पत्नी को कितना चाहता हूँ। न बयान करने के लिये शब्द मिल सकते हैं, और न कलम में इतनी शक्ति है। सारांश यह कि मेरा दिल मसल गया और मैं बेचैन होकर उसकी तरफ़ बढ़ा। इस तरह कि लाचार होकर मेरी पत्नी की रिश्तेदार महिला वहाँ से चली गई।

"मेरी जान!" मैंने मसहरी का परदा उठाते हुए कहा—"यह तुम रोती क्यों हो?"

उसने रोते हुए कहा—".फुलबूट........"

"अरे!" मैंने घबड़ाकर कहा—"ज़ालिम क्या मेरी जान लेगी? मैं सब बताता हूँ। अभी......अभी......"

यह कहकर मैंने स्वीकार किया कि यह वही और बेशक वही फ़ुलबूट है जिन्हें तुमने पहिनकर यह तमाम मुसीबत जोत रक्खी है और सचमुच मैंने टाल दिया। और तुमको झूठ बताया

था कि फ़ुलबूट किसी और ने मँगाये हैं। यह कहकर 'अ' से लेकर 'ज्ञ' तक का पूरा का पूरा किस्सा उसे सुना दिया और बताया कि किस तरह यह तुमने स्वप्नों में और बाद में स्वयं मेरी ज़िन्दगी में आकर यह परिस्थिति उत्पन्न कर दी और फिर अब रोती हो। हालाँकि रोना और सिर फोड़ना चाहिये मुझे।

चूँकि मैंने पूरी की पूरी कहानी उस विचित्र स्वप्न के विवरण सहित अक्षर-अक्षर सच सुना दी और चूँकि दिल को दिल से राह होती है और वह स्वयं जानती थी कि मैं उससे कितना अधिक प्रेम करता हूँ और उसके ऊपर जान दे रहा हूँ इसलिये कोई कारण नहीं था कि वह मुझे झूठा समझती, अतः मेरी लाचारी और मजबूरी का विश्वास कर लेने के बाद भी उसे मेरी मोहब्बत पर तो सन्देह न हुआ लेकिन उसे हार्दिक शान्ति कैसे प्राप्त हो सकती थी। अब वह मुझे तरकीबें बतलाने लगी। उसके काले रंग और उसकी कुरूपता पर ख़ामखाह और ग़लत-सलत एतराज़ किये और अन्तिम उपाय यह बताया कि मैं नौकरी छोड़कर तुरन्त घर चला चलूँ।

मैं अभी इसी बातचीत में लगा था कि मिस सिंह का बहुत ही संक्षिप्त किन्तु अर्थपूर्ण रुक्क़ा आया। उसने लिखा था मुझसे अभी और तुरन्त आकर मिलो नहीं तो मैं खुद आकर ले जाऊँगी।

पत्नी ने जो यह देखा तो मुझे सचमुच पकड़ लिया कि मैं हरगिज़ हरगिज़ न जाने दूँगी। अब मैं लाख समझाता हूँ कि भली मानुस तू मुझे छोड़ दे और तसल्ली देता हूँ पर उसकी समझ में नहीं आता। मैं कहता हूँ कि वह खुद आ जायगी और पूरा झगड़ा खड़ा हो जायगा तो वह जवाब देती है कि वह आए तो उसे निकलवा देना दरवाज़ा बन्द करवा देना, पर जाओ मत। यह भला कैसे मुमकिन था। जिस तरह भी बन पड़ा क़समें

खाईं, तसल्ली दी, दिलासा दिया, पर फिर भी उसे रोता पीटता छोड़कर चला। एकदम से वह झपटकर उठी और रोते हुए उसने मुझे याद दिलाया कि हम दोनों ने एक दूसरे से वफ़ादारी और मोहब्बत की क़सम खाई है। उसके सिर पर हाथ रखकर मैंने फिर क़सम खाई और मिस सिंह के घर रवाना हुआ।

दरअसिल अब मुझे मालूम हुआ कि लोग जो कहते हैं कि भाँडा फूट गया, तो इसका क्या मतलब है। दरअसिल भेद प्रकट होने और भाँडा फूटने में ज़मीन और आस्मान का फ़र्क़ है।

क्रुद्ध रूप

बेकसी ?......बेबसी...दुख .की तस्वीर......सरलता... गंभीरता...और औरत का तेज...... ये ऐसी चीजें हैं कि कम से कम किसी एक समय इकट्ठा कम दिखाई देती हैं लेकिन मैंने सचमुच देखीं और साथ ही सौंदर्य का क्रुद्ध रूप ?

× × ×

काँपते हाथों से मैंने मिस सिंह के कमरे की चिक उठाई। ऐसा मालूम हो रहा था कि मैं एक अपराधी हूँ और साकार प्रकोप का सामना है।

मैं चिक उठाकर अन्दर दाखिल हुआ और एक गंभीर वेकार (तेज) के साथ मिस सिंह खड़ी हो गई। एक नजर मैंने उसके स्वर्गीय सौंदर्य पर डाली और देखा कि उसके भोले चेहरे पर एक तरफ दुःख और पीड़ा के भाव हैं तो दूसरी ओर एक खास तेज और गंभीरता के भाव झलक रहे हैं। और इन दोनों भावों के बीच ऐसा जान पड़ता है कि उसका बेऐब और सुन्दर चेहरा क्रुद्ध सौंदर्य के भीषण भावों को दबाए हुए है। उसको देखते ही मुझे मालूम हो गया कि इस शान्त बादल के भीतर किस तरह जोश और गुस्से का तूफान बन्द है। वह साकार अभिमान था यद्यपि उसके अभिमान को बुरी तरह कुचला गया था। यह जखमी शेखी मुझे बचने का मौक़ा देगी या अपने क्रोध की ज्वाला में मुझे इसी क्षण भस्म कर देगी ? यह एक सवाल था जो मिस सिंह के दुखी और गंभीर चेहरे को देख मेरे दिल में अचानक पैदा हुआ।

No..........

मुझे ऐसा लगा जैसे एक व्यंगमय बर्छी मेरे दिल में लगी जब उसने मेरे सलाम का जवाब दिया। बिना किसी क़िस्म के तकल्लुफ़ के वह बैठ गई और मैं भी बैठ गया। अब उसने मेरी तरफ ग़ौर से देखा।

यहाँ उन लोगों का जिक्र नहीं जो बाज़ारू औरतों की ज़हर भरी और गुस्से भरी नज़रें देखे हुए हैं और अपनी समझ में खुद को एक अनुभवी समझे हुए हैं, नारी-विज्ञान के विशेषज्ञ बने हुए हैं यद्यपि उन्होंने वे आँखे देखी ही नहीं जिनमें सतीत्व या कुँवरापन की धार दी हुई है! वह आँख जिसकी एक नज़र से पत्थर फट पड़ता है। वह आँख जिसमें से आँसू अगर फ़ौलाद पर गिरता है तो उसे तोड़ता हुआ निकल जाता है। अब मेरी आँखें ऐसी ही आँखों से चार हुईं।

मैं दरअसिल उस ख़याल में था कि वाक़या शुरू से आखिर तक सच-सच और सही बयान कर दूँ। मजबूरी ज़ाहिर कर दूँगा, अपनी गलती तसलीम कर लूंगा और माफ़ी माँग लूँगा।

अब न तो मैं कुछ बोला और न वह कुछ बोली। कई बार उसने नज़र उठाकर देखा फिर नज़रें नीची कर लीं। मैं ग़ौर से उसकी तरफ़ देख रहा था। जब उसकी नज़र मेरी तरफ़ उठती तो मुक़ाबले की हिम्मत न होने की वजह से मेरी आँखें आप ही आप नीची हो जातीं। सारांश यह कि कई बार उसने मुझे देखा। मैं उसे ग़ौर से देख रहा था कि मेरे देखते देखते उसका सुन्दर चेहरा कुछ रंग बदलता मालूम दिया। ऐसा मालूम हुआ जैसे जज़बात (भावनायें) एक बारीक परदे की आड़ में करवटें ले रहे हैं।.... एकदम से चेहरे के सुन्दर आईने पर जैसे ग़म की घटायें उमड़ कर आ गईं। एक कँपकँपी-सी पैदा हुई और वह आँसू जो ज़बर-दस्ती रोके जा रहे थे ऐसे गिरे कि मालूम हुआ मोतियों की लड़ी टूट पड़ी।......उसने तेज़ी से अपना मुँह रूमाल से छिपा

लिया और वह बिना रोए या सिसकी लिये रो नहीं रही थी, बल्कि आँसू बहा रही थी।

मेरी हालत ईर्ष्या के योग्य नहीं, बल्कि अविश्वास के योग्य थी। मैं सख़्त घबरा रहा था कि मुझे क्या करना चाहिये। उसको बढ़कर तसल्ली देने का अब मेरा उसका कोई रिश्ता न रहा था। लाचार हो मैं उसी तरह बैठा देखता रहा। जब उसने अपने ग़म का पहला बुखार निकाल लिया तो जैसे उसका जी कुछ हलका हुआ और उसने अपना चेहरा रूमाल से पोंछ कर मेरी तरफ़ देखा.........और मैंने दुख का साकार रूप देखा।...... मेरा दिल कट गया। क़लम में ताक़त नहीं जो लिख सके कि उसकी हालत कितनी दयाजनक थी।......लेकिन साथ ही एक क्रुद्ध सरलता......ग़ज़बनाक मासूमियत चेहरे पर काँप रही थी।

मैंने हिम्मत करके कहा—"मिस सिंह!......वाक़ई मुझसे बड़ी ग़लती हो गई......माफ़ कर दो।"

जवाब में वह बहुत गम्भीर बनकर अपनी जगह से उठी और करीब आकर कुरसी पर बैठ गई और बड़े इतमीनान से मुझसे पूछा—"वह तुम्हारी बीबी है?"

मैंने जवाब में गर्दन नीची कर ली।

उसने कहा—"तुमने मुझे आख़िर धोखा क्यों दिया? तुमने अपने ख़तों में मुझे क्या लिखा था? क्या तुमने मुझसे मुहब्बत नहीं की थी!...क्या तुमने नहीं लिखा कि हमारे और तुम्हारे तआल्लुक़ात का ख़ुदा ख़ुद गवाह है?"

और यह कहकर उसने अपनी जेब से मेरा वह खत निकाल-कर दिखलाया जिसमें मैंने उसे लिखा था कि, "हम दोनों अब ख़ुदा के सामने मियाँ बीबी हैं......तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूँ।"

मैंने अब मिस सिंह को ग़ौर से देखा। सरलता की जगह अब उसके चेहरे पर ग़ुस्से की झलक थी। अतः मैंने बड़ी नर्मी से कहा—"पहले मेरी भी तो सुन लो।"

"मैंने सुन लिया।" वह व्यंगपूर्ण स्वर में बोली—"सब सुन लिया मैंने...जानती हूँ कि मैं बदसूरत हूँ और वह मुझसे हज़ार दरजा ख़ूबसूरत है। और इसी वजह से तुमने मुझे छोड़ दिया......तुमने मुझसे वादा किया और अब दूसरी के हो गए......मगर नहीं।" उसने एकदम से जैसे बिखर कर पलटा खाया—"मगर नहीं......नामुमकिन है...।" बहुत ज़ोर से उसने चीखकर और घबराकर कहा।

उसी हिसाब से मैं परेशान होकर बोला—"मगर सुनो तो।"

वह जैसे गरजकर बोली—"मैं तुमको नहीं छोड़ सकती... मज़ाक नहीं है। तुमने मेरी सख़्त बेइज्जती की......मैं तुमको हरगिज़ नहीं छोड़ूँगी। तुम मेरे हो......यह देखो।" यह कहकर उसने ख़त की इबारत पर उँगली रक्खी।

मैंने उसकी तरफ़ ग़ौर से देखा। उसके स्वर में न सिर्फ़ दर्द की कसक थी बल्कि एक ज़ोर था....उसके शब्दों में इतना ज़ोर था कि मुझे दिल में कहना पड़ा—ऐ औरत, तेरा नाम शहज़ोरी है!"

मगर शायद वह ग़लती पर थी जो इतने दावे और ज़ोर के साथ कह रही थी कि मैं तुमको हरगिज़ नहीं छोड़ूँगी। मैंने बड़ी ही नम्रता और गंभीरता के साथ उसे इतमीनान दिलाकर कहा—"मैं तुमसे अपना क़िस्सा बयान करना चाहता हूँ। ज़रा इतमीनान से सुनो और ख़ुद फ़ैसला करो। तुम ख़ुद फ़ैसला करना।"

ग़रज़ इस तरह मैंने उसको रोका और अपना क़िस्सा शुरू किया। गुलाब जामुन वाली घटना से मैंने अपना क़िस्सा उठाया और जब से अब तक की सारी घटनाएँ, स्वप्न वाली घटना

सहित अक्षरशः सच-सच उसको सुनाई। उसने क़िस्से को बड़े ग़ौर से सुना और खास तौर से स्वप्न के उस हिस्से को जहाँ मैंने बताया कि मैंने अपनी पत्नी को तुम्हारे भेष में ख़्वाब में देखा। मैंने ख़्वाब का वर्णन इतने विस्तार से किया कि वह मुग्ध होकर सुनती रही और मैंने देखा कि उसके चेहरे पर आश्चर्य के भाव प्रकट हुए। सारांश यह कि उसने मेरा क़िस्सा शुरू से आखिर तक बड़े ग़ौर से सुना। सुनने के बाद निहायत संजीदगी से मेरी आँखों में आँखें डाल कर देखा। बहुत ग़ौर से देखा... और फिर जैसे कोई हुक्म देता है एक अजीब आदेशात्मक स्वर में कहा—"तुम उसको छोड़ दो। तुम्हारे दिल में मेरे लिये अब भी जगह है। तुम उसको छोड़ दो (कुछ तेज़ होकर) अभी छोड़ दो...अभी।"

उसके ये वाक्य मुझे ऐसे लगे जैसे किसी ने मेरे दिल पर एक घूँसा मारा हो! मुझे बहुत बुरा लगा और यह बात सुनकर मेरा जी जल गया। मैंने बुरा मानकर कहा—"मैं उसे नहीं छोड़ सकता।"

मेरे कड़े स्वर ने उसे बहुत गहरी चोट पहुँचाई। उसने दर्द भरे स्वर में कहा "क्यों नहीं छोड़ सकते?....हाँ मैं जानती हूँ... तुम्हारे यहाँ महर का झगड़ा होता है। ख़ुदावन्द मसीह की क़सम मैं अदा कर दूँगी...जितना भी होगा मैं दे दूँगी।"

यह फ़ज़ूल बातें सुनकर मैं जल-भुन गया। फिर बुरा मानकर कड़े स्वर में कहा—"मेहरबानी करके ऐसी बातें न करो। मैं उसको हरगिज़ नहीं छोड़ सकता।"

"और मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती।" उसने चिल्लाकर कहा और मेरा हाथ ऐसे पकड़ा कि मैं सचमुच चौंक पड़ा...उसने फिर बड़े ज़ोर-शोर से उसी तरह कहा—"मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती......नहीं जाने दूँगी।"

मेरा हाथ उसकी गिरफ़्त में था और मज़बूती से पकड़े हुए वह ग़ुस्से में भरी निगाहों से मुझे देख रही थी। क्या मैं हिम्मत कर सकता था कि हाथ छुड़ा लूँ या कह सकूँ कि भला तुम मुझे कैसे नहीं छोड़ोगी ? हरगिज़ नहीं। यह नामुमकिन था।

मैं बेहद घबराया। अपने को सँभालते हुए मैंने कहा—"बच्चों की-सी बातें मत करो। हम दोनों समझदार हैं। ग़ुस्से या जल्दबाज़ी से कोई खास फ़ायदा नहीं होगा। असलियत फिर असलियत है और इसको देखते हुए हमें कोई समझौता करना चाहिये। समझ से काम लेना चाहिये, अक़्ल से काम लेना चाहिये, सुलह और समझौते से काम लेना चाहिये। जल्दी और तेज़ी से कोई फ़ायदा नहीं पहुँचेगा।"

वह बोली—"सुलह और समझौता ?"

मैंने कहा—"हाँ।"

"समझौता ?..." उसने कुछ रुककर कहा—"मेरी अक़्ल ठिकाने नहीं है। मगर हाँ, मैं तैयार हूँ। तुम बताओ तदबीर। बताओ कि मुझे क्या करना चाहिये ?"

मैंने कहा—"तुमको यह चाहिये कि मेरा क़ुसूर माफ़ कर दो। बेशक मुझसे खता हुई।"

"मैंने माफ़ कर दिया।" वह बोली—"लेकिन फिर इसके बाद क्या हो ?"

मैंने कुछ ख़ुश होकर कहा—"तुमने माफ किया अब मैं तुम्हारा एहसान न भूलूँगा। तुम मुझे अपना बेहतरीन दोस्त समझो। वैसा ही दोस्ती का ताअल्लुक़ रक्खो। मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं हमेशा तुम्हारा सच्चा और वफ़ादार दोस्त रहूँगा।"

"अरे ! अरे !!...यह तुम क्या कह रहे हो ?" मिस सिंह चकित होकर बोली—"दोस्ती ?...शायद तुम्हें नहीं मालूम कि

मुझे अँगरेज़ों की हर एक चीज़ से नफ़रत है सिवाय उनके मज़हब के। इसीलिये मैं इस दोस्ती का मतलब नहीं समझी। और फिर मेरा तुम्हारा दोस्ती का वादा तो था नहीं। यह देखो...." उसने फिर खत की इबारत मेरे सामने की।

मैंने कहा—"मैं तुम्हारा बेहतरीन दोस्त रहूँगा।"

वह बोली—"फिर वही घृणित अँगरेज़ी मुहावरा। इसका यही मतलब है न कि एक स्वार्थी दोस्त से ज्यादा मेरे लिये तुम कुछ और नहीं हो सकते?...और फिर इस वादे को क्या करूँ जो तुम्हारे इस ख़त में मौजूद है?...मैं फिर कहती हूँ कि मैं हिन्दुस्तानी हूँ...खालिस हिन्दुस्तानी...अंगरेजिन नहीं हूँ और न मेरे यहाँ यह होता आया है कि आज एक की कल दूसरे की. क्या तुम्हारा यह मतलब है कि मैं तुम्हारे वादे को भूलकर किसी और से प्रेम का ढोंग रचाऊँ या शादी करूँ?"

उधर वह जवाब का इन्तज़ार करने लगी और इधर मैं अत्यन्त गंभीरता से यह कहने को तैयार हुआ कि हाँ यही अच्छा होगा। लेकिन इसके पहले कि मैं कुछ कह सकूँ उसको मेरे दिल की बात शायद मालूम हो गई। आँखें फाड़कर वह एकदम से चौंक पड़ी और बोली—"हैं, हैं!....ख़ुदा के वास्ते, खबरदार जो कोई लफ़्ज़ बेसमझे-बूझे मुँह से निकाला! वैसे ही तुमने मुझे क्या कम ज़लील किया है जो अब..."

मैं कहते-कहते रुक गया। मेरे चुप रहने पर वह बोली—"अच्छा तुम एक बात बताओ।"

"वह क्या?"

"सच-सच कहना, तुम मुझसे मिलने से पहले जानते थे कि प्रेम या मुहब्बत क्या चीज़ होती है!"

मैंने सच-सच कहा—"बिलकुल नहीं।"

वह संतुष्ट होकर बोली—"यही मेरा हाल था। मेरे लिये दुनिया के मर्द मामूली इन्सान थे। अच्छा अब एक बात और बताओ कि तुम्हें उम्र भर में सबसे पहले किस लड़की से मुहब्बत पैदा हुई?"

या मेरे अल्लाह! मैं इस सवाल से कुछ परेशान सा हो गया। सच मुँह से निकलना मुश्किल था, झूठ बोल न सकता था। मुझे सोच में देखकर कुछ विजयी स्वर में वह आँखें फाड़कर बोली—"तुम झूठ नहीं बोलोगे। तुम झूठे नहीं हो। बताओ सच-सच...बोलो...जल्दी बोलो।"

मैंने लाचार हो नीची नज़रें करके कहा—"तुम से।"

वह जैसे चौंक पड़ी। अपनी कामयाबी की ख़ुशी में बोली—"बस, बस! मैं अब किसी दूसरे की तरफ़ देख भी नहीं सकती। यह जुर्म है मेरे लिये। महापाप है। मेरे कुल में कभी ऐसा नहीं हुआ। मैं हिन्दुस्तानी हूँ और कट्टरपंथी हूँ। मैं शरीफ हूँ। मेरे लिये इतना बहुत काफी है।"

मैंने कुछ परेशान होकर कहा—"मिस सिंह! यह समझ की बातें नहीं सुलह और समझौते की बातें करो। इससे कोई फ़ायदा नहीं कि मेरा और अपना दिल दुखाओ।"

"तुम्हारा दिल दुखता है!...मुझे तकलीफ़ में देखकर?" उसने अजीब तरह से मुझसे पूछा।

"क्यों नहीं?" मैंने कहा—"मैं किसी तरह तुम्हारा दिल दुखाना नहीं चाहता।"

वह ख़ुश होकर बोली—"तुम सच्चे हो। तुम्हें मुझसे प्रेम है। ख़ैर। अब तुम यह बताओ कि मैं तुम्हारी बीबी से कब मिलूँ? मैं उनसे मिलना चाहती हूँ।"

मैंने घबराकर कहा—"क्या करोगी उनसे मिल कर?"

वह बोली—"तुम मुझे नहीं रोक सकते...हरगिज़ नहीं रोक सकते। तुम समझौते के लिये कहते हो, अब मुझे अधिकार है कि जो जी में आए उनसे बातें करूँ। तुम्हें कुछ मतलब नहीं। मुझे बताओ कि वह कब मिल सकती हैं।"

मैंने बहाना किया कि उनकी तबीअत खराब है तो जवाब में उसने कहा कि मैं दो दिन में उन्हें अच्छा कर दूँगी। मैंने कहा कि घर में जाकर पूछकर तुम्हें बताऊँगा कि कब मिल सकती हैं। वह राज़ी हो गई मैंने बहुत कुछ कुरेदकर पूछा कि मुझे बताओ तो आखिर मेरी पत्नी से क्या बातें करोगी पर उसने न बताया। यही कहा कि तुम्हें इससे कुछ बहस नहीं। जो मेरे जी में आएगा बातें करूँगी। यह मेरा उनका मामला है, तुमसे कुछ मतलब नहीं।"

और मैं विदा होकर सोचता हुआ घर पहुँचा।

प्रतियोगिता-परीक्षा

शायद आप जानते ही होंगे कि प्रतियोगिता-परीक्षा से मेरा क्या मतलब है। ये परीक्षायें वास्तविक न्याय के आधार पर होती हैं। अंगरेज़ी में इस प्रकार की परीक्षा को कम्पिटीटिव एक्ज़ामिनेशन (Competitive Examination) कहते हैं।

× × × ×

मैं घर पर आया तो घरवाली को बेहद दुखी और परेशान पाया। बुरा हाल था बेचारी का। मैंने उसे इतमीनान दिलाया। मामले को अच्छी तरह सयझाया बुझाया और फिर यही कहा कि तू क्यों अपनी जान को हलकान कर रही है। मैं सोलह आने तेरा हूँ और तू मेरी। मौत आ जाय तो दूसरी बात है नहीं तो मेरी दृढ़ता में ज़रा भी फ़र्क नहीं आ सकता। आखिर तू क्यों घबराई जाती है ? सारांश यह कि उसको अच्छी तरह समझाया कि यह मौका हिम्मत और दृढ़ता से काम लेने का है। और अगर ग़ुस्से या रंज से काम लिया तो बड़ी गड़बड़ी पड़ जायगी। इसके बाद मैंने उससे कहा कि मिस सिंह तुमसे मिलना चाहती है।

वह चौंककर बोली—"क्या लड़ेगी मुझसे ?"

मैंने हँसकर कहा—"तुम बेवकूफ़ हो तो क्या वह भी बेवकूफ है। लड़ेगी नहीं बल्कि कुछ बातें करेगी। यही कहेगी कि तुम मुझे छोड़ दो। इसका जो जवाब तुम्हारे जी में आये दे देना।"

वह यह सुनकर बड़बड़ाती रही और मैंने उसे अच्छी तरह समझा दिया कि तुम लड़ना मत, बल्कि .खूब सोच-समझकर जवाब देना।

इसके तीसरे दिन मैंने मिस सिंह को .खत लिख दिया कि मेरी पत्नी अब अच्छी तरह है और तैयार है। जब जी में आये आकर मिल लो।

× × ×

मिस सिंह मेरी पत्नी से मिलने आई। अकेले में उसने घण्टे भर तक मेरी पत्नी से बातें कीं, और फिर चुपचाप बिना मुझसे मिले हुए या बात किये हुए चली गई।

मैं जो पत्नी के पास आया तो उसका बुरा हाल पाया। बुरी तरह रो रही थी। उसने रोते हुए बड़े ही दर्द भरे स्वर में मुझसे कहा—"मैं तुम्हारे बग़ैर जिन्दा नहीं रह सकती।"

मैंने अपनी प्यारी बीवी को गले से लगा लिया और कहा—मैं .खुद तेरे बग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकता।"

इसके जवाब में उसने रो-रोकर मुझसे बताया कि यही मिस सिंह कह गई है, कि वह मेरे बग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकती! गोया अब मामला दरअसिल ऐसा था कि तीनों मर रहे थे या मरने की धमकियाँ दे रहे थे। बीबी बिना मेरे ज़िन्दा नहीं रह सकती थी, मैं बिना पत्नी के ज़िन्दा नहीं रह सकता था और मिस सिंह बिना मेरे ज़िन्दा नहीं रह सकती थी। यानी सब मिलकर एक दूसरे के बिना मरने को तैयार थे।

मिस सिंह ने जो बातें की थीं उनकी तफसील भी मालूम हुई। मेरी पत्नी से वह सौत का प्रेम में डूबा हुआ और पवित्र संबन्ध स्थापित करने की संभावनाओं पर बहस करने आई थी कि वह स्वयं ज्यादा बेवक़ूफ़ है या मेरी पत्नी। यानी कौन मुझे अधिक चाहता है। फिर इसके बाद उसने अपनी सारी कहानी

सुनाई और मेरी पत्नी से इन्साफ के नाम पर अपील की। उसके जवाब में मेरी पत्नी ने उससे हाथ जोड़कर .खुशामद की कि .खुदा के वास्ते तुम मेरी और मेरे मियाँ की जान छोड़ो और माफ़ करो। सारांश यह कि मिस सिंह की बेहद .खुशामद की और मिस सिंह ने जवाब में मेरी पत्नी की .खुशामद की कि बहिन तू ही मान जा।

जब इससे काम न चला तो मिस सिंह ने मेरी पत्नी के सामने एक और प्रस्ताव रक्खा। उसने कहा कि जब तुम किसी तरह मानती ही नहीं हो तो आओ हम दोनों मिलकर ज़हर पीलें और झगड़ा ख़त्म हो। अतएव यह थी वह प्रतियोगिता-परीक्षा जिसमें मेरी पत्नी फेल हो गई। उसने कह दिया मिस सिंह से कि—"न बहिन! मैं ज़हर वहर नहीं पीती पिलाती। तुम पियो ज़हर या और जो जी में आये करो। मगर मुझे माफ करो। मुझे यह इम्तहान मंजूर नहीं।"

अतएव मेरी पत्नी ने तो इम्तहान में बैठने से ही इनकार कर दिया और मिस सिंह उससे यह कहकर चलती बनी—"अगर तुम्हें इस इम्तहान की ज़रूरत नहीं तो क्या हर्ज़ है। मैं खुद ही इस इम्तेहान में शरीक हूँगी और फ़र्स्ट आऊँगी।"

यानी मतलब यह कि वह मेरी पत्नी से साफ़-साफ़ कह गई थी कि वह आत्म-हत्या कर लेगी। यह सुनकर अब मेरे दिल पर और भी हौल छा गया। क्योंकि मैं जानता था कि मिस सिंह न सिर्फ एक दृढ़ विचारों की स्त्री है बल्कि वह उनमें से है जो अपनी आन के लिये जान दे देना खेल समझती हैं।

× × ×

मैं इसी उधेड़ बुन में था कि अब क्या होगा? यह सोच ही रहा था कि मिस सिंह का आदमी परचा लाया और ज़बानी भी कहा कि आपको बुलाया है जल्दी।

पत्नी ने जो यह सुना तो सचमुच मुझे ज़बर्दस्ती पकड़कर रोने लगी कि ऐसी स्त्री के पास मत जाओ जो जान देने और जान लेने वाली हो रही है। यद्यपि उसका डरना एक हद तक उचित भी था। और मैं भी जानता था कि ताज्जुब नहीं जो मिस सिंह कुछ कर गुज़रे। लेकिन अब ऐसा कायर भी नहीं हूँ जो इस डर के मारे न जाता। पत्नी को जिस तरह भी बन पड़ा समझा-बुझाकर रोती हुई छोड़कर मिस सिंह के घर रवाना हुआ।

अल्टीमेटम

मैं मिस सिंह के यहाँ पहुँचा। चिक उठाकर कमरे में दाखिल हुआ और सचमुच आश्चर्य-चकित हो खड़ा का खड़ा रह गया।

उस समय वह कितनी सुन्दर और आकर्षक बनी हुई थी। उसके घने काले बाल हमेशा की तरह बाईं ओर को झुके हुए पीछे चले गए थे। सुन्दर आँखों की पलकें किस तरह झपक रही थीं। चेहरे पर नमक के साथ साथ यौवन की पवित्र ज्योति अपनी छवि दिखला रही थी। वह ज्योति जो एक पवित्र और सती परायण कुमारी की जन्मसिद्ध सम्पत्ति है। फिर उस समय ताज्जुब तो मुझे इस पर हुआ कि उसके चेहरे पर एक हल्की सी प्रसन्नता और सफलता की झलक थी, जो उसके सौन्दर्य को अद्वितीय बना रही थी। सरांश यह कि उसका सुन्दर मुखड़ा उस समय ताज़ा खिला हुआ गुलाब का फूल हो रहा है।

मुझे देखते ही उसके चेहरे पर प्रेम की सुन्दर और शीतल किरणें फूट पड़ीं, बड़े इतमीनान से उसने मेरे सलाम का जवाब दिया और अपूर्व उत्साह से मुझसे हाथ मिलाया। इसके बाद बढ़कर उस दरवाज़े को बन्द करना चाहा जिससे मैं दाखिल हुआ था। यद्यपि और सब दरवाज़े पहले ही से बन्द थे। मुझे स्वीकार है कि मैं कुछ घबरा-सा गया था और मैंने कहा—"क्यों, बन्द क्यों करती हो?

उसने मेरे चेहरे को देखा, मेरी घबराहट को देखा और शायद धिक्कार मिश्रित मुस्कराहट के साथ नर्मी से इस तरह कहा

जैसे कि वह फरियाद कर रही थी। उसने कहा—"तुम एक लड़की से डरते हो, और फिर उससे जो तुम्हें अब भी अपना प्रियतम समझती है, बल्कि शौहर! वह जिसने .खुदा के सामने तुम्हें अपना शौहर तसलीम किया है।"

मैं क्या कहूँ कि मैं कितना लज्जित हुआ। शर्म के मारे ज़मीन में गड़ गया और आँखें नीची कर लीं। मैं मानता हूं कि उस वक्त कुछ घबराया हुआ भी था।

उसने दरवाज़ा बन्द किया और एक कुर्सी पर बैठ गई। मैं भी बैठ गया। थोड़ी देर वह चुप रही फिर उसने मुझसे कहा—"मैंने जो कुछ भी इरादा किया है, खुदा ने चाहा तो उसमें मेरे क़दम हरगिज़ न डगमगायेंगे। मैं आख़ीर वक़्त तक साबित क़दम रहूँगी।" और यह कहते हुए उसने मेरे हाथ में एक खत दे दिया।

मैंने काँपते हाथों से लिफ़ाफ़ा लिया। खत निकाल कर पढ़ा। बहुत मुख़तसर लेकिन अर्थपूर्ण खत था। ऐसा कि मैं सन्नाटे में आ गया। मेरे पैरों के तले से ज़मीन निकल गई। यह पत्र ज़िला मजिस्ट्रेट के नाम था और उसमें निहायत सफ़ाई के साथ लिखा था—

"मैं अपने पूरे होश-हवास की हालत में बहुत सोच-विचार के बाद एक ड्राम "प्रोसि एसिड" पीकर इस कारण आत्म-हत्या कर रही हूँ कि मुझसे मिस्टर ......(मेरा नाम) ने शादी करने का पक्का वादा किया था लेकिन अब उन्होंने एक दूसरी लड़की से शादी कर ली इस कारण मेरा दिल टूट गया है और मुझे विश्वास है कि मरकर मुझे अधिक सुख प्राप्त होगा, अतः मैं अपनी जिन्दगी का अपने ही हाथों खात्मा कर रही हूँ।"

मेरे हाथ भय के कारण काँपने लगे और खत छुट पड़ा। क्योंकि मैंने उसके हाथ में एक शीशी देखी जिसका काग खुला

हुआ था और मैं जानता था कि उसमें संसार का सबसे तेज़ और भयानक ज़हर है। वह ज़हर जिसके पेट में पहुँचते ही आदमी मर जाता है।

बदहवास होकर मैंने उसका हाथ पकड़ा और हाँपकर कहा—"खुदा के वास्ते......"

उसने बड़ी गम्भीरता से कहा—"मेरी ज़िन्दगी खुद मेरे लिये भार है। मैं इस दुनिया से नामुराद और निराश जाती हूं और तुम्हारे या तुम्हारी बीबी के आराम में बाधक नहीं होना चाहती। हाँ तुमसे इतना ज़रूर बदला लूँगी कि मेरी जान तुम्हारे सामने निकले। यही कारण है कि मैंने ऐसा ज़हर छाँटा है कि तुम भाग भी न सकोगे और मैं मर चुकी होऊँगी। मेरी वसीयत सिर्फ़ एक है, और वह यह कि मुझे कभी याद मत करना।"

मैंने देखा कि एकदम से उसके चेहरे पर कठोरता आ गई। एक असाधारण दृढ़ता उसके मुखड़े पर छाकर रह गई।

मैंने घबराकर कहा—"ज़रा समझ से काम लो।"

"अगर मुझे समझ से काम न लेना होता तो क्या अब तक मैं खड़ी बातें कर रही होती! अब तक तो मेरी लाश ठण्डी हो चुकी होती। मैं समझ से और अक़्ल से काम लेने को तैयार हूँ। मगर तुम न तैयार हो सकोगे। बोलो किसी शर्त पर सुलह के लिये तैयार हो!"

मैंने कहा—"बिलकुल तैयार हूं। यही तो कह रहा हूँ!"

वह बोली—"तो मैं भी तैयार हूं। तुम दो बीबियाँ रख सकते हो। तुम अपनी प्यारी पत्नी के साथ रहना, मैं अलग रहूँगी। तुमको मालूम है कि मैं खानदानी ज़मींदारों के घराने की हूँ और फिर मैं खुद भी नौकर हूँ। पैसा कौड़ी मुझे नहीं चाहिये। और यह बहुत नर्म शर्त है। अगर तुम्हें यह भी

ना-मंजूर है तो फिर मैं फ़ैसला कर चुकी हूँ। यह याद रक्खो कि जहाँ कहीं तुमको खड़ा देखूँगी वहीं तुम्हारा हाथ पकड़कर देखते ही देखते तुम्हारे सामने अपनी जान दे दूँगी।"

मैं भला क्या जवाब देता। सन्नाटे में चुप खड़ा था। उसके स्वर में एक अवर्णनीय ज़ोर था।

उसने कहा—"बोलो जल्दी बोलो······मेरी जान लेना और फिर बाक़ी ज़िन्दगी चैन से गुज़ारना चाहते हो या दो पत्नियों का नरक चाहते हो?"

मैंने कहा—"तुम शीशी अलग रख दो, फिर मैं जवाब दूँगा।" अतएव उसने दूसरी तरफ़ मेज़ के कोने पर शीशी रख दी। उसकी शीशी का रखना था कि एक झटके के साथ मैंने मेज़ को धक्का दिया। उधर शीशी गिरी और इधर मैंने वह ख़त टुकड़े टुकड़े कर डाला। उसने लपक कर शीशी उठाई और मुझसे कहा—"यह करना चाहते हो? तुम्हें मालूम नहीं कि··· यह देखो···शीशी में अब भी इतना ज़हर बाकी है जो दस आदमियों के लिये काफ़ी और फिर मेरे पास इसकी दो शीशियाँ और हैं।"

मैंने बड़ी ही नम्रता और खुशामद से कहा—"मिस सिंह, ख़ुदा के वास्ते तुम मुझे माफ़ कर दो।···मैं मजबूर हूँ···क्या फायदा इस क़िस्म की शादी से जब कि मैं खुद नहीं चाहता। तुम्हें मुझसे नफरत हो जानी चाहिये। मैं हद दर्जा का कमीना और नीच आदमी हूँ।··मेरी बीबी मर जायगी अगर मैं तुम्हारी शर्त मान लूँ।···किसी तरह नहीं बचेगी···सूख कर काँटा हो जायगी···घुल-घुलकर मर जायगी।···उसे दिक़ हो जायगी।"

मिस सिंह ने कहा—"फिर एक तो मरेगी ही। या मैं और या वह। और अब तुम्हारी मरज़ी है, जिसे चाहो मरने दो।

रह गई उसे दिक़ होना तो इसकी मैं ज़िम्मेदार हूँ।....अब तुम जल्दी बोलो।"

मैंने कहा—"मैं हरगिज तुम्हारी जान लेना पसन्द नहीं करता और साथ ही अपनी बीबी भी मुझे बेहद प्यारी है। खुदा समझ दे!"

मिस सिंह बोली—"मेरे प्यारे मँगेतर...मेरे प्यारे शौहर ....तुम मुझे यह बताओ कि तुम मेरे सवालों का जवाब क्यों नहीं देते...तुम मुझे अभी जवाब दो...अभी! कि मुझसे शादी करोगे या मेरी जान लेना चाहते हो?"

"मैं तुम्हारी जान तो किसी सूरत में लेना नहीं चाहता। यह तो तय समझो। अब रह गया शादी का मामला तो मुझे तुम दो महीने की मोहलत दो।"

वह मुस्कराकर बोली तुम यह समझते होगे कि मैं क्षणिक आवेश में यह सब कुछ कर रही हूँ, और वक्त गुज़रने के बाद यह गर्मी न रहेगी। अगर तुम्हारा यह ख़्याल है तो तुम ग़लती पर हो। रह गया मोहलत का सवाल, तो मैं मंजूर करती हूँ। क्योंकि कुछ भी हो, जान सबको प्यारी होती है। मगर मोहलत सिर्फ़ चार दिन की देती हूँ। आज मङ्गल है। मैं आज का दिन छोड़े देती हूँ। कल से पूरे चार दिन सोचने के लिये ले लो। शनिवार की रात के बारह बजे तक मुझे जवाब दे दो। क्योंकि मैं एतवार के शुभ दिन मरना पसन्द करती हूँ। और यह याद रक्खो कि अगर तुमने मेरे साथ कोई चालाकी की तो बेकार है। क्योंकि जान तो मैं अपनी दे ही दूँगी। ज्यादा से ज्यादा यह होगा कि तुम्हारे सामने न मरूँगी। तो खैर मजबूरी है। इसी लिये तुमको मोहलत देती हूँ और इस बीच तुम अच्छी तरह आगा पीछा सोच लो। मुझे शक हो रहा है कि शायद तुम यहाँ से भाग जाओगे। तो ऐसी सूरत में शनिवार

को रात के बारह बजे मैं ज़हर पीकर अपनी जान दे दूँगी। और मेरी फिर यही वसीयत है कि मरने के बाद खुदा के वास्ते मुझे याद मत करना। नहीं तो मुझे कब्र में भी चैन न आयेगा और……"

यह कहते-कहते उसका गला भर आया। वह मुँह मोड़कर कुर्सी पर बैठ गई और रूमाल से उसने अपना मुँह छिपा कर रोते हुए ही कहा—"जाओ, खुदा हाफ़िज़।"

और मैं चुपके से खुदा हाफ़िज़ कहकर सरक नहीं आया बल्कि भागा वहाँ से।

अब मैं क्या करूँ ?

घर पर आया तो पत्नी का बुरा हाल था। आँसू पोछकर उसने हाल पूछा तो मैंने जो कुछ बीती थी वह सही-सही सुना दी। सारा किस्सा सुनते ही हैरान और परेशान हो गई और फिर जो रोना शुरू किया है तो रोते-रोते बेहोश हो गई। बहुत बुरा हाल हो गया। और अपनी पत्नी की रिश्तेदार महिला का हाल तो मैंने बताया ही नहीं कि उन्होंने मेरे कितना नाक में दम कर दिया था। पत्नी को होश आया तब हालत और भी बिगड़ गई। मेरा जो हाल होगा उसका अनुमान आप इसी बात से कर लीजिये कि अगर पत्नी आँखों से रोती है तो मेरा दिल रोता है। वह कहती है कि अगर तुमने मिस सिंह से शादी की तो मैं मर जाऊँगी। और उधर मिस सिंह का अल्टीमेटम।

कृपा कर मुझे जल्दी राय दीजिये कि मैं अब क्या करूँ ! एक तो सिर्फ इसी ख़याल से मरी जा रही है कि मैं मिस सिंह से शादी कर लूँगा और दूसरी है कि, ज़हर की शीशी दिखा कर अपना ख़ून करने की धमकी दे रही है। गरज मैं अजीब उलझन में फँसा हूँ कि ऐसे मौके पर क्या करना चाहिये।

शुक्र का दिन बीत चुका है···शनिवार का दिन ढल रहा है।······पत्नी बार-बार बेहोश हो रही है। वह रो रही है और इधर मेरा दिल रो रहा है।···मेहरबानी करके अब जल्दी सलाह दीजिये कि अब मैं क्या करूँ !

—'एक मूर्ख'

स्थाई ग्राहक बनिये

१—स्थाई ग्राहकों को माला की १९४६ ई० में कम से कम १०) रु० की पुस्तकें खरीदनी होंगी।

२—स्थाई ग्राहकों को इस माला की सभी पुस्तकें पौने मूल्य में मिलेंगी।

३—स्थाई ग्राहकों को १) रु० भेजकर हमारे यहाँ नाम दर्ज करना होगा जो वापिस नहीं किया जायगा।

४—इस माला में अब तक निम्नलिखित पुस्तकें आ चुकी हैं:—

(१) खुरपा बहादुर २)
(२) चमकी २।)
(३) साधना १॥)
(४) वैम्पायर १॥)
(५) स्नेहदान १॥)
(६) फुलबूट १॥)
(७) जानी दुश्मन १॥।)
(८) कूलकिनारा ॥।)
(९) एलबम १॥।)
(१०) तैमुन्ना २।)
(११) साम्राज्यवादी जापान १।)

और पुस्तकों का आगामी प्रकाशनों में विज्ञापन देखिये।

पुस्तकस्थान—जीरो रोड—इलाहाबाद